अक्टूबर 2022 ■ वर्ष : 68 ■ अंक : 01 ■ पृष्ठ : 60 ■ मूल्य : ₹ 50

अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अणुव्रत

सादर आंमत्रण

73वाँ
अणुव्रत अधिवेशन

सान्निध्य

अणुव्रत अनुशास्ता

आचार्य श्री महाश्रमण

29, 30 व 31 अक्टूबर, 2022

छापर-राजस्थान

अणुविभा

आयोजक

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

संपर्क सूत्र :

भीखम सुराणा, महामंत्री 9810155861

प्रताप दूगड़, संयोजक 9830091182

आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन अत्यंत प्रशंसनीय है और सही रास्ते पर चलने में सहायता प्रदान करता है। सह-अस्तित्व के लिए यह आंदोलन निश्चित ही बहुत सहायक होगा। अतः समग्र मानव जाति सत्य के इस पवित्र बंधन से आबद्ध होगी, ऐसी हम कामना करते हैं।

-परिव्राजकाचार्य
श्री रघुवल्लभ

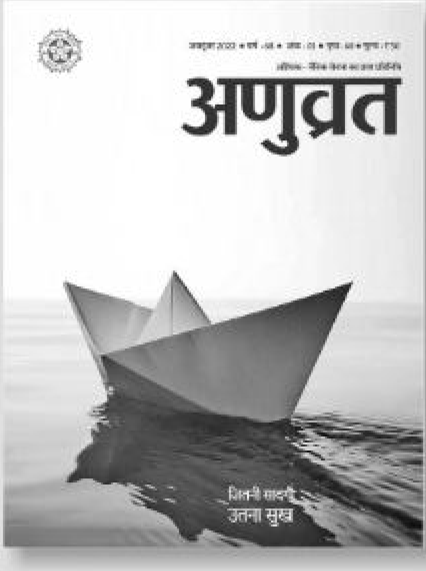

वर्ष 68 • अंक 01 • कुल पृष्ठ 60 • अक्टूबर, 2022

सम्पादक
संचय जैन

सह-सम्पादक
मोहन मंगलम

पत्रिका प्रसार व विज्ञापन
संयोजक
शांतिलाल पटावरी

टाइपसेटिंग व लेआउट
मनीष सोनी

क्रिएटिव्स
आशुतोष रॉय

चित्रांकन
मनोज त्रिवेदी

:: सदस्यता शुल्क विवरण::

एक अंक	– ₹ 50
एकवर्षीय	– ₹ 600
त्रैवर्षीय	– ₹ 1500
पंचवर्षीय	– ₹ 2500
दसवर्षीय	– ₹ 5000
योगक्षेमी (15 yrs.)	– ₹ 11000

₹ 350 का अतिरिक्त वार्षिक भुगतान कर आप अपनी प्रति कोरियर से मंगवा सकते हैं।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
केनरा बैंक
A/c No. 0158101120312
IFSC : CNRB0000158

:: ऑनलाइन सदस्यता हेतु::

https://rzp.io/l/avbp पर लॉगिन करें
या इस क्यूआर कोड को स्कैन करें

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली–110002

anuvrat.patrika@anuvibha.org
www.anuvibha.org
दूरभाष : 011–23233345, मोबाइल : 9116634512

अनुक्रमणिका

प्रेरणा पाथेय

- जितनी सादगी उतना सुख — 06
  आचार्य तुलसी
- अणुव्रत : मानवीय एकता का संदेश — 09
  आचार्य महाप्रज्ञ
- बुद्धि की विशुद्धि — 12
  आचार्य महाश्रमण

आलेख

- जो तोड़ने से भी न टूटे... — 14
  कुमार प्रशांत
- सादगी : गांधी एवं अणुव्रत — 18
  रमेशचंद शर्मा
- सम्पन्नता व प्रेरणा का... — 20
  धर्मचंद जैन 'अनजाना'
- मानव जीवन और आत्मानुशासन — 22
  डॉ. कमलाकांत शर्मा 'कमल'
- Anuvrat Movement... — 29
  S.Radhakrishnan

कहानी

- नयी जिंदगी — 25
  ताराचंद मकसाने

कविता

- मिलकर रचा उजास — 13
  मनोज जैन 'मधुर'
- पर्यावरण — 24
  अमृत बुरड़

लघुकथा

- पंखों की पहचान — 16
  राजेश अरोड़ा
- पुराने कपड़े — 21
  रंजना जायसवाल
- उपलब्धि — 28
  समीर उपाध्याय

- संपादकीय — 05
- बापू की वाणी — 11
- अतीत के झरोखे से — 32
- परिचर्चा — 36
- कदमों के निशां — 39
- अणुविभा में दीर्घा उद्घाटन — 40
- अणुव्रत सम्पर्क यात्रा
  - दक्षिण भारत — 42
  - पश्चिम महाराष्ट्र — 47
- अणुव्रत प्रबोधन कार्यशाला — 45
- मनोरंजन व ज्ञान की पाठशाला — 49
- आजादी का अमृत महोत्सव — 50
- Q10 प्रतियोगिता परिणाम — 53
- अणुव्रत संपोषक — 54
- अणुव्रत समाचार — 55
- विशेषांक विमर्श — 56
- अणुव्रत की बात — 58

- अणुव्रत सिद्धांत, स्वास्थ्य, जीवन–मूल्य एवं अभिप्रेरणा विषयक सामग्री का उपयोग किया जा सकेगा।
- anuvrat.patrika@anuvibha.org पर ही सामग्री प्रेषित करें।
- ईमेल द्वारा संप्रेति कम्पोज की गयी प्रकाशन सामग्री की Open Word File को प्राथमिकता दी जायेगी।
- फोटो की गुणवत्ता कम होने पर उसे प्रकाशित करने में असमर्थता रहेगी। व्हाट्सएप पर फोटो न भेजें।
- अनिमंत्रित सामग्री को लौटाने हेतु बाध्यता नहीं रहेगी।
- प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों का निजी चिंतन है। प्रकाशक एवं सम्पादक इसके लिए जवाबदेह नहीं हैं।
- इस प्रकाशन से सम्बन्धित किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र दिल्ली रहेगा।

सादगी : आभूषण या अभिशाप

तुम जितने
गहरे उतरते हो
गहराई का पैमाना
बदलता जाता है।
नये क्षितिज
जब खुलते हैं
चिन्तन का दायरा
विस्तार पा जाता है।

ऊपर से देख कर
किसी की गहराई का
अनुमान लगाने की भूल
मत करो मित्र,
जरा उसके
भीतर झाँकने की
कोशिश तो करो
शायद
तुम्हें अपनी गहराई का
अनुमान हो जाये!

किसी को
तुच्छ कहूं,
यह मेरी दृष्टि की
तुच्छता का
इजहार तो नहीं!
या फिर,
अपने छद्म बड़प्पन का
झूठा एहसास तो नहीं!
कहते हैं-
प्रकृति ने
जिसे जो दिया है
'पूर्णता' में दिया है,
हम सब में समायी
उस 'पूर्णता' से
मैं कहीं
अनजान तो नहीं!

जीवन में सादगी एक आभूषण है या अभिशाप? यह प्रश्न आम व्यक्ति के मन को अवश्य झकझोरता रहा है। इस प्रश्न के उत्तर में उसकी जीवनशैली की दिशा छुपी होती है। स्पष्ट और सही उत्तर के अभाव में व्यक्ति उधेड़बुन में उलझा जीवन को निरर्थक भंवरजाल में झोंक सकता है।

भोग-विलास और आडंबर को समृद्धि का सूचक माना जाता रहा है। संभवतः यही कारण रहा कि सादगी को गरीबी का परिचायक मान लिया गया। समाज समृद्ध को सम्मान देता है, ऊँचा स्थान देता है, फिर भला कोई क्यों सादगी अपना कर स्वयं को तुच्छ दिखाना चाहेगा? आर्थिक दृष्टि से कमजोर व्यक्ति भी सम्मान की ख्वाहिश में सही या गलत तरीकों से धन प्राप्त कर स्वयं को स्थापित करने की कोशिश में लगा रहेगा।

धनवान व्यक्ति के लिए भोग-विलास पूर्ण जीवन जीना एक सामान्य बात है। इसे वह अपना अधिकार भी समझता है। हालाँकि सादगीपूर्ण जीवन जीने में उसे ऐसी किसी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता जो कि आर्थिक दृष्टि से कमजोर व्यक्ति को भोग-विलास पूर्ण जिंदगी जीने में करना पड़ता है। अनेक उदाहरण ऐसे मिल जाएंगे जहां अरबपति व्यक्ति भी बहुत सादगीपूर्ण जीवन जीता है, लेकिन इसे अपवाद ही माना जाता है।

धर्म, दर्शन और संस्कृति के विभिन्न स्वरूपों ने अपनी-अपनी शैली में सादगी को व्याख्यायित किया है और अपनाया भी है, लेकिन समय-समय पर आडंबर के दखल ने इन्हें विरोधाभासी भी बनाया है। आज के भौतिकवादी युग में वे संस्थान भी आडंबर और दिखावे के मकड़जाल में फँसते दिखायी देते हैं जिन पर धर्म और संस्कृति के संरक्षण का दायित्व है।

व्यक्ति मन में उठने वाले प्रश्नों का उत्तर अक्सर अपने आसपास ढूंढ़ने का प्रयास करता है। बाहर के कोलाहल में भीतर की आवाज तो वह सुन ही कहां पाता है! जिस समाज में सादगी को गरीबी और दरिद्रता का परिचायक माना जाता हो, वहां उसे जो समाधान भी मिलेगा वह भटकाने वाला ही होगा। और फिर, गरीबी और अमीरी पहले हमारे मन में उपजती है और तब व्यवहार में झलकती है। मन की गरीबी को लाख आडंबर भी ढक नहीं सकते। आडंबर व्यक्ति को अमीर दिखा सकता है किंतु सादगी मन को अमीर बनाती है।

ऐसे में अंतरात्मा के अतिरिक्त समाधान का दूसरा स्रोत प्रकृति ही हो सकती है। प्रकृति में हर प्रश्न का उत्तर समाहित है। प्रकृति के हर स्वरूप में, हर गतिविधि में और हर सिद्धांत में सादगी अपने उत्कृष्ट रूप में विद्यमान रहती है। प्रकृति की सादगी ही उसे सुंदर बनाती है। सादगी प्रकृति का आभूषण है। प्रकृति में झांकना अंतरात्मा में झांकने से कुछ अलग भी नहीं है। सादगी जीवन की अनेक समस्याओं का स्वयं समाधान भी है। सादगी के लिए संयम चाहिए और संयम अणुव्रत की बुनियाद है। अणुव्रत हमें सादगी की ओर प्रेरित करता है। जहां आडंबर है, वहां अणुव्रत नहीं हो सकता। जहां अणुव्रत है, वहां आडंबर अवांछनीय है।

सं. जै.
sanchay_avb@yahoo.com

अणुव्रत दर्शन संयम और सादगी को महत्व देता है। 'अणुव्रत' का यह अंक प्रतीकात्मक रूप में श्वेत-श्याम रंग विन्यास में प्रकाशित किया जा रहा है। इस प्रयोग पर सुधी पाठकगण के विचार सादर आमंत्रित हैं।

■ आचार्य तुलसी ■

जितनी सादगी उतना सुख

हर व्यक्ति के, चाहे वह पुरुष हो या महिला, विचार स्वतंत्र होते हैं। विचारों को मन में रौंदकर रखना ठीक नहीं है। मन की बात कहने से मन हल्का हो जाता है। अन्यथा कुंठा, घुटन और बीमारियों को अवकाश मिलता है। मन में अगर वासनाएं हैं, कुंठाएं हैं, मस्तिष्क में विचारों का द्वन्द्व है तो रुग्णता स्वाभाविक है। जिन बहनों को खुलकर अपने विचार रखने का अवसर मिलता है, वह उनके लिए वरदान बन जाता है।

मेवाड़ प्रदेशीय महिला सम्मेलन में समवेत महिलाएं हमारे सामने उपस्थित हैं। आज इन्हें स्वतंत्र चिंतन, मंथन, भाषण आदि के लिए मंच उपलब्ध हो गया। इस उपलब्धि का उपयोग कर इन्होंने निःसंकोच रूप में भावाभिव्यक्ति की है। वैसे एक दिन में पूरी गंभीरता या प्रौढ़ता आ जाये, यह संभव नहीं है। फिर भी निर्भीक रूप से विचाराभिव्यक्ति का जो क्रम बना है, वह भी कम बात नहीं है। जो महिलाएं अपने घरों में जबान तक नहीं खोल सकतीं, टिचकारी जैसी सांकेतिक भाषा में अपना अभिप्राय समझाती हैं, वे बहनें हजारों लोगों की उपस्थिति में खड़ी होकर अपने मन की बात रखने में सफल हुई हैं, यह एक बड़ी उपलब्धि है।

मैं वैचारिक स्वतंत्रता के पक्ष में हूँ। हर व्यक्ति के, चाहे वह पुरुष हो या महिला, विचार स्वतंत्र होते हैं। विचारों को मन में रौंदकर रखना ठीक नहीं है। मन की बात कहने से मन हल्का हो जाता है। अन्यथा कुंठा, घुटन और बीमारियों को अवकाश मिलता है। मानस चिकित्सकों का ऐसा विश्वास है कि महिलाओं की बीमारियों में शारीरिक कारणों की अपेक्षा मानसिक कारण अधिक हैं। मन में अगर वासनाएं हैं, कुंठाएं हैं, मस्तिष्क में विचारों का द्वन्द्व है तो रुग्णता स्वाभाविक है। जिन बहनों को खुलकर अपने विचार रखने का अवसर मिलता है, वह उनके लिए वरदान बन जाता है। मैं अधिक बोलने में विश्वास नहीं करता और यह भी मानता हूँ कि जो कोई मंच पर खड़ा होकर बोलता है, उसकी जिम्मेदारियां बढ़ती हैं।

आज जिन महिलाओं नें पर्दा प्रथा, दहेज प्रथा आदि के सम्बन्ध में अपने विचार प्रस्तुत किये हैं, उन पर यह दायित्व आ गया है कि वे अपने जीवन में इस प्रकार की कोई गलती नहीं करें। यदि उनके द्वारा ऐसी गलतियां होंगी तो उन्हें कोई भी अंगुली दिखा सकता है। बीस-तीस महिलाएं भी ऐसी तैयार हो जाएं तो पूरे महिला समाज का पथ-दर्शन हो सकता है। बीस-तीस बल्लियां इस पूरे पण्डाल को थामे हुए हैं, इसी प्रकार अल्पसंख्यक महिलाएं स्वयं जागृत होकर दूसरों को जगा सकती हैं।

इस सन्दर्भ में चिन्तनीय पहलू यह है कि महिलाओं को करना क्या है। ध्येय की अवधारणा के बिना कोई भी व्यक्ति या वर्ग काम नहीं कर सकता। प्रवाह में बहना एक बात है और चिन्तनपूर्वक लक्ष्य का निर्धारण कर उस दिशा में गतिशील रहना दूसरी बात है। मैं बहनों से पूछना चाहता हूँ कि क्या उनके विचारों में दृढ़ता आयी है? क्या वे कुरूढ़ियों से मुक्त होने के निर्णय पर दृढ़ हैं? क्या वे फैशनपरस्ती से दूर रहकर सच्चाई, सादगी और संयम-

प्रधान जीवन जीने के लिए संकल्पबद्ध हैं? उनमें स्वतंत्र चिंतन की क्षमता है?

यदि बहनें अपने आपको यंत्र न मानकर स्वतंत्र मानती हैं तो वे सोचें कि रूढ़ि किसका नाम है? क्या परम्परा मात्र रूढ़ि है? अथवा अर्थहीन परम्परा रूढ़ि है? मैं परम्परा को अनुपयोगी नहीं मानता, पर उसका उपयोग एक नौका से अधिक नहीं मानता। नदी पार करने के लिए नौका की जरूरत रहती है। नदी पार करने के बाद भी कोई नौका को सिर पर उठाकर चले तो क्या लाभ? यही स्थिति परम्पराओं की है।

जो आचार-विचार और व्यवहार वर्तमान परिस्थितियों में काम का है, वह कितना ही पुराना हो जाये, रूढ़ि नहीं हो सकता। लेकिन जिस आचार-विचार का उपयोग समाप्त हो जाता है, जो अपनी अर्थवत्ता खो देता है, वह रूढ़ि बन जाता है। जिस व्यवहार से शरीर, मन, परिवार या समाज को किसी भी प्रकार का लाभ पहुँचता हो, उसे छोड़ने की अपेक्षा नहीं है। किंतु जिस व्यवहार से कोई लाभ न हो, उसे निभाते रहना चिंतनशीलता नहीं है।

एक समय था, आभूषण को नारी का श्रृंगार माना जाता था। किंतु आज वह खतरा बन चुका है। उसके कारण चोरी, डकैती, मारपीट और नाक-कान कटने जैसी मुसीबतें झेलने पर भी आभूषण पहनते रहना अज्ञान और अविवेक का प्रतीक है।

पर्दा किसी समय उपयोगी था। महिलाओं के प्राणों और शील की सुरक्षा के लिए उसका उपयोग हुआ। वह समय की सूझ थी। किन्तु आज वैसी परिस्थितियां समाप्त हो चुकी हैं, फिर भी पर्दे की प्रथा को निभाते रहना कहां की बुद्धिमत्ता है? हमारी बूढ़ी बहनें कहती हैं–पुराने लोग क्या मूर्ख थे? उन्होंने आवश्यक समझकर ही तो समाज को यह सुरक्षा कवच दिया था। इसमें मूर्खता सिद्ध होने जैसी कोई बात नहीं। यह तो उस समय की जरूरत थी। आज इसकी जरूरत नहीं है, इसलिए वह रूढ़ि बन गया है।

इसी प्रकार शादी-विवाह आदि में लेन-देन व आडम्बर किसी समय शान-शौकत और इज्जत की बात समझी जाती थी, परन्तु आज वह ईर्ष्या का विषय बन गया है। जनसाधारण में ऐसी प्रवृत्तियों के प्रति बगावत के भाव पैदा हो गये हैं।

कुछ वर्ष पहले की घटना है। एक सेठ के घर पौत्र का जन्म हुआ। वे समाज के लोगों को बादाम की कतली का भोज देना चाहते थे। संयोग ऐसा बना कि उसी समय हम वहां गये। उन्होंने मेरे सामने यह चर्चा की तो मैंने अपना दृष्टिकोण समझाते हुए कहा - "आप बहुत बड़ी भूल कर रहे हैं। यह चिंतन सामाजिक नहीं है। मैं किसी को अंतराय देना नहीं चाहता, किंतु जो सच्चाई है, उसे प्रकट करना मेरा काम है।" सेठजी को मेरा चिंतन रुचिकर नहीं लगा। वे बोले - "पौत्र कब-कब होता है? मन की मुराद और किस समय पूरी करें?"

सेठजी ने भोज दिया। सैकड़ों लोगों को खिलाया-पिलाया। वे लोग खुश थे, किंतु जिन लोगों को उस भोज में सम्मिलित नहीं किया गया, वे सब सेठजी की मुखालफत करने लगे। गालियों और मारपीट तक की नौबत आ गयी। सेठजी का गाँव में रहना मुश्किल हो गया। वे मेरे पास आकर बोले – "मंगल पाठ सुनाइए, विदा हो रहा हूँ।" मैंने कहा – "कल ही तो हम यहां से प्रस्थान करने वाले हैं। आप आज क्यों जा रहे हैं?" सेठजी की आँखें झुक गयीं। वे सकुचाते हुए बोले- "अब मुझे लोग यहां रहने नहीं देंगे। मैंने आपका इंगित नहीं समझा, इसीलिए यह स्थिति बनी है।"

ऐसे एक नहीं, अनेक प्रसंग हैं, जिनमें समाज के लोगों को मैं अपना चिंतन देता रहा हूँ। कुछ लोग कहते हैं - आप हस्तक्षेप क्यों करते हैं? परन्तु मैं अपना दायित्व समझता हूँ, इसलिए कहता हूँ। श्रावक समाज को सही मार्गदर्शन देना मेरा कर्तव्य है। कर्तव्य की भूमिका पर खड़े होकर ही मैं महिलाओं से कहना चाहता हूँ कि वे सोचें-विचारें और विवाह-शादी आदि प्रसंगों पर आडम्बर तथा प्रदर्शन न करें। अन्यथा उनको किसी के आक्रोश का पात्र बनना पड़ सकता है।

'जितनी सादगी उतना सुख, जितना आडम्बर उतना दु:ख' – यह एक अमोघ मंत्र है। सादगीपूर्ण जीवन जीने के दो लाभ हैं – पाप से बचाव और सुख की उपलब्धि। इससे बड़ी बात क्या हो सकती है? महिलाएं यदि इस मंत्र को पकड़ लें तो उनके जीवन में क्रांतिकारी घटना घटित हो सकती है।

महिला समाज में एक सामाजिक कुरूढ़ि है – शोक-संताप। जन्म की तरह मृत्यु भी अवश्यंभावी घटना है। इसे शोक का कारण न मानकर वैराग्य का निमित्त बनाना चाहिए। शोक से क्लेश बढ़ता है और वैराग्य से क्लेश कम होता है, मध्यस्थता

शान्ति की चाह है तो सन्तोष करो। अन्यथा अरबों-खरबों की संपदा के बीच रहकर भी शान्ति उपलब्ध नहीं हो सकेगी। तुष्टि की चाह है तो स्वतंत्र बनो, आत्मानुशासित बनो। अन्यथा बाह्य नियंत्रण की परवशता में तुष्टि की संभावना ही समाप्त हो जाएगी। पवित्रता की आकांक्षा है तो साधनशुद्धि का ध्यान रखो। धतूरे के पेड़ पर आम नहीं लग सकते। इसी प्रकार अशुद्ध साधनों से पवित्रता नहीं आ सकती।

बढ़ती है तथा पाप का बंधन नहीं होता। इसी प्रकार वैधव्य से पीड़ित महिलाओं को बारह-छह महीनों तक कोने में बिठाये रखने से क्या लाभ? वे जल्दी से जल्दी गुरु की शरण में आएं, आध्यात्मिक प्रेरणा पाएं और धर्माराधना में संलग्न हो जाएं, ऐसा वातावरण बनाना चाहिए। ऐसा करने पर बुजुर्ग बहनें आपकी आलोचना करती हैं तो आप उस पर ध्यान न दें। सही रास्ते पर चलने पर भी कोई आलोचना करता है, उसको लेकर चिन्तित होने की जरूरत नहीं है। अपनी विवेक-चेतना के जागरण से युगीन मूल्यों को समझकर उचित परिवर्तन को स्वीकार करने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए।

यह सब कुछ तभी संभव है जब बहनों का हृदय परिवर्तन हो जाएगा। अब तक उनका जितना हृदय परिवर्तन हुआ है, उसका अनुपात बढ़े, यह अपेक्षा है। इसके लिए बहनों का एक समूह तैयार हो। वह स्वयं प्रतिबद्ध हो तथा गाँव-गाँव और घर-घर पहुँचकर अन्य महिलाओं को चिंतन की नयी दिशा दें। ऐसा होने से ही महिला-जागृति और प्रगति की कल्पना साकार हो सकती है।

जीवन की परिभाषा

मनुष्य अपने जीवन को सही ढंग से जीना चाहता है। जीवन सही है या नहीं? इस जिज्ञासा को समाहित करने के लिए चार मानक निर्धारित हैं – शान्ति, तुष्टि, पवित्रता और आनन्द। भारतवर्ष की संस्कृति में अर्थ, भोगविलास, सत्ता और संघर्ष को जीवन का आदर्श नहीं माना गया। इस भूमिका पर जीवन की एक अच्छी परिभाषा यह हो सकती है –

शान्तं तुष्टं पवित्रं च सानन्दमिति तत्त्वतः।
जीवनं जीवनं प्राहुः भारतीयसुसंस्कृतौ।।

प्रश्न एक ही है कि शान्ति और तुष्टि कैसे मिले? पवित्रता आये कहां से? आनन्द का उत्स कहां है? खोजने वालों के लिए समाधान की कमी नहीं रहती। जो चलता है, वह मंजिल तक पहुँच जाता है। हमने महावीर का दर्शन पढ़ा। उसको आधार बनाकर चिन्तन किया। वहां से प्राप्त समाधान को इस भाषा में प्रस्तुति दी जा सकती है –

सन्तोषाज्जायते शान्तिस्तोषहेतुः स्वतंत्रता।
हेतुशुद्धया पवित्रत्वं स्वस्थ आनन्दमर्हति।।

शान्ति की चाह है तो सन्तोष करो। अन्यथा अरबों-खरबों की संपदा के बीच रहकर भी शान्ति उपलब्ध नहीं हो सकेगी। तुष्टि की चाह है तो स्वतंत्र बनो, आत्मानुशासित बनो। अन्यथा बाह्य नियंत्रण की परवशता में तुष्टि की संभावना ही समाप्त हो जाएगी। पवित्रता की आकांक्षा है तो साधनशुद्धि का ध्यान रखो। धतूरे के पेड़ पर आम नहीं लग सकते। इसी प्रकार अशुद्ध साधनों से पवित्रता नहीं आ सकती। आनन्द की आकांक्षा है तो स्वस्थ रहो, अपने आप में रहने का अभ्यास करो।

पर में आनन्द खोजने वाला व्यक्ति भटक जाता है। पदार्थ पर है। मनुष्य की सहज मनोवृत्ति यह है कि वह पदार्थ में आनन्द का अनुभव करता है। वह आनन्द भ्रम है। वह अनुभूति क्षणिक है। आत्मस्थ होने पर जैसा आनन्द मिलता है, वह एक बार भी मिल जाये तो पदार्थजनित आनन्द की तुच्छता समझ में आ जाएगी।

स्वस्थ और सन्तुलित जीवन

महावीर के अर्थशास्त्र में आकांक्षाओं और आवश्यकताओं को बढ़ाने का नहीं, प्राप्त साधन सामग्री में सन्तोष करने का निर्देश है। उन्होंने विवशता से गरीबी का अभिशाप झेलने की नहीं, स्ववशता में अर्थ को सीमित करने की बात कही। उन्होंने अर्थ के अर्जन का निषेध नहीं किया, किन्तु साधनशुद्धि पर पूरा बल दिया। उन्होंने चोरी को तो त्याज्य माना ही, चोर को चोरी करने में सहयोग देने को भी उचित नहीं माना। उनकी दृष्टि से चोरी का माल खरीदना, राज्य द्वारा निषिद्ध वस्तु का आयात-निर्यात करना, मिलावट करना, असली वस्तु दिखाकर नकली वस्तु देना, तौल-माप में कमी-बेसी करना, रिश्वत लेना आदि अर्थार्जन के अशुद्ध साधन हैं। ऐसे साधनों से अर्जित अर्थ से पवित्रता नहीं आ सकती।

महावीर की दृष्टि में तात्कालिक लाभ का नहीं, दीर्घकालिक लाभ का महत्व था। ईमानदारी को गिरवी रखकर, व्यवसाय के क्षेत्र में अपनी साख खोकर तात्कालिक लाभ चाहने वाले व्यक्ति स्वस्थ नहीं हो सकते। अस्वस्थता शरीर की हो या मन की, वह आनन्द में बाधक है। स्वस्थ और सन्तुलित जीवनशैली के लिए महावीर के अर्थशास्त्र को पढ़ना और आत्मसात करना बहुत आवश्यक है। ■■■

आचार्य महाप्रज्ञ

अणुव्रत : मानवीय एकता का संदेश

आज हमारी समस्या के मूल में यह है कि मानवीय स्वभाव में जो परिवर्तन आना चाहिए, उसकी ओर हमारा ध्यान बहुत कम जा रहा है। जबकि स्थिति यह है कि परिस्थिति में भी जब जटिलताएँ भरी होती हैं, जटिलताएँ आती हैं, वे मानवीय स्वभाव की जटिलता में ही उत्पन्न हो रही हैं और होती चली जा रही हैं। आज जो मानवीय विघटन, विषमता तथा मानवीय एकता की अनुभूति का अभाव हो रहा है, क्या यह सबसे बड़ी समस्या नहीं है?

आज बीमारियाँ बहुत बढ़ चुकी हैं। बीमारी की शिकायत है और बीमारियाँ बढ़ती जा रही हैं। क्योंकि यह मान लिया गया है कि बीमारी कीटाणुओं से होती है और जब अनन्त आकाश है, कीटाणुओं की कोई कमी नहीं है। तो फिर बीमारी की कमी होने का भी कोई प्रश्न नहीं है। यदि हम यह स्वीकार करते कि बीमारी केवल कीटाणुओं से ही नहीं हो सकती, तब तो हमारे सामने एक नयी दिशा का उद्घाटन होता, एक नया आयाम खुलता, किन्तु हम तो यह मानकर बैठ गये कि बीमारी का एकमात्र हेतु ही कीटाणु हैं। मुझे लगता है कि इसका समाधान होने वाला नहीं है।

अणुव्रत के सामने भी यह एक बहुत बड़ा ज्वलंत प्रश्न है। क्या वह स्वीकार करता है कि बीमारी केवल कीटाणुओं से होती है या उसका कोई अभ्युद्गम भी है, दूसरा कोई स्वीकार भी है कि बीमारी दूसरे किसी रास्ते से भी आ सकती है? यह आती ही नहीं है, भीतर से भी उभरती है, निकलती है, बाहर फूटती है। आज की सभी समस्याओं या बीमारियों के जो दो स्रोत हैं, उन स्रोतों का जो एकांगी स्वीकार है, मुझे लगता है कि सबसे बड़ी बीमारी बन गयी है। हम दूसरे स्रोत को बिल्कुल भुलाये जा रहे हैं। आज गरीबी की बीमारी है तो अमीरी की भी बीमारी है, अभाव की बीमारी है तो अतिभाव की भी बीमारी है। एक ओर कुछ नहीं है तो दूसरी ओर यह शिकायत भी बराबर है कि हिन्दुस्तान के सौ घराने सारी संपदा पर अधिकार जमाये बैठे हैं।

तो यह बीमारी कहाँ से आ रही है? क्या केवल परिस्थितियों की बीमारी है? यदि हमारा सारा ध्यान परिस्थितियों पर ही केन्द्रित रहा तो मुझे लगता है कि दुनिया में हजारों आंदोलन, हजारों समाजवाद और साम्यवाद की धाराएँ, परम्पराएँ और उनमें अनुशासन आ जाये, पर इस बीमारी का अंत कभी होने वाला नहीं है। क्योंकि इस अनन्त आकाश में उनकी पहुँच बहुत सीमित होगी। जो बीमारी का दूसरा स्रोत है कि बीमारी भीतर से भी आती है, उसकी ओर हमारा ध्यान नहीं जा रहा है। परिस्थितियों की ओर ध्यान बहुत केन्द्रित हो रहा है। किन्तु, आप जानते हैं कि परिस्थितियों के समाधान के लिए जो लोग चले थे और जो चल रहे हैं, उन्होंने आज इस प्रकार की शक्ति अर्जित कर ली है कि यदि दो-चार आदमियों के मस्तिष्क के तंतु जरा ढीले हो जाएं तो दस-बीस मिनट ही लगेंगे, और शायद दुनिया का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा, हम समाप्त हो जाएंगे।

धर्म का प्रारंभ होता है करुणा से, धर्म का प्रारंभ होता है अनुकंपा से, धर्म का प्रारंभ होता है मैत्री से, प्रेम से और दया से। क्या कोई धार्मिक आदमी मिलावट कर सकता है? मैं तो नहीं मानता कि कोई धार्मिक है और वह मिलावट कर सकता है? ये दोनों बातें साथ नहीं हो सकतीं। या तो वह धार्मिक नहीं है और यदि है तो वह मिलावट नहीं करेगा।

हमें कहाँ छूना है? किस बिन्दु को छूना है कि जहाँ से बीमारी का इलाज हो सके। मैं यह नहीं कहता कि भीतर के बिन्दु को ही छुआ जाए किन्तु जब तक हम दोनों बिन्दुओं को नहीं छुएँगे, दोनों कोणों को जब हम स्पर्श नहीं करेंगे, कोई समाधान नहीं होगा। अणुव्रत आन्दोलन को भी बहुत लोग चाहते हैं कि वह परिस्थितियों पर ध्यान केन्द्रित करे।

मैं इसका विरोध नहीं करता, ऐसा होना भी चाहिए किन्तु मैं अणुव्रत आंदोलन के लिए यह बहुत जरूरी मानता हूँ कि परिस्थितियों का स्पर्श करने से पूर्व उसने जो काम उठाया है, मनुष्य के भीतर की स्थितियों पर भी जरा ध्यान केन्द्रित करें और उस पक्ष को प्रबल करना आज बहुत आवश्यक है। अगर वह प्रबल नहीं हुआ तो अणुव्रत आंदोलन की अपने आप में कोई सफलता भी नहीं है और दूसरे आंदोलनों की कोटि में जाकर वह भी उनका एक साथी बन सकता है और अपने आप में संतोषी हो सकता है।

आज हमारी समस्या के मूल में यह है कि मानवीय स्वभाव में जो परिवर्तन आना चाहिए, उसकी ओर हमारा ध्यान बहुत कम जा रहा है। जबकि स्थिति यह है कि परिस्थिति में भी जब जटिलताएँ भरी होती हैं, जटिलताएँ आती हैं, वे मानवीय स्वभाव की जटिलता में ही उत्पन्न हो रही हैं और होती चली जा रही हैं। आप देखिए कि कुछ व्यक्तियों का अहं प्रबल होता है, संघर्ष शुरू हो जाता है। कुछ व्यक्तियों की लालसाएँ उभरती हैं, बड़ी लड़ाइयाँ शुरू हो जाती हैं। कुछ व्यक्तियों का लोभ बढ़ता है कि बुद्धि का उपयोग धन के संग्रह में इतना लग जाता है कि दूसरों के प्रति करुणा का भाव समाप्त हो जाता है। आज जो मानवीय विघटन, विषमता तथा मानवीय एकता की अनुभूति का अभाव हो रहा है, क्या यह सबसे बड़ी समस्या नहीं है?

मुझे इस बार जो सबसे बड़ी प्रसन्नता हो रही है, वह इस बात की हो रही है कि हमारे आचार्यवर ने और उनके द्वारा चलाये जाने वाले इस उपक्रम ने मूल बात की ओर ध्यान दिया है, मूल को पकड़ने का प्रयत्न किया है। केवल पत्तों को, शाखाओं को पकड़ने से बहुत काम नहीं चलेगा। थोड़े समय तक चल सकता है। आप उन पर पानी डालिए, थोड़े समय तक फूल खिले रह सकते हैं, किन्तु जड़ को नहीं सींचा जाएगा, पानी नहीं मिलेगा तो न पत्ते होंगे, न फूल होंगे, न शाखाएँ रहेंगी, कुछ भी नहीं रहेगा। तो इस मूल बात को पकड़ा है, जो मानवीय एकता की बात है।

मानव जाति की एकता, मनुष्य जाति की एकता, इस बात को जितना धार्मिकों ने भुलाया, शायद दूसरों ने भी नहीं भुलाया होगा। क्योंकि दूसरों का और कोई आधार नहीं है, दूसरों के सामने तो केवल मानव ही आधार है। और वह मानव पर ध्यान केन्द्रित करते हैं जो कि धर्म को नहीं मानने वाले हैं। किन्तु धर्म को मानने वाले लोगों ने भी मानवीय एकता पर इतना प्रहार किया, उन्हें ऐसा लगा कि मानो धर्म के लिए वह कोई आवश्यक तत्त्व नहीं है। और मुझे लगता है कि आज धर्म जो शक्तिहीन हो गया, धर्म जो प्राणहीन हो गया, धर्म जो तेजहीन हो गया, जो बुझी हुई आग की भाँति, दाँत तोड़े हुए सांप की भाँति जिसमें फुफकारने की भी क्षमता आज नहीं रही है, वह इसी कारण हुआ है। ऐसा इसलिए हुआ कि उसने मूल बात को भुला दिया।

ढाई हजार वर्ष पहले तक एक घोष सुनायी देता था – एक्का मणुस्स जाई – मनुष्य जाति एक है। किन्तु मुझे लगता है कि इधर एक हजार वर्ष में यह घोष इतना मंद पड़ गया और मानव-मानव के बीच में इतनी खाइयाँ बन चुकी हैं कि अगर धर्म होता तो ऐसा नहीं होता। धर्म का प्रारंभ होता है करुणा से, धर्म का प्रारंभ होता है अनुकंपा से, धर्म का प्रारंभ होता है मैत्री से, प्रेम से और दया से। क्या कोई धार्मिक आदमी मिलावट कर सकता है? मैं तो नहीं मानता कि कोई धार्मिक है और वह मिलावट कर सकता है? ये दोनों बातें साथ नहीं हो सकतीं। या तो वह धार्मिक नहीं है और यदि है तो वह मिलावट नहीं करेगा। मिलावट भी करता है और धार्मिक भी है, सूर्य प्रकाश भी देता है और साथ-साथ अंधकार भी फैलाता

है – अगर यह हो सकता है तो वह बात भी मानी जा सकती है अन्यथा यह हो नहीं सकता। लोगों ने धर्म को इस प्रकार स्वीकार कर लिया कि हमारी बुराइयाँ चलती रहें और इससे हमारे स्वर्ग का तख्ता भी बराबर आबाद रहे। उसमें भी कोई कमी न आये। स्वर्ग की सीढ़ी बराबर कायम रहे। धर्म भी चलता रहे और जितना स्वार्थ सधता है, वह भी बराबर कायम रहे। इन दोनों बातों को ऐसा कर दिया कि जैसे सियार ने सिंह की खाल को ओढ़ लिया। आप बुरा मानें भी तो मुझे यह कहने में कठिनाई नहीं होगी कि आज की दुनिया के बहुत सारे धार्मिक सिंह की खाल ओढ़े हुए सियार की भाँति अपना जीवन चला रहे हैं।

इसीलिए आचार्य तुलसी ने बहुत बार कहा कि आज सब क्रांतियों से पहले धर्म-क्रांति की जरूरत है। क्योंकि साधारण आदमी धर्म के नाम पर ऐसे-ऐसे काम करते चले जा रहे हैं, जो कि अधर्म के नाम पर भी नहीं किये जा सकते। मुझे यह बहुत साफ लगता है कि जब तक यह धर्म का रोग, धर्म की मूर्च्छा उनकी नहीं मिटेगी, तब तक उनकी न गरीबी हटेगी, न उनका भला होगा और न उनका कल्याण ही होगा। तो सबसे पहले अगर इस नींद को तोड़ना है तो आज धर्म-क्रांति की आवश्यकता है।

अणुव्रत आन्दोलन ने धर्म-क्रांति के कार्य को अपने हाथ में उठाया तो मैं समझता हूँ कि यह अणुव्रत की सबसे बड़ी सफलता होगी और आज के युग की सबसे बड़ी चुनौती को वह उत्तर दे सकेगा।

आज हमें अनेक परिप्रेक्ष्यों में नये दृष्टिकोणों से देखने की आवश्यकता है। फिर से एक भूमिका पर आने की जरूरत है। जिस भूमिका पर कोरा आदमी हो और कुछ न हो। आदमी के साथ कितनी उपाधियाँ लग गयीं। उपाधि कैसे होती है? कर्म से। यानी जिस व्यक्ति के बंधन ज्यादा होता है, उसको उपाधियाँ ज्यादा मिलती हैं और जिसका बंधन टूटता है, वह उपाधियों से मुक्त हो जाता है।

आज जाति की, धर्म की, समाज की... पता नहीं कितनी उपाधियाँ लग गयी हैं। सबसे बड़ी अपने अहं की उपाधि होती है। आदमी इतना उपाधियों से भर गया कि वह सच्चाई को देख नहीं पा रहा है कि सत्य क्या है? सत्य के लिए कुछ करने की क्षमता नहीं रही। और एक प्रकार से मनुष्य असहाय बन गया। आचार्य तुलसी ने इस ओर ध्यान दिया। उन्होंने हरिजनों के उत्थान की बात सोची। लोग कहने लगे कि यह तो हिन्दू जाति को तोड़ने का प्रयत्न हो रहा है। मैं पूछता हूँ कौन तोड़ रहा है, कौन काट रहा है?

किन्तु मैं यह मानकर चलता हूँ कि आज अणुव्रत अनुशास्ता को, अणुव्रतियों को व उनके साथियों को एक बात का संकल्प लेना होगा कि उनके सामने आने वाली कठिनाइयों के प्रति संघर्ष का यहाँ तक कि प्राणों की बलि तक का भी संकल्प लेना होगा, तभी कुछ कर सकेंगे। मुझे विश्वास है कि अणुव्रत इस दिशा में पहल करेगा और उसे सफलता मिलेगी। ■■■

बापू की वाणी

- सत्य वज्र के समान कठिन है और कमल के समान कोमल है।
- छोटा दुःख भी दूर से देखने पर बड़ा मालूम होता है।
- इस संसार में, जहां ईश्वर अर्थात् सत्य के सिवा कुछ भी निश्चित नहीं है, निश्चितता का विचार करना ही दोषमय प्रतीत होता है।
- यह सब जो हमारे आसपास दीखता है और होता है, सो अनिश्चित है, क्षणिक है। उसमें जो एक परम तत्त्व निश्चित रूप से छिपा हुआ है, उसकी झाँकी हमें हो जाये, उस पर हमारी श्रद्धा बनी रहे, तभी जीवन सार्थक होता है। उसकी खोज ही परम पुरुषार्थ है।
- शुभ कार्य का फल शुभ ही होता है।
- कितने ही काम होने पर भी जिस तरह हम खाने का समय निकाले बिना नहीं रहते, उसी तरह व्यायाम का समय भी हमें निकालना चाहिए।
- अच्छे काम के प्रति आदर और बुरे के प्रति तिरस्कार होना ही चाहिए।
- मनुष्य किसी भी निमित्त से संयम क्यों न पाले, उसमें उसे लाभ ही है।
- सबकी भलाई में ही हमारी भलाई निहित है।
- आत्मा का विकास करने का अर्थ है चरित्र का निर्माण करना, ईश्वर का ज्ञान पाना, आत्मज्ञान प्राप्त करना।
- जिस तरह प्रकृति स्वयं प्रतिदिन उत्पन्न करती और प्रतिदिन खाती है, वैसी ही व्यवस्था सार्वजनिक संस्थाओं की भी होनी चाहिए।
- जिस संस्था को लोग मदद देने के लिए तैयार न हों, उसे सार्वजनिक संस्था के रूप में जीवित रहने का अधिकार ही नहीं है।

(राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' से साभार)

■ आचार्य महाश्रमण ■

बुद्धि की विशुद्धि

मैं बुद्धि का समर्थक हूँ, बुद्धि का सम्मान करता हूँ और बुद्धि की आकांक्षा भी करता हूँ। बुद्धि का विकास, बौद्धिकता अच्छी रहनी चाहिए क्योंकि बुद्धि से बहुत अच्छे काम किये जा सकते हैं। बुद्धि से अच्छे निर्णय लिये जा सकते हैं। परंतु जब बुद्धि के साथ मोहनीय कर्म जुड़ जाता है तो आदमी गलत निर्णय ले लेता है और गलत दिशा में चला जाता है। केवल विशुद्ध बुद्धि हो तो आदमी गलत काम या अपराध में नहीं जा सकता।

संबोधि की शैली में भगवान महावीर ने मुनि मेघ को निस्संदेह बनाने और समाधान देने का प्रयास करते हुए कहा –

भावेऽनिर्वचनीयेऽस्मिन्, संदेहं वत्स! मा कुरु।
बुद्धिवादः ससीमोऽयं, चेतः परं न धावति।।

वत्स! इस अनिर्वचनीय भाव में संदेह मत कर। यह बुद्धि सीमित है, चित्त से आगे इसकी पहुँच नहीं है।

बुद्धिवाद ससीम होता है। एक सीमा तक वह बहुत अच्छा है। परंतु बुद्धि के पार भी कोई चीज होती है, वह बुद्धि की पकड़ में नहीं आती। संस्कृत साहित्य में कहा गया – 'बुद्धिर्यस्य बलं तस्य, निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम्' अर्थात् जिसके पास बुद्धि है, उसके पास बल है, निर्बुद्धि कहां से बल लाये।

मैं बुद्धि का समर्थक हूँ, बुद्धि का सम्मान करता हूँ और बुद्धि की आकांक्षा भी करता हूँ। बुद्धि का विकास, बौद्धिकता अच्छी रहनी चाहिए क्योंकि बुद्धि से बहुत अच्छे काम किये जा सकते हैं। बुद्धि से अच्छे निर्णय लिये जा सकते हैं। परंतु जब बुद्धि के साथ मोहनीय कर्म जुड़ जाता है तो आदमी गलत निर्णय ले लेता है और गलत दिशा में चला जाता है। केवल विशुद्ध बुद्धि हो तो आदमी गलत काम या अपराध में नहीं जा सकता।

बुद्धि एक शक्ति है। उसका उपयोग कौन कैसे करता है, यह अलग बात है। बुद्धि अपने आपमें क्षयोपशम भाव है। जैसे पानी अपने आपमें एक तत्त्व है, द्रव्य है। पानी का उपयोग कौन कैसे करे, यह अलग चीज है। कौन पानी को पीने में काम ले रहा है और कौन पानी को ऐसे ही बहा रहा है। मेघ बरसता है तो एक व्यक्ति उस वर्षा के पानी को कुंड में इकट्ठा कर लेता है, संरक्षित कर लेता है। बाद में वह पानी पीने के काम आ जाता है। दूसरा व्यक्ति बाल्टी में पानी इकट्ठा तो करता है, किन्तु उस पानी का वह नहाने में उपयोग कर लेता है। तीसरा व्यक्ति पानी को इकट्ठा करता ही नहीं है। वह पानी यूं ही गंदी नाली में चला जाता है। वैसे ही बुद्धि अपने आपमें अच्छी चीज है, आत्मा की उज्ज्वलता है। अब आदमी बुद्धि का उपयोग कैसे करे, वह उस पर निर्भर करता है।

कई बार देखा जाता है कि कार, बसें आदि सड़क पर चल रही हैं और वर्षा भी आ रही है। जब वर्षा की बूँदें वाहनों के कांच पर गिरती रहती हैं तो वाइपर से बार-बार कांच की सफाई होती रहती है, ताकि देखने में बाधा न आये। इसी प्रकार यह बुद्धि भी अपने आपमें कांच है, जिससे देखा जा सके, जाना जा सके, समझा जा सके। इस बुद्धि रूपी कांच पर मोहनीय कर्म रूपी वर्षा की बूँदें लग जाएं तो उनको साफ करते रहें ताकि हमें अच्छी तरह दिखायी देता रहे कि आगे कैसे, कहां चलना है।

सबकी बुद्धि एक समान हो, यह जरूरी नहीं है। बुद्धि-बुद्धि में और उसकी निर्मलता-निर्मलता में तारतम्य हो सकता है। हम अपनी बुद्धि का उपयोग पढ़ने में, तत्त्व को समझने में और दूसरों को समझाने आदि में कर सकते हैं। क्योंकि वर्तमान में केवलज्ञान तो हमारे पास है नहीं, बुद्धि के स्तर पर ही हम अच्छा काम कर सकते हैं, अपना व दूसरों का कल्याण कर सकते हैं।

सबकी बुद्धि एक समान हो, यह जरूरी नहीं है। बुद्धि-बुद्धि में और उसकी निर्मलता-निर्मलता में तारतम्य हो सकता है। निर्मलता दो तरह की होती है। एक तो मोहनीय कर्म से उसका अलगाव रहे और दूसरी बुद्धि की अल्पता का मल या विकृतता का मल भी न रहे। हम अपनी बुद्धि का उपयोग पढ़ने में, तत्त्व को समझने में और दूसरों को समझाने आदि में कर सकते हैं। क्योंकि वर्तमान में केवलज्ञान तो हमारे पास है नहीं, बुद्धि के स्तर पर ही हम अच्छा काम कर सकते हैं, अपना व दूसरों का कल्याण कर सकते हैं। बुद्धि के पार भी एक भूमिका है। आयारो में कहा गया – सव्वे सरा णियट्टंति.... आयारो के इन उद्घोषों का गुरुदेव तुलसी ने हिन्दी में अनुवाद करते हुए अपने ग्रन्थ 'अर्हत् वाणी' में कहा है –

लौट आते हैं सभी स्वर तर्क का संपर्क कैसा,
विषय जो मति का नहीं है, ओज वह अशरीर जैसा,
अगुरुलघु वह अनाकृति है निरंजन वह निर्विकृति है,
गंध स्पर्श रस वर्ण विमुक्ता उपमातीत अरूपी सत्ता,
वह केवल ज्ञाता द्रष्टा है निज पर्यायों का स्रष्टा है,
वह आत्मा है परमात्मा है सर्वात्मा है सर्वज्ञानी,
आयारो की अर्हत्-वाणी॥

हमें इस भूमिका पर भी आरूढ़ होने का प्रयास करना चाहिए। किन्तु जब तक यह भूमिका प्राप्त नहीं होती है, तब तक बुद्धि की भूमिका में रहते हुए भी अच्छा काम करने का प्रयास करें।

करणीय

* बुद्धि का सदुपयोग करना चाहिए।

* बुद्धि-विकास की आकांक्षा रखनी चाहिए।

* बुद्धि रूपी कांच पर मोह रूपी वर्षा की बूंदें लग जाएं तो उनको साफ करते रहें।

* केवलज्ञान के अभाव में बुद्धि के स्तर पर अपना व दूसरों का कल्याण करते रहें।

मिलकर रचा उजास

मनोज जैन मधुर - भोपाल

व्यर्थ कभी जाता नहीं, किया गया संघर्ष।
अंधियारे में दीप ने, हँस हँस बाँटा हर्ष।।

नन्हे दीपक ने दिया, एक बड़ा सन्देश।
सदा फैलती त्याग की, अनुपम कीर्ति अशेष।।

रखा ध्यान में लक्ष्य को, और जला अविराम।
एक दीये ने कर दिया, तम का काम तमाम।।

लाख गुना हो आयतन, मीलों हो विस्तार।
हुई दीप के सामने, अंधियारे की हार।।

जला आखिरी साँस तक, खूब निभाया धर्म।
दीप हमें सिखला गया, क्या होता है कर्म।।

मैं हूँ वंशज सूर्य का, तम को हरना काम।
नन्हा सा मैं दीप हूँ, जलता हूँ अविराम।।

जलकर रौशन कर गया, जग में अपना नाम।
दीपक आया किस कदर, मानवता के काम।।

मिला दीप की ज्योति से, ऊर्ध्व गमन का बोध।
केवल ज्ञानी कर सका, इसी दृष्टि पर शोध।।

रत्तीभर आया नहीं, अंधियारे को रास।
दीपक ज्योति प्रकाश ने, मिलकर रचा उजास।।

जली वर्तिका दीप में, अपना नेह निचोड़।
अंधियारा पीछे हटा, अपने हाथ झिंझोड़।।

जगर मगर दीपक जले, हरे कलुष तम शोक।
जैसे प्राची से निकल, तम हरता आलोक।।

■ कुमार प्रशांत ■

जो तोड़ने से भी न टूटे, वह गांधी है

मानव-जाति ने प्रतिद्वंद्वी से निबटने के जो दो रास्ते जाने, माने और लगातार अपनाये भी हैं, वे इन्हीं बलों पर आधारित हैं - हिंसा, प्रतिहिंसा, बदला। कहूं तो हमारी सभ्यता का सारा इतिहास इसी का दस्तावेज है, कोई तीसरी ताकत भी हो सकती है जो इस दुष्चक्र से मनुष्यता को त्राण दिला सकती है, इसका अविचल दावा और उस दिशा में लगातार साहसी प्रयास हमें गांधी में ही मिलता है। गांधी से द्वेष का यही कारण है कि गांधी उनकी जड़ ही काट देते हैं।

गांधी सारी दुनिया में हैं – मूर्तियों में ! एक जानकारी बताती है कि कोई 70 देशों में गांधीजी की प्रतिमा लगी है। भारतीय सामाजिक-राजनीतिक जीवन में गांधी 1917 में प्रवेश करते हैं और फिर अनवरत कोई 31 सालों तक, अहर्निश संघर्ष की वह जीवन-गाथा लिखते हैं जिसे हिंदुत्व की धारा में कु-दीक्षित नाथूराम गोडसे की तीन गोलियां ही विराम दे सकीं, लेकिन एक हिसाब और भी है जो हमें लगाना चाहिए : कितने देशों में गांधी-प्रतिमा को खंडित करने की वारदात हुई है? संख्या बड़ी है। गांधी के चंपारण में, मोतिहारी के चरखा पार्क में खड़ी गांधी की मूर्ति पिछले दिनों ही खंडित की गयी है। ऐसे चंपारण दुनिया भर में बने हैं। अमरीका में अश्वेतों ने भी गांधी प्रतिमा को नुकसान पहुँचाया था। ऐसी घटनाओं से नाराज या व्यथित होने की जरूरत नहीं है। फिक्र करनी है तो हम सबको अपनी फिक्र करनी है जो लगातार गहरी फिक्र का बायस बनती जा रही है।

गांधी की प्रतिमाओं के खिलाफ एक लहर तब भी आयी थी जब 70 के दशक में नक्सली उन्माद जोरों पर था। गांधी की मूर्तियों पर हमले हो रहे थे, वे तोड़ी जा रही थीं, विकृत की जा रही थीं, अपशब्द आदि लिखकर उन्हें मलिन करने की कोशिश की जा रही थी। तब यहां-वहां चेयरमैन माओ के समर्थन में नारे भी लिखे व लगाये जा रहे थे। मूर्तियों से लड़ने के इसी उन्मादी दौर में, बिहार के जमशेदपुर में गांधी की मूर्ति का विभंजन हुआ था। तब जयप्रकाश नारायण ने अपनी गांधी-बिरादरी को संबोधित करते हुए लिखा था कि गांधी से इन लोगों को इतना खतरा महसूस होता है कि वे इनकी मूर्तियां तोड़ने में लगे हैं, इसे मैं आशा की नजरों से देखता हूँ। यह हम गांधीजनों को सीधी चुनौती है जो अपनी-अपनी सुरक्षित दुनिया बना कर जीने लगे हैं। चुनौती नहीं तो गांधी नहीं, ऐसा भाव तब जयप्रकाश ने जगाया था जो शनैः शनैः उस लहर में बदला जिसे इतिहास में जयप्रकाश आंदोलन या संपूर्ण क्रांति आंदोलन कहा जाता है।

आज गांधी के खिलाफ एक दूसरा ध्रुव उभरा है जो हिंदुत्व के नाम से काम करता है। अपनी बची-खुची ताकत समेट कर नक्सली हमलों व हत्याओं की खबरें भी यहां-वहां से आती रहती हैं लेकिन यह साफ है कि राज्य की हिंसा अब उन पर भारी पड़ रही है। हिंसा का यह दुष्चक्र नया नहीं है बल्कि यही इसका शास्त्र है कि बड़ी हिंसा छोटी हिंसा को खा जाती है और छोटी हिंसा बड़ी बनने की तिकड़म में लगातार हमले करती रहती है। इन दो हिंसाओं के बीच समाज पिसता रहता है।

जब मैं दक्षिणपंथी विचारधारा की बात कहता हूँ तब मेरा आशय अंध-संकीर्णता से है...। यह संकीर्णता भी दुनिया भर में फैली है, बढ़ रही है। इंग्लैंड में ऋषि सुनक की जगह लिज ट्रस को प्रधानमंत्री चुनना ऐसी ही संकीर्णता का ताजा उदाहरण है। कंजरवेटिव दल के सदस्य श्वेत चमड़ी व ब्रिटिश मूल की अवधारणा से चिपके हैं जबकि ब्रिटिश जनता ज्यादा उदारता से सोचती व बरतती है। सभी जानते हैं कि यदि ब्रिटेन में आज आम चुनाव हो जाये तो सुनक की जीत होगी। सुनक अच्छे प्रधानमंत्री होंगे कि ट्रस, सवाल यह है ही नहीं। सवाल यह है कि संकीर्णता फैल रही है कि उदारता? संकीर्णता सत्ता की ताकत पाकर ज्यादा हमलावर व ध्वंसकारी हो गयी है। पहले उसने गोली मारी थी लेकिन गांधी मरे नहीं; अब वे उनकी उन सारी स्मृतियों को पोंछ डालना चाहते हैं जिससे क्षुद्रता की विफलता सामने आती है। गांधी के खिलाफ तब वामपंथियों ने चेयरमैन माओ का प्रतीक खड़ा किया था, दक्षिणपंथी नाथूराम गोडसे का प्रतीक खड़ा करने में जुटे हैं। हम याद रखें कि सबके अपने-अपने गोडसे हैं। सब अपने प्रतीक को खड़ा कर रहे हैं लेकिन जो खड़ा नहीं हो पा रहा है और जिसे खड़ा करने में किसी की दिलचस्पी भी नहीं है, वह है लोकतंत्र का आम नागरिक, गांधी इसी की हैसियत बनाने व बढ़ाने में जीवनपर्यंत लगे रहे।

गांधी होते तो आज, जब मैं यह पंक्ति लिख रहा हूँ, 152 साल, 11 माह, 1 दिन के होते - इतने साल आदमी कहां जीता है। लेकिन गांधी जी रहे हैं तभी तो हम उनसे सहमत-असहमत ही नहीं होते रहते हैं, उनकी मूर्तियों पर हमला कर अपना क्रोध या अपनी असहमति व्यक्त करते हैं। गांधी न कभी सत्ताधीश रहे, न व्यापार-धंधे की दुनिया से और न उसके शोषण, अन्याय से उनका कोई नाता रहा, न उन्होंने कभी किसी को दबाने-सताने की वकालत की, न गुलामों का व्यापार किया, न धर्म-रंग-जाति-लिंग भेद जैसी किसी सोच का समर्थन किया। वे अपनी कथनी और करनी में हमेशा इन सबका निषेध ही करते रहे। वे कहते व करते इतना ही रहे कि हमारे निषेध का रास्ता हिंसक नहीं होना चाहिए। उनका तर्क सीधा था और आज भी उतना ही सीधा है कि जितने तरह के शोषण, भेद-भाव, गैर-बराबरी, ज्यादती चलती है, चलती आयी है और आगे भी चल सकती है, उन सबकी जड़ हिंसा में है।

हिंसा का मतलब ही है कि आप मनुष्य से बड़ी किसी शक्ति को, मनुष्य का दमन करने के लिए इस्तेमाल करते हैं फिर चाहे वह शक्ति हथियार की हो कि धन-दौलत या सत्ता की या संख्या या उन्माद की। गांधी ऐसे किसी हथियार का इस्तेमाल मनुष्य के खिलाफ करने को तैयार नहीं होते हैं क्योंकि वे मानते हैं कि इससे मनुष्य व मनुष्यता का पतन होता है और जिसके खिलाफ हम होते हैं, वह बना ही नहीं रहता है बल्कि पहले से ज्यादा क्रूर व घातक हो जाता है। हिंसा हमारे निष्फल क्रोध की निशानी बन कर रह जाती है। इसलिए ही वे कहते हैं कि हिंसा बांझ होती है।

अहिंसक रास्ते से मनुष्य व मनुष्यों का समाज अपनी कमियों, बुराइयों से कैसे लड़ सकता है, और कैसे अपनी सत्ता बना सकता है, इसका कोई इतिहास नहीं है। जो और जितना है, वह गांधी का ही बनाया है। तो गांधी एक संभावना का नाम है। कुछ लोग हैं ऐसे जो गांधी के बाद भी इस संभावना को जांचने और सिद्ध करने में लगे हैं। इसलिए ही तो हम गांधी-विनोबा-जयप्रकाश का त्रिकोण बनाते हैं क्योंकि अहिंसक शोध की दिशा में इतिहास के पास कोई तीसरा नाम है नहीं। हम यह भी कह सकते हैं कि इनकी अपनी मर्यादाएं व कमजोरियां भी हैं जैसी हर मानवीय प्रयास की होती हैं, लेकिन ऐसे गांधी का और ऐसी कोशिशों का विरोध क्यों है? गांधी के प्रति धुर वामपंथियों का और धुर दक्षिणपंथियों का द्वेष क्यों है? यह द्वेष आज का नहीं, जन्मजात है। गांधी को अपने जीवन के प्रारंभ से तीन गोलियों से छलनी होने तक इनका घात-प्रतिघात झेलना पड़ा। ऐसा क्यों? इसका कारण समझना किसी जटिल वैज्ञानिक समीकरण को समझने जैसा नहीं है। हालांकि विज्ञान ही बताता है कि एक बार ठीक से कुछ भी जान-समझ लें हम तो जटिल या सरल जैसा कुछ नहीं होता है। जो जटिल है वह ज्ञात व अज्ञात के बीच की खाई है।

गांधी इस अर्थ में बेहद खतरनाक हैं कि कैसी भी गैर-बराबरी, किसी भी स्तर पर भेद-भाव, किसी भी तर्क से शोषण-दमन को स्वीकारने को वे तैयार नहीं हैं। इस हद तक कि वे इनमें से किसी की मुखालफत करते हुए जान देने को तैयार रहते हैं। दूसरी तरफ यही गांधी हैं कि जो किसी भी तरह बदला लेने या प्रतिहिंसा को कबूल करने को तैयार नहीं हैं। मानव-जाति ने प्रतिद्वंद्वी से निबटने के जो दो रास्ते जाने, माने और लगातार अपनाये भी हैं, वे इन्हीं बलों पर आधारित हैं - हिंसा, प्रतिहिंसा,

बदला। कहूं तो हमारी सभ्यता का सारा इतिहास इसी का दस्तावेज है, कोई तीसरी ताकत भी हो सकती है जो इस दुष्चक्र से मनुष्यता को त्राण दिला सकती है, इसका अविचल दावा और उस दिशा में लगातार साहसी प्रयास हमें गांधी में ही मिलता है। गांधी से द्वेष का यही कारण है कि गांधी उनकी जड़ ही काट देते हैं।

गांधी से वामपंथियों का विरोध या द्वेष इधर कुछ कम हुआ है। राजनीतिक सत्ता की छीना-झपटी में लगी दलित पार्टियों का गांधी के खिलाफ विषवमन कुछ धीमा पड़ा है तो सोच-समझ रखने वाले दलितों के बीच से सहानुभूति व समन्वय की कुछ आवाजें भी उठने लगी हैं, लेकिन इन सबके पीछे राजनीतिक परिस्थितिजन्य मजबूरी कितनी है और समझ में बदलाव कितना है, यह देखना अभी बाकी है। हम देख ही रहे हैं कि गांधी के अपमान व उनकी मूर्तियों के विभंजन पर इनकी तरफ से कोई खास प्रतिवाद नहीं होता है। प्रतिवाद में जो आवाजें उठती हैं, उनमें हायतौबा ज्यादा होता है। यह भी सच है कि ऐसी घटनाओं के पीछे दिशाहीन सामाजिक उपद्रवी, शराबी- अपराधी किस्म के लोग भी होते हैं लेकिन यह भी सच है कि यह गांधी से विरोध-भाव रखने वाली राजनीतिक-सामाजिक शक्तियों का कारनामा भी है। यथास्थिति बनाये रखने वाली दक्षिणपंथी तथा हिंसा-द्वेष की लहर बहा कर उनकी जगह लेने में लगी वामपंथी ताकतों का यह वही खेल है जो गांधी को अपने हर कदम के इनकार में खड़ा पाता है। गांधी का यह इनकार इतना सशक्त, तार्किक व सीधा है कि 70 से अधिक सालों से लगातार अनुपस्थित होने पर भी वे गांधी की कोई सार्थक काट खोज नहीं पाये हैं सिवा छूछा क्रोध प्रदर्शित करने के। यह असत का सत पर प्रहार है।

गांधी वालों में इससे क्रोध या ग्लानि का भाव पैदा नहीं होना चाहिए। मूर्तियों का यह प्रतीक-संसार सारी दुनिया में अत्यंत बेजान, अर्थहीन व नाहक उकसाने वाला हो गया है। हमारा हाल तो ऐसा है कि बुद्ध जैसे मूर्तिपूजा के निषेधक की मूर्तियों से हमने जग पाट दिया है, तो गांधी पर हम गांधी वाले रहम खाएं और मन-मंदिर में भले उन्हें बसाएं, उनकी मूर्तियां न बनाएं। हम दृश्य-जगत में उनके मूल्यों की स्थापना का ठोस काम करें। गांधी सामयिक हैं, यह बात नारों-गीतों-मूर्तियों-समारोहों-उत्सवों से नहीं, समस्याओं के निराकरण से साबित करनी होगी। जो गांधी को चाहते व मानते हैं, उनके लिए गांधी एक ही रास्ता बना व बता कर गये हैं : अपने भरसक ईमानदारी व तत्परता से गांधी-मूल्यों की सिद्धि का काम करें ! इससे उनकी जो प्रतिमा बनेगी, वह तोड़े से भी नहीं टूटेगी। हम जयप्रकाश की वह चेतावनी याद रखें : " गांधी की पूजा एक ऐसा खतरनाक काम है जिसमें विफलता ही मिलने वाली है।" इसलिए गांधी की हर विखंडित प्रतिमा दरअसल हमें विखंडित करती है और हमें ही चुनौती भी देती है।

दिल्ली में रहने वाले लेखक प्रसिद्ध गांधीवादी सर्वोदयी चिंतक और गांधी शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष हैं। आपको जयप्रकाश नारायण का मानस पुत्र माना जाता है।

प्रेरक प्रसंग

सच्ची श्रद्धांजलि

30 जनवरी, 1948 को महात्मा गांधी की हत्या के बाद सारे देश में शोक की लहर छा गयी। राहुल सांकृत्यायन उस समय इलाहाबाद में थे। वे गांधीवादी नहीं थे। मतभिन्नता के बावजूद वे गांधीजी का बहुत आदर करते थे। वे यह भी महसूस करते थे कि गांधीजी के आदर्शों की लोकजीवन में गहरी पैठ है।

उन्होंने विचार किया कि इस जनप्रिय नेता को किस प्रकार श्रद्धांजलि दी जाये। वे चेन स्मोकर थे। इस चिन्तन के दौरान भी वे सिगरेट पी रहे थे। तुरन्त ध्यान में आया कि गांधीजी व्यसन विरोधी थे। उसी समय उस गहरी-घनी रात्रि की नीरवता में निर्णय लिया। आखिरी सिगरेट और सोने का लाइटर तोड़कर फेंक दिया, हमेशा के लिए। हृदय से सच्ची श्रद्धाजंलि अर्पित की दिवंगत महात्मा जी को।

लघुकथा

पंखों की पहचान

राजेश अरोड़ा - श्रीगंगानगर

पिता ने अपने समझदार बेटे को अध्ययन के लिए सरकारी स्कूल में दाखिल कराया। कुछ दिन गुजरे, फिर एक दिन स्कूल से लौटने पर बेटा पिता से बोला, "पिताजी! सरकारी स्कूलों में पढ़ाई अच्छी नहीं होती, कल से मैं इस स्कूल में नहीं जाऊँगा।"

पिता बोले, "बेटा, तुम अपनी काबिलियत पर भरोसा रखो। देखो! चिड़िया निहायत नाजुक डाली पर कितने विश्वास के साथ बैठती है। उसे यह भरोसा कहां से आया? यह भरोसा उसे डाली से नहीं, अपने पंखों से मिला है। उसे पता है कि खतरे की भनक पड़ते ही उसके पंख उसे फुर्र से उड़ाकर ले जा सकते हैं।"

बेटा, पिता की बात समझ गया था।

ज्वेलर्स शॉप इंश्योरेंस

लाईफ इंश्योरेंस

कैशलेस मेडीक्लेम

इंश्योरेंस टिप्स

हमारे विशेषज्ञों द्वारा
अपनी पुरानी ज्वेलर्स ब्लॉक पॉलिसी
या मेडिक्लेम पॉलिसी की जाँच करवाएँ और
अनुकूल नियमों और शर्तो के साथ
मुफ्त कोटेशन प्राप्त करें ।

नो रुम कैटगरी वाली
कैशलेस मेडिक्लेम पॉलिसी लें
और इसे केवल 2600/- की
मामूली राशि से सुपर टॉप अप
पॉलिसी के साथ जोड़ें

अपने पुराने जीवन वीमा पॉलिसी
नंबर के साथ शेयर करें,
हम एक परिवार पोर्टफोलियों प्रदान करेंगे
और उसी के अनुसार बेहतरीन योजना
की सलाह देंगे ।

यदि किसी इंश्योरेंस कंपनी ने आपके
मौजूदा क्लेम को खारिज कर दिया है
और आपको किसी सहायता या सलाह
की आवश्यकता होती है, तो हम
मदद के लिए तैयार है ।

Legacy of 38 Years

25000 HAPPY CUSTOMERS INDIA & ABROAD

11000 Claims Solved

300 National & International Awards

वर्ष 2020-21 में हमने 50+ करोड़ की वैल्यु के क्लेम सैटल किए है जिसमे पॉलीसी है
ज्वैलर्स ब्लॉक, लाईफ इन्शुरेन्स, मेडीक्लेम, फायर एवं बर्गलरी.

Ganpat Dagliya
Gold Medalist
T.O.T - U.S.A

NICE™
INSURANCE LANDMARK
One Stop Insurance Solution in India !
हम देश विदेश में सभी ग्राहको को ऑनलाईन सुविधा द्वारा सेवा देते है.

Chirag Dagliya
M.B.A & Harvard Cert.
T.O.T - U.S.A

26 A, Dagina Bazar, Mumbadevi Rd, Mumbai 400 002 | Email : info@niceinsure.com | www.niceinsure.com
Contact: +91 7045 850012/13/14/15/16 / 9869230444 / 9869050031 / 022-22448800

रमेश चंद शर्मा

सादगी : गांधी एवं अणुव्रत दर्शन का मूल

सत्य, अहिंसा के लिए सादगी परमावश्यक तत्त्व है। सादगी के बिना इनका पालन बहुत कठिन है। सादगी जोड़ती है। सबसे संपर्क, संवाद का अवसर प्रदान करती है। अहंकार, अहं, असत्य को दूर करती है। स्वाभिमान को जगाती है। शोषण, दोहन, लोभ, लालच, लूट, तनाव, दबाव, दमन से बचाती है। मानवीय सरोकार से जोड़ती है।

गांधी दर्शन एवं अणुव्रत दर्शन पर विचार करें तो इनकी नींव में सत्य, प्रेम, करुणा का वास है। ये विचार सत्य, प्रेम, करुणा के सहारे ही आगे बढ़े। इन विचारों का पालन करना है, जीवन में उतारना है, जीवनशैली का अंग बनाना है, तो हमें सादगी, सरलता, सहजता, स्पष्टता, संवेदना, संकल्प, समझदारी, समर्पण, सद्भावना को अपनाने की आवश्यकता है। तभी हम सत्य, अहिंसा की जीवनशैली को अपने जीवन में उतार सकते हैं।

सत्य, अहिंसा के लिए सादगी परमावश्यक तत्त्व है। सादगी के बिना इनका पालन बहुत कठिन है। महात्मा गांधी के ये शब्द हमारा मार्गदर्शन करते हैं, "यह धरती आवश्यकता सबकी पूरी कर सकती है मगर लालच किसी का भी पूरा नहीं कर सकती।"

"सादा जीवन उच्च विचार" सादगी, सरलता, सहजता में ही परमात्मा बसता है। प्रकृति सादगी का संदेश देती है। सबको समता-समानता से अपने पंच तत्त्वों को बाँटती है। भूमि, गगन, वायु, अग्नि, नीर इन पंच तत्त्वों का संदेश न्यारा, इससे बना शरीर हमारा, इसी से निर्मित संसार सारा। जीव-जंतु, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, नदी-नाले, पहाड़, जंगल, व्यक्ति, प्रकृति सबका निर्माण इन्हीं पाँच तत्त्वों से ही हुआ है। भगवान शब्द भी इन तत्त्वों से ही मिलकर बना है - भ से भूमि, ग से गगन, व से वायु, अ से अग्नि, न से नीर। ये तत्त्व सादगी, सरलता, सहजता, समानता से सबको आसानी से उपलब्ध रहें। सूर्य की ऊर्जा, वायु, जल, आकाश, भूमि सबको उपयोग करने का बराबर अधिकार रहे।

सादगीपूर्ण जीवन सदैव प्रेरक, प्रेरणा प्रदान करते रहे हैं। महात्मा गांधी, आचार्य तुलसी, संत विनोबा भावे सहित अनेक संत, साधु, महात्मा, ऋषि, मुनि, पीर, फकीर इसके सुंदर, उत्तम उदाहरण हैं। अपन महात्मा गांधीजी से तो सशरीर मिल पाने का सौभाग्य प्राप्त नहीं कर सके, मगर संत विनोबा भावे एवं आचार्य तुलसी से मिलने, संवाद, संपर्क करने के अनेक अवसर प्राप्त हुए। सादगी, सरलता, सहजता, प्रेम, करुणा से सराबोर सक्रियता का जीता-जागता अद्भुत जीवन देखने, समझने, जानने, विचारने, अपनाने का सुनहरा सुअवसर मिला। साथ काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह परम सौभाग्य की बात है।

सादगी शब्द स्त्रीलिंग है। इसमें संयम, सहनशीलता, सरलता, सहजता, समता, ममता का गुण, भाव समाया हुआ है। संयम जीवन को उत्कृष्ट बनाने के लिए जरूरी है। संयम, अनुशासन, स्वानुशासन का अवसर प्रदान करता है। संयम, सादगी के बिना तप, तपस्या, साधना संभव नहीं है। साधक की जीवनशैली में संयम, सादगी का अपूर्व योगदान है। इनके बिना साधक का जीवन चल नहीं सकता।

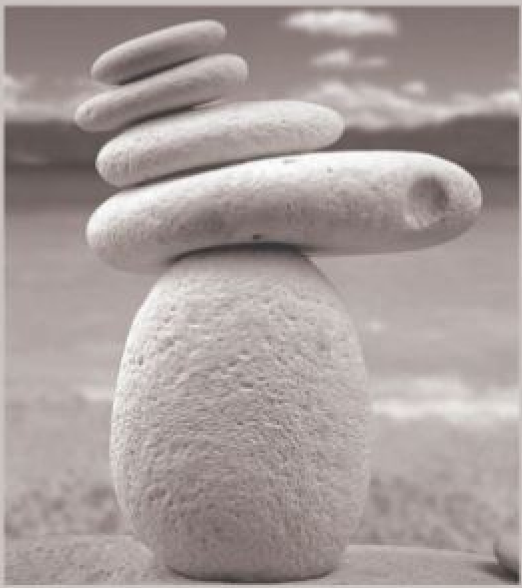

सादगी से मनुष्य का जीवन ऊपर उठता है, पर आज समाज में जितनी सादगी चाहिए, उतनी नहीं है। संपत्ति, धन-दौलत एक सीमा तक ही बढ़नी चाहिए। सादगी से आनंद का आंतरिक खजाना खुलता है।

साधक के जीवन के हर क्षेत्र, पहलू में संयम का सघन महत्व है। रहन-सहन, बोलचाल, खान-पान, उठना-बैठना, जगना-सोना, आचरण-व्यवहार सभी में संयम चाहिए। संयम के लिए सादगी का होना जरूरी है। सादगी के लिए निर्भयता, संकल्प, समर्पण, स्पष्टता, निष्ठा की आवश्यकता है।

सादगी जोड़ती है। सबसे संपर्क, संवाद का अवसर प्रदान करती है। अहंकार, अहं, असत्य को दूर करती है। स्वाभिमान को जगाती है। शोषण, दोहन, लोभ, लालच, लूट, तनाव, दबाव, दमन से बचाती है। मितव्ययिता को बढ़ाती है। मानवीय सरोकार से जोड़ती है। अनावश्यक बोझ से मुक्त रखती है। कम खर्च में जीवन यापन का मौका देती है।

महात्मा गांधी ने पागल दौड़ से सावधान, सतर्क करते हुए कहा कि "जो लोग अपनी आवश्यकताएं बढ़ाते रहने की पागल दौड़ में लगे हैं, वे व्यर्थ ही यह मान रहे हैं कि ऐसा करके वे अपने तत्त्व में वृद्धि कर रहे हैं और अपने सच्चे ज्ञान को बढ़ा रहे हैं। उनके लिए एक ऐसा दिन अवश्य ही आएगा, जब उन्हें अपने से पूछना होगा कि हम क्या कर बैठे?"

आज वह समय आ गया है। आज हमें गम्भीरतापूर्वक इस पर गहन विचार, चिंतन-मनन की आवश्यकता है। सादगी अपनाकर हम इस चुनौती को जवाब दे सकते हैं। सच्चा स्वराज्य कुछ लोगों द्वारा सत्ता हासिल कर लेने से नहीं आएगा। वह तो तभी आएगा जब सारे लोग सत्ता के दुरुपयोग को रोक सकने की शक्ति हासिल कर लेंगे। व्यक्ति की पूजा के बजाय गुण की पूजा करनी चाहिए। व्यक्ति तो गलत साबित हो सकता है और उसका नाश तो होगा ही, गुणों का नाश नहीं होता। हर एक बड़े ध्येय के लिए जूझने वालों की संख्या का महत्व नहीं होता। जिन गुणों से वे बने होते हैं, वे गुण ही निर्णायक होते हैं। संसार के महान से महान पुरुष हमेशा अपने ध्येय पर अकेले डटे रहे हैं।

कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा है - "जदि तोर डाक शुने केऊ ना आसे तबे एकला चलो रे" अर्थात् तुम्हारी आवाज सुनकर भी कोई साथ नहीं आये तो एकला चलो। कैसी भी परिस्थिति हो डरना नहीं, घबराना नहीं।

एक के बाद एक संस्कृति आयी और गयी, लेकिन अपनी प्रगति की बड़ी-बड़ी डींगों के बावजूद मुझे बार-बार यह पूछने की इच्छा होती है कि आखिर यह सब किसलिए? यह सब क्या हो रहा है। कैसे हो रहा है? क्यों हो रहा है? जैसे सवाल आज भी मानवता के सामने अनसुलझे खड़े हुए हैं।

सादगी, संयम, सरलता, सहजता, सक्रियता का जीवन जीने वाले कार्यकर्ता ही ऐसे मूल्यों, गुणों के पोषक बनते हैं। समाज को राह दिखाने वाले हैं। मानवता की ज्योति जलाये रखते हैं। कार्यकर्ता, सेवक, साधक की चर्चा करते हुए बाबा विनोबा कहते हैं कि सादगी तो वहां होनी ही चाहिए। सादगी के बिना हमारा काम चल नहीं सकता। सादगी का मतलब कंजूसी तो नहीं, पर अस्तेय और अपरिग्रह की कसौटी पर सादगी की परख करनी होगी।

मनुष्य के लिए सादगी बड़ी शोभा है। विशेषकर तब जबकि जनता दरिद्र हो। सादगी जरूर चाहिए। दरिद्रता न हो और समृद्धि हो, फिर भी सादगी की जरूरत है। जब हम सादगी में रहते हैं, तो ज्यादा ध्यान बाहर की चीजों में नहीं लगाना पड़ता। हृदय के अंदर ध्यान लग सकता है, ज्यादा सोच सकते हैं। ज्यादा सामान रखने पर उनकी देखरेख, साज-संभाल पर ज्यादा समय लगाना पड़ता है। फिर ज्ञान, भक्ति, ध्यान, साधना, सेवा के लिए कहां समय मिलेगा। उपनिषद् में आता है "अमृतत्वस्य तु न आशा अस्ति वित्तेन" अर्थात् पैसे से अमृतत्व मिलने की आशा नहीं है।

सादगी से मनुष्य का जीवन ऊपर उठता है, पर आज समाज में जितनी सादगी चाहिए, उतनी नहीं है। संपत्ति, धन-दौलत एक सीमा तक ही बढ़नी चाहिए। सादगी से आनंद का आंतरिक खजाना खुलता है। आदमी अंतर्मुखी होता है। इसलिए जीवन में समत्व, सादगी हो। सादगीपूर्ण समाज होगा तो लोकशाही टैक्स से नहीं, दान से चलेगी। शांति शस्त्र से नहीं, करुणा से होगी। आजादी मदद से नहीं, स्वावलंबन से मिलेगी।

दिल्ली में रहने वाले लेखक प्रसिद्ध गांधीवादी चिंतक व कार्यकर्ता हैं। वे गांधी युवा बिरादरी के माध्यम से देशभर में गांधी का संदेश फैला रहे हैं।

धर्मचन्द जैन 'अनजाना'

सम्पन्नता व प्रेरणा का स्रोत है सादगी

सादगी आत्मबल व पुरुषार्थ की परिचायक है। सादगी साहस, संयम साधना व समता का अमृतमयी निचोड़ है न कि प्रतिक्रियात्मक चेतना का काल्पनिक चित्रण। सादगी का उत्कृष्ट उदाहरण हैं अकिंचन संत-महात्मा। जिनकी सादगी, सरलता व सहजता के आगे सभी नतमस्तक हो जाते हैं, अपना शीश झुकाते हैं।

सादगी का सम्बन्ध मन व मस्तिष्क की विशुद्ध चेतना से है न कि सुन्दर पहनावा या अलंकृत शरीर से। सादगी की आर्थिक सम्पन्नता से भी कोई संबद्धता नहीं। अर्थ की सम्पन्नता कभी मन और आत्मा की सम्पन्नता से बड़ी नहीं हो सकती। फिर भी न जाने क्यों व्यक्ति मितव्ययिता को कंजूसी करार दे देता है तथा सादगी भरे पहनावे व रहन-सहन को दीन-हीन समझ लेने का दुस्साहस कर बैठता है। दरअसल यह सब कुछ देखने वाली की दृष्टि पर निर्भर करता है। भगवान महावीर के अनेकांत के अनुसार वास्तविकता ही सच्चाई है किन्तु द्रष्टा के अन्तर में निहित विपन्नता के भाव उसे वास्तविकता से सरोकार नहीं करा पाते।

सादगी आत्मबल व पुरुषार्थ की परिचायक है। सादगी साहस, संयम, साधना व समता का अमृतमयी निचोड़ है न कि प्रतिक्रियात्मक चेतना का काल्पनिक चित्रण।सादगी का उत्कृष्ट उदाहरण हैं अकिंचन संत-महात्मा। जिनकी सादगी, सरलता व सहजता के आगे सभी नतमस्तक हो जाते हैं, अपना शीश झुकाते हैं।

ठीक इसी तरह सांसारिक जीवन जीने वाले भी कई लोग ऐसे हैं जो हर प्रकार से सम्पन्न होते हुए भी संत की तरह जीवन जीते हैं। न कोई आडम्बर, न ही अहंकार और न किसी से कोई तुलना। वे तो विचारों से सात्विक, आचरण से विनयशील, स्वभाव से सरल व करुणाशील तथा मददगार होते हैं। हम उन्हें किस दृष्टि से देखते हैं, यह हम पर निर्भर करता है। यदि हम सादगी को विपन्नता का सूचक मानते हैं तो यह हमारी विपन्न मानसिकता ही है। जबकि सादगी तो सबसे बड़ी चारित्रिक सम्पन्नता, आत्मतोष व पूर्ण पुरुषार्थ का परिचायक है। यह सब कुछ सापेक्ष है। द्रष्टा पर निर्भर करता है कि उसका देखने का दृष्टिकोण क्या है?

एक बार की बात है। एक भारतीय युवक ट्रेन के उस डिब्बे में चढ़ गया जिसमें अंग्रेज लोग सफर कर रहे थे। अंग्रेज उस भारतीय के सादे पहनावे पगड़ी, धोती-कुर्ता आदि को देखकर मजाक बना रहे थे, पर वह तो चुप ही रहा। उसकी चुप्पी को देखकर अंग्रेज और ठहाके लगाने लगे। कुछ देर बाद उस भारतीय युवक ने ट्रेन की जंजीर खींची। इस पर लोगों ने तरह-तरह के व्यंग्य कसे - "पागल है", " पेनल्टी लगेगी तब मालूम पड़ेगा।"

इस बीच ट्रेन रुक गयी। गार्ड, टीटी, पुलिस, रेलवे कर्मचारी आ धमके और पूछा - "जंजीर किसने खींची?" उस भारतीय युवक ने कहा - "मैंने अपनी श्रवणशक्ति द्वारा यह आभास किया कि आगे कुछ दूरी पर रेल की पटरियां टूटी हुई हैं जिससे ट्रेन में सफर कर रहे सैकड़ों लोगों की जान जा सकती है, इसलिए जंजीर

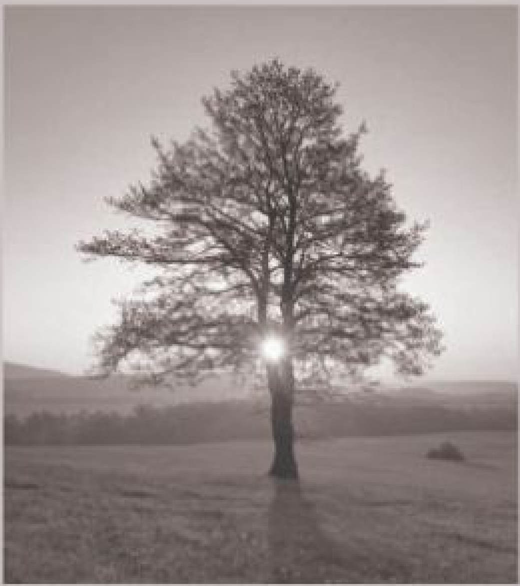

मैंने खींची।" जाँच करने पर भारतीय युवक की बात सही पायी गयी। वास्तव में इस भारतीय युवक ने सैकड़ों यात्रियों को मौत के मुँह से बचा लिया। अब तो लोगों के सुर बदल गये। "धन्य है, धन्य है" के नारों की गूँज सुनायी देने लगी। सादा वेशभूषा वाले उस भारतीय युवक के बारे में ट्रेन में सफर कर रहे अंग्रेजों के मन में चल रहे विचारों की विपन्नता सौहार्द व सम्मान की सम्पन्नता में परिवर्तित हो गयी। प्रतिक्रियात्मक चेतना सकारात्मक बन गयी। सादगी के प्रतिरूप वह भारतीय युवक थे अभियंता भारतरत्न मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया। उनकी सादगी के प्रति जो आदर भाव व सम्मान प्रस्तुत हुआ, वह एक इतिहास बन गया।

स्वामी विवेकानन्द ने विदेश की धरती पर कहा था - A man is made by tailor in your country and a man is made by character in my country.

सादगी के रूप में मैंने आदरणीय मोहन भाई को देखा जिन्होंने अपने कौशल व व्यक्तित्व के तेजोमय प्रकाश से अणुव्रत विश्व भारती जैसा एक अलौकिक संस्थान खड़ा कर दिया जहाँ देश-विदेश के हजारों-हजारों बालक-बालिकाएं अपने सार्थक जीवन निर्माण की ओर कदम बढ़ा रहे हैं और भविष्य में भी बढ़ाते रहेंगे। ऐसे कई और भी उदाहरण हैं जिन्होंने 'सादा जीवन उच्च विचार, मानव जीवन का श्रृंगार' उक्ति को चरितार्थ किया है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि सादगी विपन्नता नहीं, सम्पन्नता का प्रेरणा स्रोत है, पौरुष व पुरुषार्थ की मशाल है जिसके पावन प्रकाश से जन-जन का मन संयम व सादगी से ज्योतिर्मय बन जाता है।

'अणुव्रत सेवी' लेखक अणुविभा और अणुव्रत शिक्षक संसद से जुड़े रहे हैं। राजस्थान में जिला शिक्षा अधिकारी पद से सेवानिवृत्ति के बाद मुंबई में रहते हुए सद् साहित्य लेखन में संलग्न हैं।

लघुकथा

पुराने कपड़े

रंजना जायसवाल - मिर्जापुर

निधि सिर पकड़ कर बैठी थी। सामने कपड़ों का ढेर लगा हुआ था। तभी पड़ोस में रहने वाली मिसेज कपाड़िया दही जमाने के लिए जोरन माँगने आ गयीं।

"क्या हुआ निधि, आज तो पूरा बाजार लगाकर बैठी हो?"

"नहीं-नहीं भाभी! हर साल का रोना है, पुराने कपड़ों का क्या करूँ? जाड़ा शुरू होने से पहले और गर्मी शुरू होने से पहले कपड़ों की छँटाई करने बैठो तो न जाने कितने ऐसे कपड़े निकल आते हैं जो न पहनते बनते हैं और न ही बाँटते।"

"सही कह रही हो, तुम्हारे बच्चे तो वैसे भी बढ़ती उम्र वाले हैं। एक बात कहूँ!"

"हाँ-हाँ, बताइए न !"

"मैं तो सारे कपड़े इकट्ठा करके पुराने बाजार चली जाती हूँ या उसे अपने घर बुला लेती हूँ। वह कपड़े के बदले में बर्तन दे देता है। तुम कहो तो मैं उसे फोन करके बुला लूँ या फिर तुम ही गाड़ी से कपड़े लेकर चली जाओ। यही ठीक रहेगा... तुम्हें बर्तन पसंद करने में भी सहूलियत होगी।"

मिसेज कपाड़िया की बात मानकर निधि ने कपड़ों की पोटली बनायी और गाड़ी में लादकर उन कपड़ों के बदले में बर्तन लेने चल पड़ी। बाजार कुछ खास दूर नहीं था। मोड़ पर बड़ी भीड़ लगी हुई थी, किसी का एक्सीडेंट तो नहीं हुआ? निधि सोच ही रही थी कि भीड़ धीरे-धीरे छँटने लगी। उस भीड़ से वापस आते हुए लोगों के चेहरे पर मुस्कुराहट थी। उनके हाथों में कुछ कपड़े थे। सड़क के किनारे किसी भले मानुस ने कपड़ा बैंक बना रखा था, लोग अपने घरों के पुराने कपड़े वहाँ रख जाते थे और जरूरतमंद अपनी जरूरत के हिसाब से उन्हें ले लेता था।

लौटते वक्त मिसेस कपाड़िया अपने गेट पर ही निधि को मिल गयीं।

"दे आयीं कपड़े... क्या लायीं उनके बदले में...?"

निधि के चेहरे पर एक रहस्यमयी मुस्कान थी। उसने कहा,"बहुत ही अनमोल चीज"

"क्या ?"

"संतुष्टि"

■ डॉ. कमलाकान्त शर्मा 'कमल' ■

मानव जीवन और आत्मानुशासन

समूचे विश्व में बहुत चिन्तन-मनन हो रहा है कि मनुष्य को स्वस्थ कैसे रखा जाये? क्या किया जाये जिससे नित नये पैदा होने वाले शारीरिक एवं मानसिक रोगों का आक्रमण मनुष्य पर न होने पाये? आत्मानुशासन की आवश्यकता और इसकी उपादेयता को समझना होगा तभी वैश्विक स्वास्थ्य की परिकल्पना चरितार्थ होगी।

आज समूचे विश्व में बहुत चिन्तन-मनन हो रहा है कि मनुष्य को स्वस्थ कैसे रखा जाये? क्या किया जाये जिससे नित नये पैदा होने वाले शारीरिक एवं मानसिक रोगों का आक्रमण मनुष्य पर न होने पाये? यहां विचारणीय यह भी है कि स्थूल शरीर की शुद्धता के लिए तो अनेक प्रयत्न होते दिखायी देते हैं किन्तु मन की स्वस्थता और शुचिता के लिए कुछ भी होता दिखायी नहीं देता। आज की जीवनशैली में मानव मन इतना कलुषित और मलिन हो गया है कि यदि समय रहते इस ओर ध्यान नहीं दिया गया तो सम्पूर्ण विश्व विनाश के भयानक मुहाने पर खड़ा दिखायी देगा।

आत्मानुशासन की आवश्यकता और इसकी उपादेयता को समझना होगा तभी वैश्विक स्वास्थ्य की परिकल्पना चरितार्थ होगी। पशुवत जीवन जी लेना तो कोई अर्थ नहीं रखता, किन्तु दुर्भाग्य से आज का अधिसंख्य मानव समुदाय 'खाओ, पीओ और मौज करो' जैसी कुत्सित मानसिकता में जीवन गुजार रहा है। मानव के मन का अहंकार उसको कई उचित तथ्य भी स्वीकार नहीं करने देता, जबकि आत्मानुशासन की आवश्यकता का आभास यहीं से होना चाहिए। आज के मानव का मन अपनी आलोचना स्वीकारना भी अपनी शान के विरुद्ध मानता है। आज का तथाकथित सभ्य, सुसंस्कृत और संस्कारित व्यक्ति, आलोचक को किसी भी रूप में सहन नहीं करता। जबकि 'निन्दक नियरे राखिये, आंगन कुटी छबाय' कहकर भारतीय दर्शन ने आत्मोद्धार प्रसंग के अन्तर्गत आलोचक की उपस्थिति को भी सकारात्मक मान्यता प्रदान की है।

इसी प्रकार उपदेशक के प्रति भी आज का आदमी विनम्र और सहज नहीं रहा है। स्वयं के समुचित व्यक्तित्व विकास के सन्दर्भ में भी वह किसी के सत्परामर्श तक को तब तक स्वीकार नहीं करता जब तक उसमें उसका स्वार्थ सिद्ध होता दिखायी नहीं देता। अपने दोष-दुर्गुणों पर उसका किंचित मात्र भी ध्यान नहीं जाता, किन्तु पर-दोष दर्शन में वह कोई कोर कसर नहीं छोड़ता। यह आचरण ही उसे सामाजिकता और मानवोचित मर्यादा से दूर ला खड़ा करने में प्रथम सीढ़ी का काम करता है।

आत्मवत्सर्व भूतानां हितायैव प्रवर्तनम्।
अहिंसैषा समाख्याता या चात्मज्ञानं सिद्धिदा।।

अर्थात- सभी प्राणियों/मनुष्यों में आत्मवत दृष्टि रखकर उनके हित के लिए प्रवृत्त रहने को अहिंसा कहा गया है। इस अहिंसा से आत्मज्ञान और आत्मानुशासन की सिद्धि प्राप्त होती है।

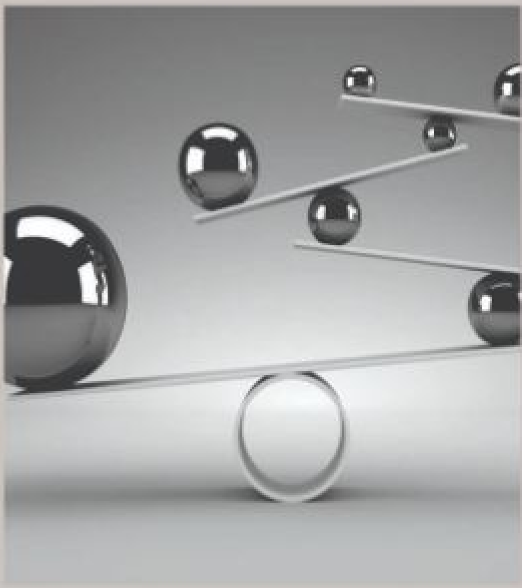

हम लोग प्रायः अपने आराम, अपनी अनुकूलता, अपनी सुरक्षा और निरर्थक प्रतिस्पर्द्धा के साथ जुड़ना पसन्द करते हैं। जितना अधिक हम बाहरी रूप से जुड़ते हैं, उतने ही हम अधिक अपने आपसे दूर होते जाते हैं। आत्मावलोकन पढ़ाता है आत्मानुशासन का पाठ और आत्मानुशासन व्यक्ति को उसका वास्तविक परिचय कराता है।

दरअसल, मानवीयता और पाशविकता में बुनियादी अंतर – इच्छाओं पर नियन्त्रण का ही है, जिसके प्रथम पृष्ठ से ही शुरू होती है समूचे मानव जीवन से सम्बद्ध सभ्यता, संस्कृति और संस्कार मूलक ऐतिहासिक महायात्रा। स्वामी विवेकानन्द का कथन है कि "ब्रह्माण्ड की समस्त शक्तियां मनुष्य में समाहित हैं। यह भी हम ही हैं कि जिन्होंने अपनी आँखों पर हाथ धर रखा है और रोते हुए कहते चले जा रहे हैं कि अन्धेरा बहुत है।" महात्मा कबीर इसी तथ्य को इस रूप में प्रकट करते हैं –

पढ़ना गुनना चातुरी, तीनों बात सहल्ल।
कामदमन, मनबस करन, गगन चढ़न मुश्किल।।

सम्पूर्ण सृष्टि में मानव ही वह प्राणी है जो जगत के निर्माता की सर्वश्रेष्ठ कृति है, इसीलिए कहा जाता है कि 'दुर्लभं मानुषो देहो' एवं 'बड़ा भाग मानुष तनु पावा।' उपनिषदों में तो 'न हि मनुष्यात् श्रेष्ठतर हि किंचित्' कहकर मानव की एवं प्रकारान्तर से मानव जीवन की विशिष्टता को विशेष रूप से रेखांकित किया है। उसमें (मानव में) अपने निर्माता की समस्त विशेषताएं बीज रूप में विद्यमान रहती हैं, आवश्यकता है अन्तःकरण में रचे-बसे दूषित विचारों को मन-मानस से हटा देने की, जो हमें अपने जीवन के केन्द्रीय प्रयोजन से कोसों दूर ला खड़ा करती हैं। आत्मानुशासन, आत्म चिन्तन और आत्मावलोकन – मनुष्य की इसी आभ्यन्तर मलिनता को धो-पोंछ कर साफ करते हैं।

वस्तुतः आज के व्यक्ति का एकाकी किन्तु स्वार्थपूर्ण चिन्तन, दर्शन, आचरण, क्रिया-कलाप और मानव जीवन की उपादेयता के प्रति उपजी उसकी घोर उपेक्षा ने समस्त मानव जाति को उस विराट ज्वालामुखी के मुँह पर ला खड़ा कर दिया है जहां किसी भी समय महाविनाशकारी लावा समूची सृष्टि और मानव समुदाय को राख में परिवर्तित करके रख देगा। ऐसी स्थिति में आत्मानुशासन का व्यापक और विपुल जलस्रोत ही मनुष्य के सुरक्षित रहने, बचने-बचाने में सहायक होगा।

मानव के मन का अहंकार उसको कई उपयोगी और लाभकारी तथ्यों को भी स्वीकार नहीं करने देता। वस्तुतः आत्मानुशासन की महनीय आवश्यकता यहीं से प्रारम्भ हो जाती है। प्रसंग पुनः मानव जीवन की प्रासंगिकता पर आ खड़ा होता है। मुझे अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य तुलसी का वह कथन स्मरण हो आता है, जहां वे मनुष्य को अपने मर्यादित जीवन हेतु आत्मानुशासन की प्रशस्ति का सन्देश देते हैं – "एक अंधे व्यक्ति के सामने हजार दीप जला दिये जाएं फिर भी वह कुछ देख नहीं सकेगा। व्यक्ति चक्षुष्मान होता है तो उसे रास्ता दिखाने के लिए एक दीप ही पर्याप्त है।"

बस यही तथ्य प्रत्येक उस व्यक्ति पर प्रभावी होता दिखायी देता है कि क्या मनुष्य अपने स्वास्थ्य के प्रति पूर्णतः सावधान रहता हुआ – मानव जीवन में आत्मानुशासन की अनिवार्य आवश्यकता और महत्ता को भी स्वीकार करने की इच्छा रखता है? यदि नहीं तो ऐसे व्यक्ति के लिए आत्मानुशासन और अपना स्वास्थ्य सम्यक् बनाये रखना दोनों ही निरर्थक है, और यदि हां तो निःसन्देह ऐसे व्यक्ति अपने समूचे जीवन में अथ से इति तक एक आदर्श बनकर पीढ़ियों तक अपनी उपादेयता सिद्ध कर जाते हैं। आज की समसामयिक परिस्थितियों में आत्मानुशासन मानव जीवन को सार्थकता और अर्थवत्ता का पालनीय धरातल प्रदान करता है।

व्यक्ति को अपने जीवन में न्यूनतम आवश्यकताओं की मनःस्थिति पर भी आना चाहिए। भौतिक सम्पदा को आवश्यकतानुसार जुटा लेना अनुचित नहीं है, किन्तु अनावश्यक रूप से अपनी निरर्थक आवश्यकताओं को बढ़ाते रहना, निःसन्देह अनुचित भी है और विचारणीय भी। आज का व्यक्ति एक ओर श्रमविहीन जीवन का आदी हो गया है, तो दूसरी ओर विवेकहीन दृष्टिकोण से भौतिक संसाधनों का दास भी हो गया है। यही कारण है कि आज के जनजीवन में व्यक्ति, वस्तुवादी दर्शन के इर्द-गिर्द सिमट गया है और मनमाने अन्धानुकरण के चलते तेजी से सिमटता भी जा रहा है।

प्रश्न जब स्वास्थ्य और आत्मानुशासन का हो तो हमें बिना किसी किन्तु-परन्तु के इस वास्तविकता को स्वीकार करना चाहिए कि हम वस्तुओं को जरूरत से ज्यादा महत्व देने लगे हैं। भविष्य में कभी उपयोग में न आने वाली वस्तुएं भी इकट्ठी करते चले जा रहे हैं। अपने स्वास्थ्य, अपने रिश्ते-नाते, अपनी मानवोचित गरिमा, अपने सिद्धान्तों और अपने विवेक सम्मत आत्म चिन्तन से दूर होना ही परोक्ष रूप से वस्तुवाद की ओर झुकाव का कारण बनता है। भगवान महावीर ने तो अपरिग्रह की स्मरणीय शिक्षा दी है हमें और संग्रह वृत्ति को पाप की श्रेणी में रखा है। फिर भारतीय दर्शन भी तो " साईं इतना दीजिए, जा में कुटुम समाय, मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय " जैसे सिद्धान्तों का पक्षधर रहा है।

अधिक के लिए निरन्तर इच्छा – एक ऐसी चीज है जिसे हम 'द मोर वायरस' कह सकते हैं। हम लोग प्रायः अपने आराम, अपनी अनुकूलता, अपनी सुरक्षा और निरर्थक प्रतिस्पर्द्धा के साथ जुड़ना पसन्द करते हैं। जितना अधिक हम बाहरी रूप से जुड़ते हैं, उतने ही हम अधिक अपने आपसे दूर होते जाते हैं। आत्मावलोकन पढ़ाता है आत्मानुशासन का पाठ और आत्मानुशासन व्यक्ति को उसका वास्तविक परिचय कराता है।

मनुष्य कोई स्थावर वृक्ष नहीं है। वह एक चेतना सम्पन्न जंगम प्राणी है, इसलिए चलना (चरैवेति चरैवेति) मनुष्य का धर्म है। जिसने इस धर्म का परित्याग कर दिया, वह मनुष्य कहलाने का अधिकारी नहीं हो सकता। किन्तु प्रश्न यह उठता है कि चलना किस पथ पर है? इसीलिए आज का विद्वज्जन समुदाय, मानव जीवन की दुर्लभता के स्थान पर मानव जीवन की महत्ता और तदनुसार जीवन यापन की आवश्यकता पर ज्यादा ध्यान देता है। सच्चे अर्थों में मानव बनकर मर्यादित रूप से जीवन जी लेना, सचमुच आज के मानवजीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि मानी जाती है।

यहां धर्म से अर्थ – दिखावा अथवा आडम्बर युक्त जीवन जीने में नहीं समझना चाहिए, अपितु मानवोचित जीवनादर्शों को आचरण तथा व्यवहार में अपनाते हुए तथा आत्मानुशासन की प्रशस्त वैचारिक प्रभा में शान्ति, स्नेह, सहयोग, सद्भाव और सहिष्णुता के साथ जीओ और जीने दो (वसुधैव कुटुम्बकम्) जैसी उदात्त मनःस्थिति के आधार पर मानव जीवन को जीने के अर्थ में समझना चाहिए, तब आपका और हमारा वैयक्तिक और सामाजिक स्वास्थ्य भी सम्यक् रहेगा। परिणामतः हमारा राष्ट्र भी पुनः अपने वैशिष्ट्य के सिंहासन पर बैठा दिखायी देगा।

भीलवाड़ा निवासी लेखक पिछले चार दशक से आयुर्वेदिक चिकित्सा सेवा के साथ ही साहित्य-सृजन में संलग्न हैं। राजस्थान आयुर्वेद सेवा में उपनिदेशक पद से सेवानिवृत्त होने के बाद भी यह क्रम जारी है।

गीत

पर्यावरण

अमृत बुरड़ - जसोल

धरा गगन हो रहे प्रदूषित,
दम घुटता है धरती का!
पानी में केमिकल ज्यादा ,
तन जलता है धरती का!

पेड़ों की दयनीय दशा पर,
हमको रोना आता है!
कैसे बयां करूँ यह हालत ,
खुद पर गुस्सा आता है!

कटते जंगल बनते बंगले,
गाँव उजड़ते हैं हर दिन!
जहरीली यह हवा हो गयी,
उद्योग पनपते हैं प्रतिदिन !

शरद ऋतु में वर्षा होती,
वर्षा में हैं सूखे खेत!
गर्मी का तो हाल कहें क्या ,
पड़ा हो जैसे पीछे प्रेत!

फिर भी न संकेत समझते ,
आज प्रकृति रूठी है!
पर्यावरण बचाने की अब
बात हो रही झूठी है!

पेड़ हमारा जीवन है,
तुम इन पेड़ों से प्यार करो!
करो सदा ही रक्षा इनकी,
मत अब अत्याचार करो!

काट काट वृक्षों की काया,
लगा रहे हो ढेर बहुत !
अमृतलाल कहे दुनिया से,
हो जाएगी देर बहुत!

ताराचंद मकसाने

नयी जिंदगी

''मेरी पत्नी सुनीता का निधन पाँच वर्ष पहले हो गया था। मेरे दो बेटे हैं। बड़ा बेटा यूएस में अपनी पत्नी के साथ रहता है, मैं छोटे बेटे के पास रहता हूँ। बेटा और बहू एक मल्टीनेशनल कंपनी में नौकरी करते हैं। वे सुबह आठ बजे ही घर से निकल जाते हैं और रात में देर से लौटते हैं। मेरा एक पोता भी है। स्कूल से आने के बाद होमवर्क करने बैठ जाता है, फिर ट्यूशन चला जाता है। बाकी समय में मोबाइल और टीवी से चिपका रहता है।'' यह कहते हुए वे फिर गंभीर हो गये।

मैं वात्सल्य ट्रस्ट के आगंतुक कक्ष में मोहन कुमार का इंतजार कर रहा था। कुछ ही देर में वे आ गये। मुझे देखते ही उन्होंने लगभग मुझे खींचते हुए गले से लगा लिया। उनकी आँखों से आँसू टपकने लगे। उनके बदले रूप को देखकर मुझे यकीन ही नहीं हो रहा था कि क्या ये वही मोहन कुमार हैं।

मोहन कुमार से मेरी मुलाकात गणेश मंदिर में एक दिन अचानक हुई थी। वे मंदिर के प्रांगण में रखी एक बेंच पर बैठे अखबार पढ़ रहे थे। पहले तो मैंने उन्हें पहचाना नहीं क्योंकि उनका हुलिया बड़ा ही अजीब लग रहा था। पीला चेहरा, बढ़ी हुई सफेद दाढ़ी, बिखरे-रूखे-लंबे मटमैले बाल, आँखों पर लटकता पुरानी फैशन का चश्मा, मैला कुर्ता-पायजामा। मैंने अपने दिमाग पर थोड़ा जोर डाला तो याद आया कि यह शख्स मोहन कुमार ही है। वे कभी मेरे सीनियर अधिकारी हुआ करते थे, मैं उनके अधीन काम करता था। मोहन कुमार बैंक से करीब तीन साल पहले ही बतौर ब्रांच मैनेजर सेवानिवृत्त हुए थे।

मेरे स्मृति पटल पर मोहन कुमार की कार्यालयीन छवि किसी फिल्म के दृश्यों की तरह अंकित होने लगी...। सूट-बूट और टाई में सजा उनका आकर्षक व्यक्तित्व, करीने से सजे बाल, आँखों पर थ्री पीस के महंगे फ्रेम में जड़े इम्पोर्टेड ग्लासेस, क्लीन शेव, ओजस्वी चेहरा और अधरों पर बरकरार रहने वाली मधुर मुस्कान उनकी शख्सियत में चार चाँद लगाती थी। बैंक का हर कर्मचारी उनके लुभावने एवं शालीन व्यक्तित्व का कायल था। मैंने उन्हें बैंक में कभी बगैर सूट-बूट-टाई नहीं देखा था। जब वे अपनी केबिन से बाहर निकलते थे तो ऑफिस के एक कोने से दूसरे कोने तक उनके जूतों की चरमर-चरमर की आवाज से हम जान जाते थे कि कुमार साहब आ रहे हैं।

मोहन कुमार अखबार पढ़ने में मशगूल थे। मैं उनके करीब पहुँचा और डरते हुए बोला –

"सर, क्या आप मोहन कुमार हैं?"

"हाँ, मैं मोहन कुमार ही हूँ।"

"सर, आपने मुझे पहचाना... मैं गौरव शर्मा... आपके ही बैंक में था।"

मैंने एक ही सांस में किंचित उत्साहित होते हुए कहा।

उन्होंने नाक पर लुढ़क आये साधारण चश्मे को मध्यमा अंगुली से आँखों के करीब खिसकाते हुए मुझे घूरकर देखा तो उनके पीले चेहरे पर मुस्कुराहट की एक लकीर उभर आयी। फिर धीरे से मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए बोले –

"यस, यस...याद आया, यू आर मिस्टर गौरव..हाऊ आर यू?

" सर, मैं तो ठीक हूँ, पर आप ठीक नहीं लग रहे हैं।"

"अरे भई, मैं ठीक ही हूँ। अब मेरी उमर भी तो हो गयी है।" उन्होंने अखबार समेटते हुए मुझसे पूछा - "क्यों गौरव, तुम्हारा प्रमोशन हुआ या नहीं?"

" जी सर, आपके रिटायर होने के चार महीने बाद ही मेरा प्रमोशन हो गया। सर, अब मैं असिस्टेन्ट मैनेजर बन गया हूँ।" मैंने उत्साहित होकर कहा।

"वाह, कांग्रेच्युलेशन्स।" उन्होंने मेरी पीठ थपथपाते हुए कहा।

"सर, इस प्रमोशन का श्रेय आपको जाता है। मैंने अंग्रेजी ड्राफ्टिंग तो आप ही से सीखी है। जब आप केबिन में बुला-बुलाकर मुझे मेरी गलतियां दिखाते थे, तब मुझे थोड़ा गुस्सा आता था, पर उन गलतियों से मैंने बहुत सीखा।"

"गौरव, मैं इंग्लिश लिटरेचर में एम.ए. हूँ।" मोहन कुमार ने सीना फुलाते हुए कहा।

"सर, आपके साथ रहने से मुझे बहुत फायदा हुआ था। बैंक की विभागीय परीक्षा की तैयारी में आपने मेरा बहुत मार्गदर्शन किया था, जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता।" मैंने हकीकत बयां की तो उनकी आँखें नम हो गयीं।

वे मेरे गले में हाथ डालते हुए रूंधे कंठ से बोले –

"गौरव, शायद तुम्हें मालूम होगा, हिंदी में एक कहावत है कि घर की मुर्गी दाल बराबर... यह कहावत इन दिनों मुझ पर चरितार्थ हो रही है। मेरा पोता अपनी स्कूल टीचर के पास इंग्लिश की ट्यूशन के लिए जाता है। मेरे पास कौन आएगा, मुझसे बात करने के लिए भी घर में किसी के पास टाइम नहीं है...आई एम अन्वान्टेड ओल्ड मैन...।"

कहते हुए उन्होंने पलकें झपकायीं तो उनकी आँखों में आँसू उतर आये।

मैंने विषय बदलते हुए कहा, "सर, संसार में मनुष्य की अवस्था बदलती रहती है। हमें अपनी बदलती अवस्था के अनुरूप खुद को ढालना सीखना चाहिए। हताश होने से काम नहीं चलेगा, पर सर...आपने ये क्या हुलिया बना लिया है? कहीं आप बीमार तो नहीं हैं?"

"नहीं गौरव, मैं बीमार नहीं हूँ, पर अब रिटायर हो गया हूँ तो आलसी और निरुत्साही हो गया हूँ। फिर मेरे पास अब कोई काम भी तो नहीं है।" उन्होंने दो टूक उत्तर दिया।

"सर, ऑफिस नहीं जाना है तो क्या हुआ, पर इस हुलिए से तो आप बीमार लगते हैं। मुझे अच्छी तरह याद है आप बैंक में हमसे अक्सर कहा करते थे कि हमारा पहनावा स्वच्छ, सुंदर और शालीन होना चाहिए। बैंक में मैंने आपको कभी अस्त-व्यस्त रहते नहीं देखा था। सर, सलीके से रहना भी तो मैंने आप ही से सीखा है।" मैंने उन्हें अतीत में ले जाते हुए कहा।

"यू आर राइट मिस्टर गौरव...पर अब मेरा जोश और उत्साह ठंडा पड़ गया है" निरुत्साहित होते हुए बोले।

"सर, आपकी रिटायरमेंट लाइफ कैसे गुजर रही है? आप दिन भर क्या करते हैं?" मैंने उन्हें कुरेदने की कोशिश की।

"गौरव...सच कहूँ तो मैं रिटायरमेंट के बाद बहुत अकेला हो गया हूँ। समय काटना मुश्किल हो गया है। मैं मॉर्निंग वॉक करता हूँ, अखबार पढ़ता हूँ, दोपहर में सो जाता हूँ। शाम को फिर टहलने जाता हूँ। सुबह-शाम इसी मंदिर में आकर कुछ देर के लिए बैठ जाता हूँ। मुझे पढ़ने का शौक है तो मैं अंग्रेजी साहित्य पढ़ता रहता हूँ।" उन्होंने अपनी संक्षिप्त दिनचर्या बतायी।

"सर, आपके परिवार में कौन-कौन हैं?" मैंने अपनी जिज्ञासा व्यक्त की।

"गौरव, यह तो तुम्हें मालूम ही है कि मेरी पत्नी सुनीता का निधन पाँच वर्ष पहले हो गया था। मेरे दो बेटे हैं। बड़ा बेटा यूएस में अपनी पत्नी के साथ रहता है, मैं अपने छोटे बेटे के पास रहता हूँ। बेटा और बहू एक मल्टीनेशनल कंपनी में नौकरी करते हैं। वे सुबह आठ बजे ही घर से निकल जाते हैं और रात में देर से लौटते हैं। दोनों बहुत व्यस्त रहते हैं। मुझसे बात करने का भी वक्त उन्हें मुश्किल से मिलता है।" अल्पविराम के बाद उन्होंने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "मेरा एक पोता भी है। वह भी बहुत व्यस्त रहता है। स्कूल से आने के बाद होमवर्क करने बैठ जाता है, फिर ट्यूशन के लिए चला जाता है। बाकी समय में वह मोबाइल और टीवी से चिपका रहता है। सप्ताह में कभी-कभार एकाध बार अपने बेटे-बहू या पोते से बातचीत हो जाती है।

गौरव, आज के बच्चों के पास अपने दादा-दादी के साथ खेलने या उनसे बतियाने की फुरसत कहां है?" यह कहते हुए वे फिर गंभीर हो गये।

मैंने उनके मूड को बदलने की कोशिश करते हुए कहा – "सर, यह तो घर-घर की कहानी है... आप इस बारे में ज्यादा नहीं सोचें... सर, मुझे याद है आपने एक बार कहा था कि दुनिया में उत्साह से बढ़कर कोई बल नहीं है और यह उत्साह मैंने आपमें लंबे समय तक देखा है। फिर अब यह अचानक कहां गायब हो गया...?" "गौरव, जब काम नहीं रहा तो उत्साह भी नहीं रहा। दिन भर घर पर बैठे-बैठे बोर हो जाता हूँ।"

"सर, आप बुरा न मानें तो एक निवेदन करूँ?"

"श्योर, श्योर, बोलो, क्या कहना चाहते हो?"

"सर, हमारे इलाके में वात्सल्य ट्रस्ट नामक बालिकाओं का एक आश्रम है जो आपके घर से 10-15 मिनट की दूरी पर ही है। इस अनाथाश्रम में कुल 30 अनाथ लड़कियां रहती हैं जिनके पालन-पोषण तथा शिक्षा की जिम्मेदारी ट्रस्ट की है। ये लड़कियां सरस्वती विद्या मंदिर में पढ़ने के लिए जाती हैं। सर, मैं प्रत्येक शनिवार तथा रविवार को इन लड़कियों को हिंदी पढ़ाने के लिए जाता हूँ। मेरा एक मित्र इन्हें गणित पढ़ाता है, पर अंग्रेजी पढ़ाने वाला हमें नहीं मिल रहा है। यहां की लड़कियाँ अंग्रेजी में काफी कमजोर हैं। सर, यह निःशुल्क सेवा है। यदि आप इन लड़कियों को अंग्रेजी पढ़ा सकें तो ये अंग्रेजी विषय में भी अच्छे अंक ला सकेंगी।"

मोहन कुमार मुझे ध्यान से सुन रहे थे। कुछ समय तक वे आँखे मूँदकर विचार करने लगे। फिर एकाएक उत्साहित होते हुए बोले-

"यस... गौरव... आई एम रेडी... मुझे बच्चों को पढ़ाना अच्छा लगता है। मैं यह भी मानता हूँ कि दुनिया में विद्यादान ही सर्वश्रेष्ठ दान है।"

"सर, बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं अभी ट्रस्ट के सचिव रमाकांत से बात करता हूँ।"

मैंने खुश होते हुए कहा और उनके सामने ही रमाकांत से बात कर ली। फिर मोहन कुमार की ओर मुखातिब होते हुए कहा, "सर, आप कल (सोमवार को) सुबह 10 बजे वात्सल्य ट्रस्ट पहुँच

जाइएगा। ट्रस्ट के सचिव रमाकांत से आपकी मुलाकात हो जाएगी। वे आपको बच्चियों को पढ़ाने का टाइम टेबल बता देंगे।"

मैंने उनसे विदा ली। मोहन कुमार भी उत्साहित होकर अपने घर की ओर रवाना हो गये।

एक सप्ताह बाद मैं रविवार सुबह करीब 11 बजे वात्सल्य ट्रस्ट पहुँचा। रमाकांत से मुलाकात हुई तो पता चला कि मोहन कुमार के आ जाने से सभी लड़कियाँ बहुत खुश हैं। उन्हें न केवल अंग्रेजी के एक अच्छे अध्यापक मिल गये हैं, अपितु कहानियां सुनाने और उनके साथ हँसने-खेलने वाले दादाजी भी मिल गये हैं। छोटी लड़कियाँ तो फूल पर तितलियों की तरह उनके आस-पास मंडराती रहती हैं।

"इस समय मोहन कुमार क्या कर रहे हैं?" मैंने उत्साहित होते हुए पूछा। "वे कक्षा चौथी की एक्स्ट्रा क्लास ले रहे हैं क्योंकि अगले रविवार को उनकी स्कॉलरशिप की परीक्षा है।" रमाकांत ने कहा।

"यह क्लास कब तक छूट जाएगी?" उनसे मिलने के लिए उतावला होते हुए मैंने पूछा। "बस, दस मिनट में छूट जाएगी।" रमाकांत ने घड़ी देखते हुए कहा।

मैंने मोहन कुमार को अपने से अलग किया, मेरे सामने सूट-बूट और टाई में सजी वही शख्सियत प्रकट हो रही थी जो कभी बैंक में अवतरित हुआ करती थी। मोहन कुमार चश्मा उतारकर मेरे पास बैठ गये।

वे रुंधे कण्ठ से बोले -

"गौरव, तुमने मुझे एक नयी जिंदगी दी है...तुम्हारी बदौलत ही मेरे जीवन में नये उत्साह का उदय हुआ है। थैंक्यू वेरी मच...मैं एकाकी जिंदगी से तंग आ चुका था, अगर तुम मुझे नहीं मिलते तो न जाने क्या होता...।" कहते हुए वे फफक कर रो पड़े।

थोड़ी ही देर में रमाकांत वहां पहुँच गये, उनके पीछे-पीछे छोटी-बड़ी लड़कियाँ भी वहां पहुँच गयीं। सबने मोहन कुमार को घेर लिया। जिनकी कल परीक्षाएं थीं, वे बालिकाएं उनके चरण स्पर्श कर रही थीं। मोहन कुमार बहुत ही प्यार से उनके माथे को चूम रहे थे। बालिकाओं की आँखों से भी आँसुओं की धारा धीरे-धीरे बहने लगी...मोहन कुमार आगे बढ़कर उनके सिर पर हाथ फेर कर आशीर्वाद देने लगे। वे कुछ बोलना चाह रहे थे, मगर शब्द उनके अधरों पर आकर थम गये थे...। उनकी आँखों से खुशियों के आँसू एकाएक छलक पड़े जिन्हें वे अपने रूमाल में छिपाने की असफल कोशिश करते हुए वात्सल्य ट्रस्ट की सीढ़ियां उतरने लगे। बालिकाएँ मोहन कुमार को तब तक देखती रहीं जब तक वे उनकी नन्ही-नन्ही चमकती आँखों से ओझल नहीं हो गये।

नवी मुंबई निवासी लेखक भारतीय रिज़र्व बैंक से सेवानिवृत्ति के बाद साहित्य सृजन में संलग्न हैं। इनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

लघु कथा

उपलब्धि

समीर उपाध्याय - चोटीला (सुरेन्द्रनगर)

पराग और परम कॉलेज में साथ पढ़ते थे। दोनों आज करीब बीस साल बाद मिले हैं। पराग ने परम से कहा, "यार, तुम वहीं के वहीं रहे। इतने साल तक प्राथमिक शिक्षक की नौकरी में एक छोटे-से मकान के सिवाय तुम्हें क्या हासिल हुआ? मैं सीधे ही सरकारी कॉलेज में प्राध्यापक के रूप में नियुक्त हुआ। तुम्हारी तनख्वाह शायद पचास हजार होगी और मेरी डेढ़ लाख। मेरे पास गाड़ी-बंगला सब कुछ है और तुम...?"

परम ने कहा, "यार, इन सब बातों को छोड़। पहले यह बता कि घर-गृहस्थी कैसी चल रही है?"

पराग ने जवाब दिया, "मेरा तो शादी के एक साल बाद ही तलाक हो गया। वो भी कॉलेज में प्राध्यापिका थी। उसे अपने ओहदे का गुमान था। दोनों का अहं टकराता था। उसने एक शर्त रखी थी कि या वो घर में रहेगी या मेरी माँ। मैं बूढ़ी माँ को कैसे छोड़ सकता था? इसलिए मैंने उसे छोड़ने का फैसला किया।"

परम ने पूछा, "अब बंगले में तुम्हारे साथ माँ रहती है?"

पराग ने जवाब दिया, "दो-तीन साल तक माँ ने रसोई आदि का काम संभाला, लेकिन उन्हें गहरा सदमा पहुँचा था। उन्हें हार्ट अटैक आ गया और वो चल बसीं।"

परम ने पूछा, "रहने के लिए बंगला तो है, लेकिन खाते-पीते कहां हो? क्या कोई खाने बनाने वाली बाई रखी है?"

पराग ने जवाब दिया, "नहीं, पास में बड़े भैया का घर है। दोनों वक्त का खाना वहीं से आ जाता है। बाकी बंगले की सफाई के लिए एक नौकर रखा है।"

परम ने कहा, "जब भी घर से बाहर निकालता हूँ, माँ की दुआएं कवच बनकर मेरी रक्षा करती हैं। मुझ पर माँ की छत्रछाया है। जब भी घर आता हूँ, प्रसन्नवदना पत्नी हाथ में पानी का गिलास लेकर आती है और फिर गरमागरम चाय पिलाती है, तब दिनभर की थकान दूर हो जाती है। यार, एक बात तुम्हें माननी पड़ेगी। भले ही मेरा ओहदा छोटा है। मुझे परिवार का जो सुख मिला है, वो तुम्हारे सुख से बढ़कर है। यही मेरी सबसे बड़ी उपलब्धि है।"

परम की बात सुनकर पराग अवाक् रह गया।

S. RADHAKRISHNAN

Anuvrat Movement
Quintessence of Indian Cultural Heritage

Acharya Shri Tulsi's impact on the Indian community is due to the Anuvrat Movement which he has started. There is a general feeling in the country that while we are attending to the material progress and doing substantial work in that direction, we are neglecting the human side of true progress. A civilized human being ought to be free from greed, vanity, passion, anger. Civilizations decline if there is a coarsening of moral fibre, if there is callousness of heart.

Acharya Shri Tulsi has been the head of the order of Terapanthis for twenty five years. It has a large number of monks and lakhs of laymen. The great respect which they all have for Acharya Tulsi Ji is a sign of his outstanding personality.

Acharya Shri Tulsi's impact on the Indian community is due to the Anuvrat Movement which he has started. There is a general feeling in the country that while we are attending to the material progress and doing substantial work in that direction, we are neglecting the human side of true progress. A civilized human being ought to be free from greed, vanity, passion, anger. Civilizations decline if there is a coarsening of moral fibre, if there is callousness of heart. Man is tending to becoming a robot, a mechanical instrument caring for nothing except his material welfare, incapable of exercising his intelligence and obligation. He seems to prefer comfort to liberty.

Politicians are resorting to direct action to enforce their particular viewpoint or to fulfil their ambitions. This is unfortunate. To remedy this growing indiscipline, lack of rectitude, egotism, the Anuvrat Movement was started on March 1, 1949. It requires strict adherence to the principles of good life. It is intended to impart education in moral and spiritual values.

We cannot say that, as a result of this movement, things have improved very considerably. Public spirit, commercial integrity, individual rectitude, family life, peaceful behaviour, these require to be cultivated. These cannot be achieved by merely talking about them. The only way in which this can be brought about is by imparting to our young people the essentials of our culture. These may be summarized in the three great words abhaya, ahimsa, asanga which are the common possessions of all systems of religious thought.

Abhaya- The world in which we live is full of suffering 'lokam soka hatam ca samastant

Acharya Shri Tulsi

A true democracy has for its aim the making of moral personalities. Political power in a democracy is attained by appeals to people through the press and the platform. Moral power, on the other hand, resides in a moral personality and in the latter's compelling characteristic.

disease', old age, death - the Upanishads raise this question and ask whether there is a way out of it. The Buddha speaks in a similar way, so does Christianity. The Gita affirms - anityam asukham lokam - and argues that we can get rid of these troubles by the worship of the Divine. Thus we get the Ultimate Reality. Brahma-jijnasa is the love of wisdom. The only way of getting rid of fear is by the conviction that there is something which redeems us from this world of time, something timeless. The Upanishads say: anandam brahmano vidvan na bibheti kadachana. The writer of the Gita says: ma sucah - be not afraid. The Buddha says that if we follow the ethical path, there will be an end of suffering.

Simply because we are afraid, it does not follow that there is something which removes our fear. Simply because we are hungry, it does not follow that there is food which will satisfy our hunger. The assumption of a Transcendent Reality may merely be a wish-fulfilment. So it is argued that we should take an empirical survey of the world and by means of reason establish the Reality of something timeless and transcendent. Brahman is the world-ground.

A mere wish or a logical conclusion is not enough. We must have an encounter, a personal experience of the Supreme. Faith is not belief, but a state of the soul. All the systems believe in this. The Bodhi of the Buddha, the Kevala Jnana, the Samyag-darsana of the Jain, the integrated insight, the Brahmasamsparsa of the Gita, Truth which casts out fear, of the Christians-all these depend on personal realization.

The peculiarity of Indian systems of thought is that this insight into Reality means the discovery of the Divine in us. The Chandogya Upanishad says that truth by which this whole world is sustained is in the human being- etad atmayam idam sarvam tat satyam sa atma tat twam ast. Again-esa devo viswakarma matatma sadajananam hrdaye sannivistah-deho devalayo nama. The Budhha's meditations are an endeavour to know the highest. The Jains believe that behind the body of karm there is in each soul infinite knowledge, infinite power, infinite happiness. The jiva is by its very nature pure. Ultimate knowledge is its inherent possession. It is overlaid by ignorance created by the karmic body. When dwelling within the bonds of karm, the jiva experiences only finite knowledge, but as the impediments to greater knowledge are removed, infinite knowledge is manifested and the true nature of the soul is revealed. The impediments are desires and passions.

The perfected soul is sidha paramesthin. It is a state of unconditioned being, passionless peace, dissociated from desire

and action. The arhat has not reached ultimate liberation but works in the world with compassion for it. Then we have ordinary human teachers.

From this follows a kind of hospitality to all religious creeds. "Ajopi sann avyayatma bhutanam isvar opi san prakrtim svam adhisthaya sambhavamy atmamayaya." Though (I am) unborn, my self is imperishable, though I am the Lord of all creation yet establishing myself in my own nature. I come into (empiric) being through my power.

Syadvada affirms that the absolute of experience is not the absolute of language or of logic. We should not quarrel about the names we give to the Supreme or the ways by which we greet Him. On the wings of aspiration, man rises from earth to heaven, from ignorance to knowledge, from darkness to light. Without this aspiration man remains purely animal, earthly sensual, unenlightened and uninspired.

Ahimsa- If we believe that each individual has the Divine in him, it follows that our attitude towards others should be one of non injury. Ahimsa is vaira tyaga - renunciation of hatred. There is no question that all those who are free from fear, who have attained abhaya will act in the world in a spirit of love and compassion - karuna. Love is the basis of all civilized living. All our unhappiness is traceable to our insatiable selfishness. Suffering is the result of craving, of greed. Our life will be suffering and our end full of sorrow, until we overcome our selfishness.

Marana is not extinction. It is the extinction of carving which makes life mean and pitiful. It is the serenity of soul. The Buddha says. "To those in need, give without restraint." Tyaga or renunciation is the way to do it. Not by giving up vain clothing or outward riches, not by abstaining from certain foods, but by giving up the spirit of vanity, the desire for wealth, the lust for self-indulgence, by giving up hatred, jealousy and selfishness do we attain purity of heart. The man of passion is eager to put others right, the man of wisdom puts himself right. Self-conquest means self liberation. The Tri-ratna of the Jains is right faith, right knowledge and right conduct. The panchsheel of the Jains is ahimsa, satya, asteya, brahmacharya, aparigraha, and of the Buddhists is practically the same, ahimsa, satyavacana, brahmacarya, aparigraha and surapana-nisedha.

Asanga- While we work in this world, we do so free from any attachment to the results of action - yogasthah kuru karmani sangam tyaktva dhananjaya. Again, gata sangasya muktasya. Muktah is free from Sanga. We are unattached but not uninterested.

If we are able to spread these essentials of spiritual life, freedom from fear, love and non-attachment, we will improve the character of human beings. Anuvrat Sangh which Acharya Tulsi ji has established, and is working for, aims at this moral improvement of the individual and, therefore, of society.

A true democracy has for its aim the making of moral personalities. Political power in a democracy is attained by appeals to people through the press and the platform. Moral power, on the other hand, resides in a moral personality and in the latter's compelling characteristic. There is always this difference between the King and the Prophet, Rama and Vasistha, the political and the spiritual power. The desire for power is 'the perpetual and restless desire of power that ceaseth only in death' in the words of Hobbes. Its end is enslavement. Spiritual leaders speak of the soul and the health of the soul; they utter words that provoke, stimulate, awaken: they are not objects of knowledge but stimulants to thought. ungraspable but always beckoning us. These we should hold before us in all our activities.

(This article was written by DR. S. Radhakrishnan, former president of India in early sixties.)

अतीत के झरोखे से...

इस स्तम्भ में 'अणुव्रत' पत्रिका के अर्द्धशती पूर्व के अंकों से चयनित सामग्री पुनर्प्रकाशित की जा रही है ताकि अणुव्रत आंदोलन के स्वर्णिम इतिहास को हम वर्तमान से जोड़कर भविष्य की दिशा तलाश सकें। इस अंक में प्रकाशित चार पृष्ठ की यह सामग्री 'अणुव्रत' पाक्षिक के ***अक्टूबर 1970*** *के अंक से ली गयी है।*

अहिंसा : एक तीर्थयात्रा

डॉ. मार्टिन लूथर किंग

हालाँकि मेरी शिक्षा का क्षेत्र धर्मशास्त्र एवं दर्शनशास्त्र रहा है, फिर भी युवावस्था से ही मैं सामाजिक नीति शास्त्र की ओर आकृष्ट हुआ था। जातीय अन्याय की समस्या ने भी मुझे आरम्भ से ही चिंतित किया था। वर्णभेद के कारण मनुष्य को मनुष्य से अलग करने को मैंने हमेशा ही अनैतिक तथा न्यायविरुद्ध माना है। बस के पिछवाड़े अथवा ट्रेन के अलग डिब्बों में बैठना मुझे हमेशा ही अपमानास्पद लगता था। ट्रेन के भोजनालय में पर्दे के पीछे बैठकर जब मैंने भोजन किया तब मुझे लगा मानो मेरे व्यक्तित्व पर ही पर्दा गिरा हो।

मुझे यह समझते देर न लगी कि वर्णभेद तथा आर्थिक विषमता एक दूसरे के प्रतिरूप हैं क्योंकि जिस वर्ण-भेद के कारण नीग्रो लोगों का शोषण हो रहा था, उसी तरह गरीब लोगों का भी शोषण हो रहा था। इन अनुभवों ने मुझे कई प्रकार के सामाजिक अन्यायों के प्रति सजग किया। किन्तु धर्मशिक्षा प्रशिक्षणालय में प्रविष्ट होने के बाद ही मैंने इन सामाजिक अन्यायों के उन्मूलन पर बौद्धिक दृष्टि से विचार करना आरम्भ किया।

1950 के लगभग मैंने वाल्टर रावशनबुश की 'क्रिश्चियानिटी एण्ड दि सोशियल क्रायसिस' नाम की पुस्तक पढ़ी। इस पुस्तक ने मेरे चिन्तन पर एक अमिट छाप डाली। निःसंदेह ही मैं लेखक से पूर्णतया सहमत नहीं था क्योंकि लेखक 10वीं शताब्दी के 'अनिवार्य प्रगतिवाद' के शिकार थे। साथ ही वे मनुष्य स्वभाव के बारे में भी आशावादी प्रतीत होते थे। उन्होंने एक विशेष सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था को ही 'ईश्वर का साम्राज्य' की उपाधि दी। इस प्रकार की धृष्टता कभी भी चर्च को करनी नहीं चाहिए।

वही धर्मोपदेश सच्चा है जो मनुष्य के सम्पूर्ण विकास के लिए होता है। केवल आध्यात्मिक ही नहीं किन्तु मनुष्य का भौतिक विकास भी उसी से होना चाहिए। यदि मनुष्य परिस्थितियों से विवश हो आजीवन गंदी बस्तियों में रहने को अभिशप्त है, उसकी आर्थिक परिस्थिति उसका गला घोंटती है और सामाजिक परिस्थितियां उसे अपाहिज बना देती हैं तो इसकी ओर ध्यान देना धर्म का पहला काम है। जो धर्म मनुष्य की आत्मा के उद्धार तक ही सीमित रहता है, वह मृतप्राय है।

इसके अलावा मैंने कई दार्शनिकों की रचनाएं पढ़ ली थीं। इस अरसे के बीच मुझे सामाजिक समस्याओं का हल निकालने में प्रेम की शक्ति की उपयोगिता में निराशा-सी होने लगी थी। मैंने सोचा था कि बाइबिल का वह उपदेश कि 'यदि कोई तुम्हारे गाल पर तमाचा मारता है तो दूसरा गाल भी उसके आगे कर दो' अथवा 'अपने शत्रु को प्यार करो' केवल वैयक्तिक कलहों में ही कारगर हो सकते हैं। जहाँ पूरी जाति अथवा राष्ट्रों के बीच मतभेद हो जाये तो कोई अधिक व्यावहारिक रास्ता निकालना होगा।

तब मैंने गांधी जी की जीवनी पढ़ी। जैसे-जैसे मैं पढ़ता गया, वैसे-वैसे मैं उनके अहिंसात्मक आन्दोलन से प्रभावित होता गया। उनका सत्याग्रह मेरे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। जितना ही मैंने गांधीजी के दर्शन का अध्ययन किया, उतना मेरा प्रेम की शक्ति पर जो अविश्वास था, वह दूर हो गया। प्रथम बार ही मैंने यह अनुभव किया कि ईसा मसीह के प्रेम के संदेश को गांधीजी ने अहिंसा के रूप में एक ऐसे अस्त्र का रूप दिया है जिससे कोई भी पददलित जाति अपनी स्वतंत्रता का आन्दोलन कर सकती है। किन्तु मेरा यह ज्ञान अब तक बौद्धिक स्तर पर ही था। उसे किसी सामाजिक परिस्थिति में आजमाने का अवसर मुझे मिला न था।

जब 1954 में मैं माण्टगुमरी का पादरी बनकर आया, तब मेरे मन में वह शंका भी न थी कि मेरे सामने एक ऐसी समस्या आएगी जिसमें मुझे अहिंसात्मक प्रतिकार का प्रयोग करना पड़ेगा। साल भर वहाँ रहने के बाद यह बस बहिष्कार आन्दोलन शुरू हुआ। माण्टगुमरी की नीग्रो जनता अपमानजनक व्यवहार से तंग आ चुकी थी। इससे छुटकारा पाने के लिए उन्होंने यह असहयोग आन्दोलन छेड़ दिया। ऐसी अपमानास्पद परिस्थितियों में बस पर सवार होने की अपेक्षा सड़क पर पैदल चलना अधिक प्रतिष्ठित था। इस विरोध से पहले उन्होंने मुझे अपना प्रतिनिधि बनाया और इस उत्तरदायित्व को स्वीकार करते हुए जाने-अनजाने में ही मेरा मन ईसा के महान प्रवचन तथा गांधीजी के सत्याग्रह की ओर गया। यह सिद्धान्त हमारे

आन्दोलन का पथ प्रदर्शक बन गया। ईसा ने हमें इस महान कार्य में प्रेरणा दी थी और गांधीजी ने उसे क्रियान्वित करने का तरीका दिया।

माण्टगुमरी के इस अनुभव ने मुझे जो कुछ सिखाया, वह उन सारी पुस्तकों ने मुझे सिखाया था जो मैंने अब तक पढ़ी थी। जैसे-जैसे समय बीतता गया, मैं अहिंसा की शक्ति के बारे में अधिकाधिक विश्वस्त होने लगा। अब अहिंसा मेरे लिए केवल बौद्धिक स्तर पर स्वीकृत एक प्रणाली न होकर एक जीवन पद्धति बन चुकी थी। बौद्धिक स्तर पर इसे स्वीकार करने के बाद मैंने इसके बारे में जो कुछ समझा नहीं था, वह माण्टगुमरी के अनुभव ने मुझे सिखा दिया था।

मेरी भारत यात्रा ने व्यक्तिगत रूप से भी मुझे विशेष प्रभावित किया था। केवल सत्याग्रह के बल पर भारतवासियों ने स्वतंत्रता प्राप्त की थी, उसका अनुपम परिणाम मैंने देखा। हिंसात्मक क्रान्ति से जो द्वेष तथा घृणा की भावना रह जाती है, उसका यहाँ सर्वथा अभाव था। ब्रिटिश तथा भारतीय लोगों में परस्पर मित्रता की भावना विद्यमान थी।

मेरे कहने का मतलब यह नहीं कि अहिंसा अपने चमत्कार एक ही दिन में दिखा देगी। लोगों को उनकी रूढ़िगत धारणाओं से तर्कशील भावनाओं से हटाना सरल काम नहीं है।

जब कुछ अधिकार प्राप्त लोगों से जनता अपने ही अधिकारों की माँग करती है तो वे उसका विरोध करते हैं। यदि आप अपनी माँगें अहिंसात्मक रूप से भी पेश करते हैं तो भी वही प्रतिक्रिया होती है। मैं जानता हूँ कि अभी भी कुछ गोरे भाई मुझसे रुष्ट हैं। किन्तु जो लोग अहिंसा का व्रत लेते हैं, उनके हृदय तथा आत्म में अद्भुत परिवर्तन आता है; इससे उन्हें एक नयी आत्म-प्रतिष्ठा मिलती है। अहिंसा उनकी अज्ञात शक्ति तथा उत्साह के स्रोत को ऊपरी सतह पर लाती है जिनसे वे अब तक अनभिज्ञ थे। इससे प्रतिद्वंद्वी की आत्मा में एक ऐसा परिवर्तन आता है जिससे परस्पर समझौता संभव होता है।

'अहिंसात्मक कार्यवाही से हम अन्तरराष्ट्रीय तनाव भी कम कर सकते हैं, ऐसा मेरा अब दृढ़ विश्वास होता जा रहा है। हालाँकि मैं भी यह मानता था कि युद्ध में लाभ की अपेक्षा क्षति ही अधिक होती है, फिर भी कुछ बुराइयों को रोकने के लिए मैं युद्ध को आवश्यक मानता था। किन्तु आज के घातक परमाणु अस्त्रों के कारण तो हम युद्ध की बात सोच भी नहीं सकते और यदि हम यह मानते हैं कि मनुष्य को जो जीने का अधिकार है तो हमें युद्ध को छोड़कर कोई अन्य मार्ग निकालना होगा। वर्तमान अन्तरिक्ष यान तथा प्रक्षेपास्त्र के युग में मनुष्य को या तो अहिंसा का पथ अपनाना होगा, नहीं तो मिट जाना होगा।

गांधी : एक नित्य नूतन विचार

आचार्य विनोबा भावे

जिस किसी ने माना कि "गांधीवाद" एक वाद है, वह समझा ही नहीं। गांधी तो ऐसे पुरुष हो गये जो बहुत व्यापक विचार करते थे। वे स्मृतिकारों की कोटि में आते हैं। किसी ने उनकी तुलना ईसा के साथ की, तो किसी ने तिलक के साथ। मेरी राय में उनकी तुलना स्मृतिकारों – मनु और याज्ञवल्क्य के साथ हो सकती है, जिनका व्यापक विचार जीवन के सभी पहलुओं को स्पर्श करता है। उन्हें आध्यात्मिक प्रतिभा अन्तर से ही मिली, इसलिए उनकी तुलना और किसी के साथ नहीं हो सकती।

गांधीजी बड़े व्यापक समाजशास्त्री थे। फिर भी मनु में और उनमें एक अन्तर था। मनु चिन्तन प्रधान थे तो गांधीजी सेवा प्रधान। जहाँ तक जीवन का प्रश्न है, वे व्यापकता के साथ विचार करते। उस सन्दर्भ में संस्कृति का भी प्रश्न उठता है। उस दृष्टि से सोचें तो टॉल्सटॉय और रवीन्द्रनाथ ठाकुर काफी व्यापक विचारक थे। लेकिन गांधीजी कर्म प्रधान (एक्टिविस्ट) थे तो विवेकानन्द थे रहस्यवादी (मिस्टिक)। इस प्रकाश में गांधीजी का वर्णन करना हो तो वे प्रधानतः कर्मवादी थे और रहस्यवादी गौण।

गांधीजी ने लोकमानस पर जो प्रभाव डाला, वह प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों प्रकार का है। उनकी प्रतिभा में संस्कृति का काफी स्थान है। मेरा मानना है कि यदि सांस्कृतिक दृष्टिकोण से देखना हो तो किसके जीवन का प्रभाव स्वयं उससे भी अधिक रहता है, यह देखना चाहिए। इसी दृष्टि से मैंने एक बार कहा था कि "गांधीजी की खूबी यह थी कि वे अपने ग्रन्थों से बड़े थे और कवि शेक्सपियर तथा मिल्टन थे अपने ग्रन्थों से छोटे।" निश्चय ही शेक्सपियर और मिल्टन ने अत्यन्त प्रतिभाशाली ग्रन्थ लिखे, लेकिन गांधीजी का जीवन बहुत ऊँचा, अच्छा और उन्नत था, जबकि विचार प्रकट करने (एक्सप्रेशन) में वे कमजोर थे। ग्रन्थ से भी उनके जीवन में अधिक प्रतिभा थी।

अतीत के झरोखे से...

इसलिए गांधीजी का जो मानवरूप है, उसे हम कायम रखें। उनका कोई सम्प्रदाय न बनाएं। एक शब्द उन्होंने मुँह से निकाला तो वही प्रमाण है, ऐसा न मानें। उस पर सोचें। गांधीजी भी हमेशा सोचते और बदलते थे। कहते भी थे कि "मेरे किसी भी पुराने वाक्य के साथ नये वाक्य का विरोध आता हो तो नया वाक्य प्रमाण समझो। पुराना गलत मानो, क्योंकि मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ता गया हूँ, धीरे-धीरे सत्य की खोज होती गयी और धीरे-धीरे सत्य का भान हुआ। पुंराना वाक्य पुरानी अक्ल का है। इसलिए यह मत समझो कि मोहनदास करमचन्द गांधी नाम का जो लड़का था, जो बैरिस्टर होने के लिए लन्दन गया, उसने जो कुछ कहा और 1948 में महात्मा गांधी के नाम से जाहिर मनुष्य बोला, दोनों एक ही हैं। ऐसा मानने की कोई जरूरत नहीं।"

महापुरुषों के दो प्रकार होते हैं। एक ऐसे महापुरुष, जो हमेशा के लिए कुछ न कुछ हिदायतें देते और लोगों को अच्छे मार्ग पर रखने की कोशिश करते हैं ऐसे महापुरुष 'संतपुरुष' के नाम से पहचाने जाते हैं।

वे लोगों को कुछ उपदेश देते हैं । कुछ लोग उनका उपदेश पूरी तरह अमल में लाते हैं, तो कुछ लोग उनकी चंद बातें ही मानते हैं। जो मानते हैं, वे उनका लाभ उठाते हैं, दूसरे उस लाभ से वंचित रहतेहैं। वैसे सन्त-पुरुषों का किसी पर कोई बोझ नहीं रहता।

वे यही सोचते हैं कि हमारी आज्ञा न चले। उन्हें यह अच्छा नहीं लगता कि उनकी सत्ता किसी पर चले। ऐसे सन्तों को परमेश्वर भेजा करता है, तभी दुनिया का यन्त्र चलता है। इन साधु पुरुषों के जरिये उस यन्त्र में कुछ न कुछ स्नेहन (लुब्रीकेंट) डाला जाता है और बिना घर्षण के वह चलता है। इनके सिवा वह कुछ ऐसे भी महापुरुष भेजता है, जो दूसरे प्रकार के होते हैं। वे एक सामान्य नीति का उपदेश देते हैं, पर उससे उस जमाने की जो आवश्यकता होती है, उसकी पूर्ति होती है। जब लोगों की आवश्यकता और साधु का उपदेश, दोनों का मेल होता है, यानी जब आवश्यकता की पूर्ति होती है, तब वह पुरुष 'युगपुरुष' हो जाता है। महात्मा गांधीजी ऐसे ही युगपुरुष थे।

गांधीजी एक विचार हैं, व्यक्ति नहीं। यदि हम यह नहीं समझते तो गांधीजी पर बहुत अन्याय करते हैं। उनके विचारों को उनके शब्दों और कृतियों से सीमित कर देंगे, तो हम उनके प्रति अन्याय करेंगे।

तीन मुक्तक

साध्वीश्री लक्ष्मी 'शार्दूल'

समुद्र तल में पहुँचने वाला वैदूर्य पाता है,
सात्विकता तक पहुँचने वाला सत्य पाता है,
केवल बातें बनाने वाले तो बहुत हैं,
जीवन से जूझने वाला ही तथ्य पाता है।

जंग लगने से शस्त्र की कीमत नहीं होती
रस सूखने से फल की कीमत नहीं होती;
नवनीत निकले दूध का भला क्या मोल,
चरित्र शून्य मानव की कहीं कीमत नहीं होती।

सिद्धि की अपेक्षा संकल्पों में मिठास होता है
बकझक से नहीं, मौन से विकास होता है;
केवल भूत भविष्य की ऊहापोह में न खो जाओ,
वर्तमान में किये हुए का अमर इतिहास होता है।

मुक्तक

मुनिश्री सोहनलालजी सुजान

चलने वाला कदम ही मंजिल को पा सकता है,
फलने वाला नियम ही मुश्किल को ढा सकता है,
कहने सुनने व दिखाने की बात नहीं पर,
खिलने वाला पदम ही हर दिल को भा सकता है।

अतीत के झरोखे से...

आंदोलन समाचार

समभाव ही हमारा धर्म है

रायपुर में आचार्य श्री तुलसी

रायपुर, 28 अगस्त को नैतिक जागरण के उद्देश्य से मुस्लिम, बौद्ध, सिख धर्म के प्रतिनिधियों ने आचार्य श्री से 'नैतिक जागरण सप्ताह' के सम्बन्ध में विचार-विनिमय किया। प्रत्येक मोहल्ले में छोटी-छोटी गोष्ठियों द्वारा सर्व धर्म समभाव पर विशेष बल देने की बात आचार्य श्री तुलसी ने कही। मुस्लिम धर्म के प्रतिनिधि ने बतलाया कि उनके मदरसे में सप्ताह में दो दिन अणुव्रत नियमों का वाचन होता है। बौद्ध व सिख धर्म के प्रतिनिधियों ने भी मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारों में सर्वधर्म सद्भाव पर चिन्तन चलाने की चर्चा की। नशीली चीजों के सेवन से आमजन को मुक्त रखने की बात पर भी विशेष रूप से चर्चा की गयी।

26 अगस्त के रात्रिकालीन कार्यक्रम में 'धर्म और सद्भावना' विषय पर दुर्गा महाविद्यालय के आचार्य डॉ. लक्ष्मण प्रसाद मिश्र ने कहा, "धर्म का एक ओर जहाँ रचनात्मक रूप रहा है, वहीं पर विध्वंसात्मक रूप भी देखने को मिलता है। परन्तु वास्तव में धर्म का रूप सर्जनात्मक ही है। विध्वंस तो धर्म के नाम पर तथाकथित धार्मिक लोग करते हैं।"

आचार्य श्री तुलसी ने अपने मंगल प्रवचन में कहा, "हमें अपने धर्म का सही रूप में आचरण करने का अधिकार है परन्तु यह अधिकार तभी तक सुरक्षित है जब हम दूसरे धर्म के लोगों का आदर करें, दूसरे धर्म की बात ईमानदारी पूर्वक सुनें। इस अवसर पर मुनिश्री गुलाबचन्दजी ने भी वक्तव्य दिया।

30 अगस्त को 'साम्ययोग की साधना' विषय पर साध्वीश्री कनक प्रभाजी व मुनिश्री चम्पालाल जी के सारगर्भित प्रवचन हुए। रात्रिकालीन कार्यक्रम में स्थानीय विज्ञान महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राजेश्वर गुरु उपस्थित थे। 'विज्ञान और धर्म' विषय पर मुनिश्री नथमलजी ने कहा - " हर मनुष्य में जिज्ञासा होना अनिवार्य है। जिज्ञासाहीन मनुष्य प्रगति नहीं कर सकता है। विज्ञान और धर्म एक है। इन्हें बाँटा नहीं जा सकता। विज्ञान में विश्वास करने वाला व्यक्ति यदि जीवन के साथ आत्मौपम्य की अनुभूति नहीं प्राप्त करता है तो उसके सामने भी कठिनाई हो जाती है। कठिनाई तब होती है जब जीवन के सही मूल्यों को अस्वीकृत कर दिया जाता है।" डॉ. राजेश्वर गुरु ने कहा- "धर्म और विज्ञान का विषय बड़ा विस्तृत है। जो सत्य है, वही जीवन है। जीवन की अपूर्णता को दूर करना सबसे बड़ी सार्थकता है। विज्ञान जीवन का स्थानापन्न नहीं हो सकता है, वह जीवन में सहायक हो सकता है।"

6 सितम्बर के प्रातःकालीन प्रवचन में आचार्य श्री ने 'अणुव्रत की साधना क्यों और कैसे' विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला। 8 सितम्बर को आचार्य श्री के जैन मन्दिर पधारने पर कार्यक्रम आयोजित हुआ। साध्वीश्री विचक्षणश्री जी यहीं पर पर विराजित हैं। इस कार्यक्रम में साम्प्रदायिक ऐक्य की भावना को बल प्रदान करने वाले प्रवचन हुए।

पेरिस में अणुव्रत

कलकत्ता निवासी जसकरण जी सेठिया ने अणुव्रत आचार संहिता को यूनेस्को में पाँच अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में अनूदित कराने के उद्देश्य से प्रेस पब्लिसिटी डायरेक्टर श्री जान कोवस्की से भेंट की। यद्यपि उन्होंने कुछ कठिनाइयां बतलाते हुए असमर्थता प्रकट की परन्तु व्यक्तिगत रूप से वे अणुव्रत आचार संहिता से प्रभावित हुए और इसे संयुक्त राष्ट्र की मान्यताओं के समकक्ष बतलाया। श्री जसकरण सेठिया को यूनेस्को के माध्यम से अणुव्रत आचार संहिता को प्रचलित करने का सुझाव पेरिस स्थित नेपाल के राजदूत श्री राना ने दिया था। वे स्वयं भी इससे अत्यधिक प्रभावित हैं।

विद्यालयों में नैतिक प्रशिक्षण अभियान

दिल्ली के विद्यालयों में नैतिक प्रशिक्षण का अभियान चलाया जा रहा है। इसी के अंतर्गत दिल्ली नगर निगम के समस्त स्कूलों के प्रधानाध्यापकों तथा सहायक अध्यापकों के क्षेत्रीय स्तर पर सम्मेलन आयोजित हो रहे हैं। 7 सितम्बर को सिविल लाइन्स क्षेत्र के 117 विद्यालयों के सम्मेलन में मुनिश्री विनय कुमारजी 'आलोक' तथा मुनिश्री महेन्द्र कुमारजी "द्वितीय" के प्रेरणादायी प्रवचन हुए। शिक्षाधिकारी डॉ. राव ने नैतिक प्रशिक्षण योजना की प्रभावपूर्ण शब्दों में आवश्यकता बतायी। विद्यालय निरीक्षक श्री प्रतापसिंह चौधरी तथा क्षेत्रीय शिक्षाधिकारी श्री ओमप्रकाश वर्मा ने स्वागत किया। 8 सितम्बर को शाहदरा क्षेत्र के 90 विद्यालयों के सम्मेलन में मुनिश्री विनयकुमारजी 'आलोक' ने अणुव्रत तथा नैतिक प्रशिक्षण की योजना पर प्रकाश डाला। बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने छात्र अणुव्रत स्वीकार किये। इसके अनन्तर नैतिक परीक्षाओं के व्यवस्थित संचालन के लिए मुनिश्री के सान्निध्य में शिक्षाधिकारियों की बैठक हुई। इन दिनों शिक्षा क्षेत्र के बहुत से महत्वपूर्ण व्यक्तियों से वैयक्तिक सम्पर्क भी होता रहा है।

परिचर्चा

सादगी : आर्थिक विपन्नता का सूचक या वैचारिक मूल्य का प्रतीक

गत अंक में प्रस्तुत परिचर्चा के इस विषय पर पाठकों से प्राप्त चिंतन बिंदुओं को यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है –

संयम की सखी सादगी

अणुव्रत का आदर्श वाक्य है - संयमः खलु जीवनम् अर्थात् संयम ही जीवन है। सादगी संयम की सखी तथा संयममय जीवन की प्रतीक होती है। इसलिए सादगी को आर्थिक विपन्नता का सूचक कहना कतई ठीक नहीं है। मेवाड़ के उद्धारक दानवीर भामाशाह अकूत संपदा के स्वामी थे, लेकिन उन्होंने सादगी व त्याग का जीवन जिया। वक्त आने पर अपनी समस्त निजी सम्पत्ति महाराणा प्रताप को समर्पित कर दी। भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान के जनक डॉ. विक्रम साराभाई खानदानी रईस थे, लेकिन वे सादगी पसंद थे। उन्होंने अपना जीवन और धन विज्ञान के विकास के लिए लगा दिया। वे डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के गुरु थे। डॉ. कलाम ने उनसे सादगी और शाकाहारी जीवनशैली की प्रेरणा ली। साराभाई को 'विज्ञान जगत का गांधी' कहकर उनके सादगीमय जीवन की ओर संकेत किया। वस्तुतः जो व्यक्ति सादगीमय जीवन जीता है, वह अल्प संसाधनों में भी अनल्प खुशी प्राप्त कर सकता है।

- डॉ. दिलीप धींग, उदयपुर

सादगी एक मानसिक स्थिति

विचारों की श्रेष्ठता ही सादगी का दूसरा नाम है, उसका आर्थिक विपन्नता से कोई संबंध नहीं। यह तो व्यक्तिगत सोच पर निर्भर करता है कि व्यक्ति अपनी सामान्य जीवनशैली के बीच नकारात्मक विचारों के बोझ से दबा, समाज में आडम्बरयुक्त दिखावे का ढोंग करते हुए जीता है अथवा साधन संपन्न होते हुए भी नम्रतापूर्वक व्यवहार को अपना कर सहज और शांत भाव से। इसी संदर्भ में मुझे अपनी एक सहपाठिनी की याद आ रही है। अधिकतर विद्यार्थी उसे निर्धन परिवार की मानकर उससे दूरी बनाये रखते थे, किंतु मैं उसके सभ्य एवं सादगीपूर्ण आचरण से बहुत प्रभावित थी। जब पहली बार उसके घर जाना हुआ तो मैं अचम्भित रह गयी। साधारण वेशभूषा में रहने वाली वह छात्रा, समस्त सुख-सुविधाओं से युक्त एक आलीशान बंगले में रहती थी, हर प्रकार के आडम्बर और अभिमान से दूर। यहां यह कहना उचित होगा कि सादगी एक मानसिक स्थिति है और उसके अनुरूप ही व्यक्ति का व्यवहार और जीवनशैली निर्धारित होते हैं।

-सुकीर्ति भटनागर, पटियाला

सादगी खोलती है समाजवाद के द्वार

सादा जीवन और आचरण में जो आनंद, सुख, संतोष, सरलता और पवित्रता है, वह कृत्रिम, ऐश्वर्यशाली और उपभोक्तावादी जीवनशैली में कहां? आज के जीवन में जो असंतोष, हड़बड़ी, मारामारी, व्यर्थ की भागदौड़ व तनाव, रोग, शोक आदि हैं, वह सब सादा जीवन के अभाव के कारण ही हैं। आज कीमती वस्त्रों, खाने-पीने, मौज-मजे, शादी-ब्याह, दावत-भोज आदि के नाम पर कौन कितना अधिक खर्च करता है, इसके आधार पर ही उसका बड़प्पन आंका जाता है। हमारे पूर्वजों ने सादा जीवन बिताने की सीख इसलिए दी ताकि हम अपनी शक्ति व्यर्थ नष्ट न कर उसका सदुपयोग अच्छे कार्यों में कर सकें। सादगी जहां व्यक्तिगत जीवन में लाभकारी होती है, वहीं सामाजिक जीवन में संघर्ष, रहन-सहन की असमानता, कृत्रिम अभाव, महंगाई आदि को दूर करके वास्तविक समाजवाद की रचना करती है। जापान जैसा समृद्ध राष्ट्र भगवान महावीर के अपरिग्रह के सिद्धांत पर आधारित मिनिमलिज्म का सिद्धांत अपना रहा है। अंत में कह सकते हैं कि अर्थ से क्षणभंगुर भौतिक साधन प्राप्त हो सकते हैं, लेकिन सादगी से साक्षात प्रभु को प्राप्त किया जा सकता है।

- राजेश भंसाली, अहमदाबाद

सादगी के समक्ष सारे ट्रेंड फीके

सरलता, सहजता और भोलेपन का मिश्रण है सादगी। साधनों की प्रचुरता के बाद भी सादगीपूर्ण जीवन जीना, अपरिग्रही और मितव्ययी होना जीवन जीने की सर्वोत्तम पराकाष्ठा है। इसको कतई आर्थिक विपन्नता नहीं कहा जा सकता है। सादगीपूर्ण जीवनशैली हमें लक्ष्य-निर्धारण और प्राथमिकताओं को सही से पहचानने में मदद करती है। सादगीपूर्ण जीवन अपनाने का आशय है अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं को कम कर लेना ताकि दूसरों की जरूरतें अधिक से अधिक पूरी की जा सकें। किसी राष्ट्र के निवासियों का सादगीपूर्ण जीवन उस राष्ट्र को स्वावलंबी बनाने में योगभूत बनता है। सादगीपूर्ण जीवन के पर्याय पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने कहा भी है, "सादगी जब अपने रुतबे में होती है तो सारे ट्रेंड फीके पड़ जाते हैं।"

- अवधेश कुमार दूबे, रक्सौल

सीमित संसाधनों में खुश रहना ही सादगी

भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र है - सादा जीवन उच्च विचार। सादगी न तो आर्थिक विपन्नता का सूचक है न ही वैचारिक मूल्यों का प्रतीक। सादगी व्यक्ति के व्यक्तित्व का एक अभिन्न हिस्सा है जो आजीवन उसके साथ रहता है और वो व्यक्ति समाज का एक सुन्दर किरदार बन सभी को प्रभावित करता है। सहज होकर जीना, अपनी जरूरतों व इच्छाओं के बीच संतुलन

बिठाना, सीमित संसाधनों में खुश रहना ही सादगी है। व्यक्ति अमीर हो या गरीब, यदि उसे सादगीपूर्ण जीवन अच्छा लगता है तो वो उसी तरह अपना जीवन व्यतीत करेगा। कन्फ्यूशियस का कथन है - "जीवन बेहद सरल है लेकिन हम उसे जटिल बनाने पर आमादा रहते हैं।" भौतिक संसाधनों से खुद को बचाने का प्रयास ही सहज-सरल जीवन की कुंजी है। हालाँकि इन दिनों लोग अपनी सोच के साथ शानदार जीवन व्यतीत करते हैं और केवल उन चीजों तक ही सीमित रहते हैं जिनसे उन्हें सांसारिक सुख प्राप्त होता है।

-डॉ. राजमती पोखरना सुराना, भीलवाड़ा

विचारों से जुड़ी है सादगी

समाज में ऐसी धारणा बन गयी है कि जिनके पास पर्याप्त धन है और वे दिखावा नहीं करते हैं तो उनके लिए कुछ बात नहीं है, पर जिनके पास थोड़ा कम धन है, अगर वे किसी अवसर विशेष पर कम खर्च करते हैं तो उनके प्रति लोगों का नजरिया दूसरा होता है। कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं जो सोचते हैं कि हमारे पास जब इतना धन है तो क्यों न हम वैभवपूर्ण जीवन जिएं। असल में सादगी एक वैचारिक मूल्य है। धनवान होते हुए भी व्यक्ति सादगी को अपना सकता है, अगर उसकी सोच अणुव्रत के नियमों के अनुरूप हो। ऐसा व्यक्ति आर्थिक रूप से संपन्न होते हुए भी संयमपूर्वक रहते हुए सादगी से अपना जीवन व्यतीत करेगा। मूलतः सादगी न तो धन-दौलत से जुड़ी है और न ही आर्थिक हालात से। यह अपने आंतरिक विचारों से जुड़ी है। जो व्रतों को समझ लेता है, उसके जीवन में, व्यवहार में भी सादगी जुड़ जाती है।

- राजश्री बुच्चा (लूनिया), धुबड़ी

मानसिक सोच का परिचायक

आदमी सादगी से रहे या नहीं, यह उसकी आर्थिक स्थिति से भी अधिक उसकी सोच पर निर्भर करता है। समाज में कई व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से संपन्न होते हुए भी सहज भाव वाला जीवन जीते हैं। उनके विचारों का प्रभाव दूसरों पर भी पड़ता है। संपन्न व्यक्ति तब तक लोगों में चर्चित रहता है, जब तक वह आर्थिक दृष्टि से संपन्न होता है, लेकिन जिस व्यक्ति का चिंतन पक्ष सहज रूप से श्रेष्ठ होता है, वह सदा लोकप्रिय बना रहता है। अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने सदा सामान्य जीवन जिया, लेकिन अपने उच्चस्तरीय चिंतन और जनहितकारी सोच के कारण आज भी दुनिया भर में जाने जाते हैं।

- दिनेश विजयवर्गीय, बूंदी

सादगीपूर्ण जीवन त्याग की मिसाल

यह विचारधारा कि सादगी आर्थिक विपन्नता का द्योतक है, सरासर अनुचित है। विश्व के अनेक महापुरुष उच्च पदों पर शोभित होने या आर्थिक रूप से संपन्न होने के बावजूद सादगीपूर्ण जीवन में विश्वास करते थे क्योंकि उनकी विचारधारा उत्कृष्ट श्रेणी की थी। आज भी ऐसे अनेक व्यक्ति हैं जो आर्थिक रूप से संपन्न होने के बावजूद सादगी भरा जीवन व्यतीत करते हैं। उत्कृष्ट विचार ही किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को निखार कर उसे महान व महानतम बनाते हैं। आडम्बर युक्त व्यक्तित्व किसी को क्षणिक रूप से तो आकर्षित कर सकता है। परंतु वैचारिक उत्कृष्टता ही हृदय पर स्थायी रूप से अंकित होती है। भारतीय संस्कृति तप और त्याग की संस्कृति है और सादगीपूर्ण जीवन त्याग की एक अनुपम मिसाल है। हालाँकि वर्तमान उपभोक्तावादी युग में आडंबर की भावना घर करती जा रही है, फिर भी सादगी व वैचारिक उत्कृष्टता धन-संपदा व आडंबर पर सदा भारी रहेगी।

-उषा जैन, टोहाना

सादगी हमारा जीवन मूल्य

सादगी केवल एक शब्द ही नहीं है अपितु यह समस्त ज्ञान, विचार और जीवन मूल्यों का सार है। सादगी को केवल व्यक्ति की वेशभूषा से ही नहीं मापा, तौला या आंका जा सकता, बल्कि यह तो व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का चित्रण है, जिसमें उस व्यक्ति की भाषा, चिन्तन, चरित्र, व्यवहार और जीवन जीने की पद्धति सम्मिलित होती है। हमारे पूर्वजों और ऋषि-मुनियों ने न केवल सादे जीवन का प्रचार-प्रसार किया, बल्कि उसे अपने जीवन में उतारा और अपनाया भी। जो जीवन में दिखावे, आडम्बर और बनावटीपन से दूर रहता है, सादगी स्वतः ही दौड़ी-दौड़ी उसके पास चली आती है। आज भी हमारे समाज में सादगीपूर्ण जीवन जीने वालों की कोई कमी नहीं है। सादगी हमारा जीवन मूल्य तथा सादगीमय जीवन हमारी परम्परा और संस्कृति रही है।

-माणक तुलसीराम गौड़, नागौर

आचरण एवं व्यवहार से हो आकलन

साधारण व्यक्ति भी सादगी से जी सकता है। भौतिक सुख-सुविधाओं से संपन्न व्यक्ति भी सादगी पसंद हो सकता है। प्रायः पैसा आने पर व्यक्ति वैभव का प्रदर्शन करने लगता है, जो उसकी मानसिक विपन्नता का सूचक है। यहां हम पाठशाला का उदाहरण ले सकते हैं। पाठशाला में सभी बच्चे एक समान सादगीपूर्ण परिधान पहन कर आते हैं। जब सब बच्चे एक साथ बैठते हैं तो उनको देखकर यह कह पाना मुश्किल होता है कि कौन बच्चा अमीर है और कौन गरीब। सभी बच्चे अपने ज्ञान के बल पर आगे बढ़ते हैं न कि अपनी संपन्नता के बल से। शिक्षक उनका आकलन उनकी उत्तर पुस्तिका को देखकर करते हैं। ठीक इसी प्रकार व्यक्ति की प्रतिष्ठा उसके परिधान या वैभव से नहीं, अपितु उसके आचरण एवं व्यवहार से ही होनी चाहिए।

-अनिल अग्रवाल, भोपाल

सादगी एक प्राकृतिक शृंगार

भारतीय संस्कृति सदा से ही सादा जीवन उच्च विचार से अलंकृत रही है। सादगी से मनुष्य में आत्मबल, मानसिक बल तथा शारीरिक बल में वृद्धि होती है जो व्यक्तित्व में निखार लाती

है। अनेक राजा-महाराजाओं ने अकूत संपत्ति को ठोकर मारकर मुनि या संन्यासी का जीवन अपनाया तो यह विचारों की उत्कृष्टता के कारण ही हुआ। महात्मा गांधी और विनोबा भावे जैसे महापुरुषों ने सादगीपूर्ण जीवन जिया तो यह उनके विचारों की संपन्नता ही थी। आडंबरमय जीवन का प्रभाव क्षणिक होता है, परंतु सादगी व वैचारिक उत्कृष्टता का प्रभाव चिरस्थायी होता है। सादगी एक प्राकृतिक शृंगार है जबकि दिखावा अपनी कमियों को छुपाने का आवरण मात्र है।

-लता अशोक जैन, दिल्ली

मानसिकता को दिखाती है सादगी

सादगी आर्थिक विपन्नता का सूचक नहीं, वरन् व्यक्ति को बचपन में मिली शिक्षा द्वारा पोषित मानसिकता, उसके विचारों का प्रतिरूप है। 'सादा जीवन उच्च विचार' हमारे पूर्वजों द्वारा दिये गये वे नैतिक मूल्य हैं जो व्यक्ति को अपने जीवन में तड़क-भड़क से दूर रहने तथा कर्म करने के लिए प्रेरित करते हैं। व्यक्ति को उसके शानदार घर, गाड़ी, कपड़े, गहनों...उसके बाह्य आवरण से नहीं बल्कि उसके व्यक्तित्व की शालीनता, उसके विचारों से, उसके कर्मों से जाना जाता है।

व्यक्ति का बाहरी रूप क्षणिक रूप से हमें आकर्षित कर भी ले किन्तु अगर उसमें सेवा, दया, ममता, करुणा की भावना नहीं है तो उसके बाह्य रूप की चमक-दमक व्यर्थ है। अगर ऐसा न होता तो महात्मा गाँधी आज राष्ट्रपिता न कहलाते। स्वामी विवेकानंद अपने विचारों द्वारा विदेश में अपनी विद्वता की छाप न छोड़ते।

-सुधा आदेश, लखनऊ

जीवन को सार्थक बनाती है सादगी

सादगी भारत की एक लोकप्रिय एवं स्वीकार्य जीवनशैली रही है। अपनी आवश्यकताओं और इच्छाओं में संतुलन बिठाना व सीमित संसाधनों में स्वाभाविक एवं सहज रूप में रहना ही सादगी है। सादगी व्यक्ति को आंतरिक शांति प्रदान करती है तथा बुद्धि, बल और विवेक को बढ़ाती है। व्यक्ति के तनाव को दूर कर उसे प्रसन्नता प्रदान करती है और सीमित आय में प्रसन्नतापूर्वक रहने का कौशल सिखाती है। सादगी से मनुष्य के कार्यों में गुणवत्ता बढ़ती है और उसका जीवन संतोषप्रद और सार्थक होता है। आज समाज में दिखावे का बोलबाला बढ़ता जा रहा है जो कि तनाव का भी मुख्य कारण है। जीवन में सुखी रहने के लिए अर्थ का नहीं, अपितु संतोष का महत्व है जो सादगी से आता है।

- सृष्टि जैन, टोहाना

आत्मविश्वास बढ़ाने में सहायक

किसी भी मानव की सबसे बड़ी शक्ति है उसका चरित्र। जितने भी महान व्यक्ति हुए, उनका जीवन सादगीपूर्ण था। न कोई बाह्य आडंबर, न कोई दिखावा। सादगीपूर्ण जीवन जीने से न्यूनतम चीजों से आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती है। न कोई ऋण, न ही दिखावा। इच्छाएं सीमित होती हैं। ऐसे व्यक्ति आत्मविश्वास से जीवन जीते हैं। सादगी से रहने से तनाव का स्तर निम्न रहता है। सादगी जीवन में संतुलन को बनाये रखने में मदद करती है। सादगी से जीवन जीने वाले को खुशी स्वयं के भीतर मिल जाती है।

-कविता बांठिया, गुवाहाटी

अगले अंक का विषय

परिचर्चा

'उत्सव को कैसे बनाएं और भी अधिक अर्थपूर्ण'

हमारा देश उत्सवों का देश है। परिस्थितियां चाहे कितनी भी विपरीत क्यों न हों, उत्सव मनाने के अवसर हम तलाश ही लेते हैं। उत्सव से जीवन में सकारात्मकता, मिलनसारिता और अनुभवों का विस्तार होता है। उत्सव मनाने का मूल उद्देश्य है परोपकार, सहिष्णुता, उदारता, मानवता और सह अस्तित्व की भावना का विकास।

हालाँकि समय बदलने के साथ उत्सवों में परम्परा के निर्वाह के साथ ही प्रदर्शन का भाव प्रबल से प्रबलतम होता दिखायी देता है। वहीं, दुर्भाग्यवश आज भी हमारे समाज में ऐसे अनेक परिवार हैं जिनके घर सुबह चूल्हा जलता है तो पता नहीं होता कि रात को खाने का जुगाड़ हो पाएगा या नहीं। हम अपने आसपास रह रहे ऐसे लोगों के जीवन में भी कैसे भर सकते हैं खुशियों की मिठास और उत्सव को बना सकते हैं और भी अधिक अर्थपूर्ण।

'उत्सव को कैसे बनाएं और भी अधिक अर्थपूर्ण' इस विषय पर सुधी पाठकों के विचार सादर आमंत्रित हैं। अपने विचार 200 शब्दों में भेजें हमें **15 अक्टूबर तक 9116634512** पर व्हाट्सएप के माध्यम से। चयनित विचार **नवम्बर अंक में प्रकाशित** किये जाएंगे।

-सं.

कदमों के निशां

आचार्य तुलसी ने कहा था, अणुव्रत चरित्र निर्माण का आंदोलन है। अणुव्रत पुरस्कार की स्थापना के पीछे उद्देश्य है उन लोगों का आदर जो चरित्र निर्माण के लिए कृत संकल्प हैं।
अणुव्रत के आदर्शों के प्रति जिनके मन में गहरी निष्ठा है। ऐसी विभूतियों की प्रतिष्ठा से समाज में नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था बढ़ेगी।
आचार्य महाप्रज्ञ का कहना था, "सत्य की खोज करना बड़ी बात है और उससे भी बड़ी बात है सत्य को क्रियान्वित करना। अणुव्रत पुरस्कार सत्य को क्रियान्वित करने वालों को मिलता है। अतः मैं कह सकता हूँ कि यह सबसे बड़ा पुरस्कार है।"
आचार्य महाश्रमण कहते हैं, "भारत के नागरिकों में नैतिकता के प्रति आस्था पुष्ट बने, अणुव्रत इसी दिशा में कार्यशील है। अणुव्रत पुरस्कार नैतिक मूल्यों के महत्व को प्रतिपादित करने वाला अभिक्रम है।"
वर्ष 1981 में अणुव्रत पुरस्कार की शुरुआत की गयी। तब से 27 विभूतियों को इस पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। अणुव्रत पुरस्कार के अंतर्गत प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न और एक लाख इक्यावन हजार रुपये की राशि प्रदान की जाती है। अणुव्रत पुरस्कार प्राप्त करने वालों की जीवन गाथा से परिचित होना मानवीय मूल्यों से साक्षात करना है। आने वाली पीढ़ियां इनके जीवन से प्रेरणा लेकर स्वस्थ समाज की संरचना की दिशा में कदम बढ़ाएं, इसी उद्देश्य से अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित विशिष्ट व्यक्तियों का परिचय यहां क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है।

अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित व्यक्तित्व

श्री यशपाल जैन
गांधीवादी विचारधारा के प्रमुख प्रवक्ता

यशस्वी पत्रकार, लेखक, चिंतक और गांधीवादी विचारक पद्मश्री यशपाल जैन का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ के विजयगढ़ में 1 सितम्बर 1912 को एक संपन्न परिवार में हुआ था। उनके पिता श्यामल जैन की जमींदारी के साथ पटवारी की नौकरी थी। माँ लक्ष्मी जैन धार्मिक महिला थीं।

यशपाल जी की शुरुआती शिक्षा पड़ोसी गाँव में हुई। कस्बा विजयगढ़ स्थित पाठशाला से 1929 में मिडिल क्लास पास करने के बाद अलीगढ़ स्थित कायस्थ पाठशाला में दाखिला लिया। 1930 में विद्यालय की पत्रिका से लेखन की शुरुआत की। 1931 में मैट्रिक पास कर धर्मसमाज इंटर कॉलेज में दाखिला लिया। एक वर्ष पढ़ाई के बाद इलाहाबाद चले गये। वहां 1933 में इंटर उत्तीर्ण कर इलाहाबाद विश्वविद्यालय में दाखिला लिया। यहां से बीए और एलएलबी की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद विश्वविद्यालय से सैनिक प्रशिक्षण भी प्राप्त किया, मगर उनका इरादा न तो वकालत करने का था और न सैनिक बनने का, इसलिए दिल्ली पहुँच गये। उन्होंने अपने मामा व प्रसिद्ध साहित्यकार जैनेंद्र कुमार के सान्निध्य में रहकर लेखन शुरू किया।

यशपाल जैन ने मानवीय मूल्यों पर अडिग रहकर कहानियों, कविताओं, डायरी, पत्र लेखन, संस्मरण, बोध कथाओं, निबंधों और आत्म वृत्तांत से हिन्दी साहित्य के भंडार को समृद्ध किया। संस्मरण लेखन में खूब ख्याति पायी। सैलानी के रूप में उनका यात्रा साहित्य महत्वपूर्ण स्थलों, संस्कृति, सभ्यता और साहित्य का समन्वय आज भी दुर्लभ है। देश-विदेश की खूब यात्राएं कीं और हिन्दी और साहित्य का प्रचार किया। अनेक राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं से भी जुड़े रहे।

श्री जैन प्रारंभ से ही गांधीवादी विचारधारा के प्रमुख प्रवक्ता रहे। सम्पूर्ण भारत भ्रमण के साथ-साथ आपने 42 देशों की यात्रा की। अपने उदात्त विचारों और लोक कल्याणकारी साहित्य के कारण वे देश-विदेश में लोकप्रिय रहे। भारत के प्रमुख गांधीवादी प्रकाशन संस्थान 'सस्ता साहित्य मंडल' के प्रकाशन के पीछे मुख्यतः श्री यशपाल जैन ही का परिश्रम था। आपने सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन के मंत्री के रूप में हिंदी की सेवा की। 1946 से 2000 तक आप 'जीवन साहित्य' मासिक पत्र के संपादक रहे।

आपको 'रूस में छियालीस दिन' पुस्तक पर 'सोवियत लैंड नेहरू' पुरस्कार प्राप्त हुआ। दूसरी बार यही पुरस्कार 'सेतु निर्माता' पुस्तक पर मिला। अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा साहित्य वाचस्पति, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा साहित्य भूषण समेत अनेक उपाधियों से आपको विभूषित किया गया।

श्री यशपाल जैन नेहरू बाल समिति, दिल्ली, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति और चित्रकला संगम के अध्यक्ष रहे। भारतीय साहित्य परिषद् और अखिल भारतीय अणुव्रत समिति के अध्यक्ष भी रहे। दिल्ली में अणुव्रत के प्रसार में विशेष सहयोगी बने। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य तुलसी ने आपको अणुव्रत प्रवक्ता से संबोधित किया। आप अणुव्रत पुरस्कार 1998 तथा सुलभ साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित हुए। 1990 में आपको पद्मश्री से सम्मानित किया गया। 10 अक्टूबर 2000 को श्री यशपाल जैन का निधन हो गया।

अणुविभा में दीर्घा उद्घाटन व सम्मान समारोह

जी-20 देशों में पहुँचाएंगे अणुव्रत का संदेश - अर्जुनराम मेघवाल

राजसमंद के अणुविभा मुख्यालय में केन्द्रीय मंत्री ने की घोषणा

राजसमंद। अणुव्रत का दर्शन वैश्विक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है। यह भारतीय संत परंपरा की उज्ज्वल विरासत है जिसने दुनिया को समय-समय पर सद्मार्ग दिखाया है। जब देश आजादी के जश्न के साथ-साथ विभाजन की विभीषिका के दौर से गुजर रहा था, 34 वर्ष के युवा संत आचार्य श्री तुलसी भारत के भविष्य की नब्ज टटोल रहे थे। उन्होंने तब 'असली आजादी अपनाओ' का आह्वान किया और अणुव्रत दर्शन दुनिया के सामने रखा। अमेरिका की विश्व प्रसिद्ध टाइम मैगजीन ने अपने आर्टिकल में लिखा था - "छोटे कद का एक युवा संत अणुबम से मुकाबला करने के लिए अणुव्रत की बात कर रहा है।" तब पूरी दुनिया का ध्यान आचार्य तुलसी और अणुव्रत की ओर आकर्षित हुआ था। ये विचार केंद्रीय संस्कृति एवं संसदीय कार्य राज्य मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने अणुव्रत विश्व भारती में 18 सितम्बर को आयोजित सम्मान समारोह में व्यक्त किये।

मेघवाल ने कहा कि मुझे आचार्य तुलसी का आशीर्वाद अपने स्कूली दिनों में प्राप्त हुआ था और अणुव्रत के संस्कार मेरे जीवन में मुझे सदैव प्रेरित करते रहे हैं। उल्लेखनीय है कि मेघवाल अणुव्रत संसदीय मंच के राष्ट्रीय संयोजक हैं। इस मंच के माध्यम से जनप्रतिनिधियों के बीच अणुव्रत का संदेश प्रसारित होता है।

जी-20 समूह का अध्यक्षीय दायित्व भारत को मिलने को एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम बताते हुए मेघवाल ने कहा कि भारत में 50 से अधिक आयोजन इस संदर्भ में होंगे। मैं चाहता हूँ कि अणुविभा के माध्यम से एक आयोजन अणुव्रत दर्शन पर आधारित हो ताकि भारत के इस मानवतावादी संदेश को दुनिया बेहतर तरीके से समझ सके और अपना सके। उन्होंने कहा कि अणुव्रत और अणुविभा के प्रति मेरी विशेष रुचि है। अणुविभा का यह मुख्यालय बहुत ही मनभावन है। यह बच्चों के लिए प्रेरणादायक है। इसकी नींव में मोहन भाई का श्रम मुखरित हो रहा है। मैं चाहता हूँ कि अणुव्रत आंदोलन के 75 वर्ष की सम्पूर्ति पर यह आंदोलन देश-विदेश में अधिक से अधिक फैले।

कार्यक्रम को अपना सान्निध्य प्रदान करते हुए अणुव्रत अनुशास्ता की विदुषी शिष्या साध्वीश्री मंजुयशा ने कहा कि अणुव्रत विश्व भारती आज देश-विदेश में अणुव्रत आंदोलन का प्रतिनिधित्व करने की वाली शीर्ष संस्था बन गयी है। राजसमन्द में अणुविभा का यह केन्द्र बहुत ही रमणीय है। मोहन भाई के श्रम व त्याग को उनका पुत्र संचय जैन बहुत ही समर्पण भाव से आगे बढ़ा रहा है। आज जिन महानुभावों का सम्मान किया जा रहा है, उनका अहम योगदान संस्था के विकास में योगभूत बना है। आचार्य तुलसी के सपनों का समाज और विश्व बनाने के लिए प्रयासरत रहना हम सबका कर्तव्य है।

इस कार्यक्रम के पहले अणुविभा मुख्यालय चिल्ड्रन'स पीस पैलेस की विभिन्न दीर्घाओं के आधुनिकीकरण का लोकार्पण किया गया। अणुव्रत तुलसी दर्शन का उद्घाटन बेंगलुरु प्रवासी सायर हीरालाल मालू, महावीर महात्मा महाप्रज्ञ अहिंसा दीर्घा का

अणुव्रत समाचार

दिल्ली प्रवासी तेजकरण सुराणा, मोहन भाई अतिथिगृह के द्वितीय तल का मुंबई प्रवासी सुमतिचंद गोठी एवं 'हार्मनी' सीप एण्ड शॉप का उद्घाटन सूरत प्रवासी शांतिलाल सोलंकी ने किया।

इस नवीनीकरण के माध्यम से इस केंद्र के आकर्षण और उपयोगिता दोनों में अभिवृद्धि हुई है। इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल, राजसमंद विधायक दीप्ति माहेश्वरी, नगर परिषद सभापति अशोक टाक, जिला कलक्टर नीलाभ सक्सेना, पुलिस अधीक्षक सुधीर चौधरी उपस्थित थे।

अणुविभा केंद्रीय टीम के अनेक पदाधिकारी भी इस अवसर पर मौजूद थे। इनमें प्रमुख हैं - अध्यक्ष संचय जैन उदयपुर, महामंत्री भीखम सुराणा दिल्ली, वरिष्ठ उपाध्यक्ष अविनाश नाहर जयपुर, उपाध्यक्ष प्रताप दूगड़ कोलकाता, उपाध्यक्ष राजेश सुराणा सूरत, उपाध्यक्ष अशोक डूंगरवाल राजसमंद, कोषाध्यक्ष राकेश बरड़िया जयपुर, संगठन मंत्री कन्हैयालाल चिप्पड़ बेंगलुरु, सहमंत्री जगजीवन चौरड़िया, डॉ. राकेश तैलंग, प्रकाश तातेड़, मर्यादा कोठारी, डॉ. नीना कावड़िया, अभिषेक कोठारी, डॉ. सीमा कावड़िया, अणुविभा के न्यासी सुरेश कावड़िया, गणेश कच्छारा, अणुविभा के पूर्व अध्यक्ष डॉ. सोहनलाल गांधी, तेजकरण सुराणा एवं निर्मल रांका, तेरापंथ विकास परिषद् सदस्य पदमचंद पटावरी, अणुव्रत प्रवक्ता डॉ. महेन्द्र कर्णावट, डॉ. बसंती लाल बाबेल, डॉ. वीरेन्द्र महात्मा आदि।

स्वागत भाषण देते हुए अणुविभा के अध्यक्ष संचय जैन ने कहा कि राजसमन्द की इस भूमि और इस संस्थान की नींव को प्राप्त आचार्य तुलसी के चरण स्पर्श का प्रभाव है कि यह सम्पूर्ण अणुव्रत आन्दोलन का मुख्यालय बन गया है। हमें इस बात का गौरव है कि हम इस संस्थान व आन्दोलन को अणुव्रत के सिद्धान्तों के अनुरूप पूर्ण शुचिता के साथ आगे बढ़ा रहे हैं। संस्थागत, कार्यकारी और आर्थिक शुचिता की दृष्टि से संस्था द्वारा उठाये गये कदमों से अणुव्रत के प्रति लोगों की आस्था और भी दृढ़ हुई है। संचय जैन ने अणुविभा के विकास में योगभूत रहे भामाशाहों का अभिनन्दन करते हुए कहा कि आचार्य तुलसी के आशीर्वाद से मोहन भाई ने जिस केन्द्र की यहां स्थापना की, आज वह एक नये व निखरे स्वरूप में हमारे सामने है।

दानवीर तेजकरण सुराणा, हीरालाल मालू, सुमतिचंद गोठी, देवेन्द्र सोलंकी ने इसे अपना सौभाग्य बताया कि इस सुन्दर संस्थान के विकास में वे सहयोगी बन सके। डॉ. सोहनलाल गांधी और अविनाश नाहर ने भी विचार व्यक्त किये।

अणुविभा के महामंत्री भीखम सुराणा ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया। आभार ज्ञापन सहमंत्री जगजीवन चौरड़िया ने किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ सुभाष पब्लिक स्कूल के बच्चों द्वारा प्रस्तुत अणुव्रत गीत के साथ हुआ।

अणुव्रत सम्पर्क यात्रा

दक्षिण भारत

■■ अणुविभा अध्यक्ष संचय जैन की रिपोर्ट ■■

अणुव्रत आंदोलन की ताकत देशभर में फैली अणुव्रत समितियां हैं। आंदोलन की प्रतिनिधि केंद्रीय संस्था के नाते अणुविभा का यह दायित्व है कि वह इन समितियों और उनसे जुड़े हजारों कार्यकर्ताओं के साथ निरंतर संवाद कायम रख आंदोलन को नयी दिशा और गति प्रदान करे। अणुविभा की टीम यह कार्य ऑनलाइन संवाद सत्र और यात्राओं के माध्यम करती रही है।

बेंगलुरु

2 सितम्बर 2022 को अणुविभा केंद्रीय पदाधिकारियों का दल दक्षिण भारत की यात्रा पर पहुँचा। बेंगलुरु में आयोजित प्रबोधन कार्यशाला के साथ-साथ चेन्नई, मैसूर और मांड्या आदि समितियों की एक सप्ताह की यह संपर्क यात्रा अत्यंत सार्थक रही।

बेंगलुरु में 3 और 4 सितम्बर को दो दिवसीय अणुव्रत प्रबोधन कार्यशाला का आयोजन अणुविभा के तत्वावधान में बेंगलुरु अणुव्रत समिति द्वारा किया गया। मुनिश्री अर्हत कुमार जी का सान्निध्य कार्यशाला की उपादेयता को बढ़ाने वाला था।

मैं उदयपुर से, अणुविभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष अविनाश जी नाहर जयपुर से और महामंत्री श्री भीखम जी सुराणा दिल्ली से 2 तारीख को ही बेंगलुरु पहुँच गये थे। उपाध्यक्ष महेंद्र जी नाहर मैसूर से, बेंगलुरु से ही दक्षिणांचल के संगठन मंत्री कन्हैयालाल जी चिप्पड़, विजयवाड़ा से सहमंत्री विमल जी बैद, कर्नाटक राज्य प्रभारी द्वय ललित जी बाबेल व केसरीचंद जी गोलेछा भी कार्यशाला में मौजूद रहे। यह सब साथियों का स्नेह व सहयोग भाव ही है जो अणुव्रत के कार्य को प्रमुखता से आगे बढ़ाने में योगभूत बनता है।

अणुव्रत की दृष्टि से दक्षिण भारत एक महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। गत वर्ष भी हम दक्षिण भारत की एक यात्रा कर चुके हैं। यहां की अणुव्रत समितियों को और भी सक्रिय करने की अपेक्षा निरंतर अनुभव की जाती रही है। कार्यशाला में बेंगलुरु के अतिरिक्त चेन्नई, विजयवाड़ा, मैसूर, मांड्या, हुबली, विजयनगरम आदि समितियों का प्रतिनिधित्व रहा। संगठन व कार्यक्रमों से संबंधित अनेक मुद्दों पर चर्चा हुई। कार्यशाला में जीवन विज्ञान के राष्ट्रीय परामर्शक मूलचंद जी नाहर और जीवन विज्ञान के कर्नाटक संयोजक ललित जी आच्छा, परामर्शक हीरालाल जी मालू, कार्यसमिति सदस्य सुरेश जी दक, प्रकाश जी लोढ़ा आदि का भी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

कार्यशाला के आयोजन में बेंगलुरु समिति के अध्यक्ष शांतिलाल जी पोरवाल, मंत्री माणकचंद जी संचेती, संयोजक हरख चंद जी ओस्तवाल, सहसंयोजक धर्मेंद्र जी बरलोटा सहित पूरी टीम का अथक श्रम मुखरित हो रहा था। देश के विभिन्न भागों में इस तरह की कार्यशालाओं के निरंतर आयोजन की आवश्यकता और महत्ता स्वतः स्पष्ट हो रही थी।

कार्यशाला की समाप्ति के पश्चात् हमने अर्थ संकलन की दृष्टि से संपर्क का अभियान शुरू किया। इसका श्रीगणेश श्री प्रकाश जी बाबेल ने अणुव्रत संपोषक के रूप में ₹5 लाख का अनुदान प्रदान कर किया। बाबेल जी ने जिस आत्मीयता और उदारता के साथ यह सहयोग प्रदान किया, उससे पूरी टीम में एक नया उत्साह भर गया।

मूलचंद जी नाहर अणुविभा से सदैव आत्मीय भाव से जुड़े रहे हैं। इस बार भी आपने ₹5 लाख का चेक भेंट कर अणुव्रत आंदोलन व अणुव्रत कार्यकर्ताओं को अपना समर्थन व्यक्त किया। पूर्व में भी वे राजसमंद की बालोदय दीर्घाओं के नवीनीकरण हेतु ₹5 लाख का अनुदान दे चुके हैं।

श्री सुरेश जी दक अणुविभा से लंबे समय से जुड़े रहे हैं। वे स्वयं संस्था के संरक्षक सदस्य हैं। इस बार उन्होंने अणुव्रत संरक्षक के रूप में अपने भाई श्री रतनलाल जी दक की ओर से अनुदान स्वीकृत किया। वे हमारे साथ श्री गौतम जी सेठिया एवं श्री अमित जी नाहटा से मिलने भी चले और संस्था के कार्यों की बेहतरीन प्रस्तुति की। दोनों ही महानुभावों से संस्था को उदार अनुदान की पूर्ण आशा है। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के मुख्य ट्रस्टी श्री एम. सी. बलदोटा ने न सिर्फ अपने रेस्टोरेंट आईडीसी पर

हमें नाश्ते पर बुलाया बल्कि स्वप्रेरित हो अणुव्रत संरक्षक के रूप में ₹1 लाख के अनुदान की स्वीकृति भी प्रदान की।

श्री हीरालाल जी मालू के सहयोग से हाल ही में राजसमंद में तुलसी अणुव्रत दर्शन का नवीनीकरण हुआ है। आपकी धर्मपत्नी सायर देवी जी उदारता के एक अनुकरणीय उदाहरण के रूप में हमारे सामने हैं। मालू साहब के कार्यालय में मुलाकात का सुअवसर हमें मिला और आत्मीय वार्तालाप हुआ।

अणुव्रत समिति बेंगलुरु के अध्यक्ष श्री शांतिलाल जी पोरवाल की हाल ही में हार्ट की बाईपास सर्जरी हुई थी। उसके बावजूद वे कार्यशाला में दोनों दिन आये तथा हमें घर बुला कर सम्मान दिया। उन्होंने व उनके भाई साहब श्री बाबूलाल जी पोरवाल ने अर्थ सहयोग का भी भरोसा दिलाया। समिति के मंत्री श्री माणक जी संचेती के आवास पर भी हम सब ने प्रातराश का आनंद लिया और उन्होंने ₹21 हजार का सहयोग भी प्रदान किया। कार्यसमिति सदस्य श्री संजय जी धारीवाल के कार्यालय में मुलाकात हुई, अणुव्रत के अंतरराष्ट्रीय प्रकल्पों के संदर्भ में लंबी चर्चा हुई। उन्होंने भी ₹21 हजार की राशि प्रदान कर अपनी त्रैवार्षिक सदस्यता को आजीवन सदस्यता के रूप में अपग्रेड किया।

श्री लक्ष्मीपत जी दुधेडिया की सरलता और सादगी हमेशा आकर्षित करती है। बेंगलुरु में आपसे मिलने की दिली इच्छा थी। व्यस्तता के बावजूद आपने हमें एक घंटा समय दिया और बहुत ही आत्मीयता के साथ अनेक विषयों पर बातचीत हुई। बेंगलुरु में और अब छापर में अणुव्रत बालोदय किडजोन के लिए आपकी मातुश्री श्रीमती मंगलीदेवी जी की ओर से अनुदान आशीर्वाद स्वरूप हमें मिला है।

श्री कैलाश जी बोराना और श्री बद्रीलाल जी पितलिया, श्री ललित जी मांडोत, श्री प्रकाश जी लोढ़ा, श्री मनीष जी नवीन जी छाजेड़, नवरतन जी गांधी, श्री लादूलाल जी बाबेल से उनके घर पर मुलाकात अत्यंत आत्मीयता पूर्ण रही। सभी ने अणुविभा के नेतृत्व में चल रहे अणुव्रत के कार्यों में आये रचनात्मक बदलाव की प्रशंसा की और पूर्ण सहयोग का भरोसा दिलाया।

बेंगलुरु में प्रवासित शासनश्री साध्वीश्री कंचनप्रभाजी, शासनश्री साध्वीश्री शिवमालाजी एवं मुनिश्री रश्मि कुमार जी के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया, साथ ही अणुव्रत के संदर्भ में महत्वपूर्ण मार्गदर्शन और परामर्श प्राप्त हुआ। बेंगलुरु में कन्हैयालाल जी चिप्पड़, ललित जी बाबेल, राजेश जी चावत कई स्थानों पर हमारे साथ रहे। राजेश जी अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट के संयोजक हैं और इस प्रकल्प को सफल बनाने में काफी श्रम कर रहे हैं।

चेन्नई

7 और 8 सितम्बर को हमारा प्रवास चेन्नई में रहा। सुबह-सुबह रेलवे स्टेशन पर चेन्नई समिति के अध्यक्ष ललित जी आंचलिया के साथ ही अणुविभा के परामर्शक गौतम जी सेठिया जैसे वरिष्ठ व्यक्तित्व को देख कर हम संकोच में आ गये।

कार्यकर्ताओं को इस तरह प्रोत्साहित करना कोई सेठिया जी से सीखे। सुबह साध्वीश्री डॉ. मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में प्रवचन कार्यक्रम पूर्णतः अणुव्रत को ही समर्पित रहा। साध्वीश्री जी का प्रेरणादायी उद्बोधन हुआ। समणी, कुलपति और अब साध्वी के रूप में आपका सुदीर्घ अनुभव रहा है। अणुव्रत की दृष्टि से आपने उपयोगी मार्गदर्शन प्रदान किया। माधावरम में मुनिश्री सुधाकर जी के दर्शन किये। आप अणुव्रत प्राध्यापक मुनिश्री राकेशकुमार जी के साथ लंबे समय तक रहे हैं।

चेन्नई में आदरणीय श्री जुगराज जी नाहर से मुलाकात हमारा एक मुख्य लक्ष्य था। आप काफी दिनों से अस्वस्थ चल रहे हैं। आपके सुपुत्र और अणुविभा के उपाध्यक्ष भाई महेंद्र जी स्वयं अस्वस्थ थे, लेकिन बेंगलुरु के बाद अब चेन्नई भी हमें साथ देने आ गये थे। जुगराज जी साहब ने अणुविभा को सदैव आत्मीय सहयोग प्रदान किया है। शीघ्र ही आपके सौजन्य से अणुविभा को एक मोबाईल वैन प्राप्त हो रही है।

श्री गौतम जी सेठिया का आदरणीय मोती भाई रांका और निर्मल भाई के समय से ही अणुविभा के साथ घनिष्ठ जुड़ाव रहा है। चेन्नई किडजोन के संचालन में आपका व आपकी पौत्री कृतिका का अविस्मरणीय सहयोग रहा था। आपके यहां सुबह का भोजन लेकर हमने संपर्क का अभियान प्रारंभ किया। चेन्नई समिति अध्यक्ष भाई ललित जी लगातार हमारे साथ रहे।

श्री पुखराज जी बड़ोला लंबे समय से जैन विश्व भारती सहित अनेक संस्थाओं को अपनी सेवाएं देते रहे हैं। आप द्वारा अणुव्रत संपोषक के रूप में ₹5 लाख का सीएसआर अनुदान हमारी इस यात्रा की विशिष्ट उपलब्धि रही। आपके सुपुत्र हमारी चर्चा के दौरान मौजूद थे और अणुविभा की गतिविधियों एवं कार्यशैली को समझ कर जिस प्रकार उन्होंने इसे समर्थन प्रदान किया, वह हमारे उत्साह और विश्वास को बढ़ाने वाला था। युवा

वर्ग की अणुव्रत के सिद्धांतों में रुचि इस आंदोलन के शुभ भविष्य के प्रति आश्वस्त करती है।

टीपीएफ के उपाध्यक्ष डॉ. कमलेश जी नाहर का सरल संयत स्वभाव और सादगीपूर्ण जीवनशैली अणुव्रत के नजदीक जान पड़ती है। आपके घर आतिथ्य सत्कार का अवसर तो हमें मिला ही, आपके साथ से बालोदय दीर्घाओं के लिए ₹5 लाख का सीएसआर अनुदान भी सहज में प्राप्त हो सका। श्री राजेंद्र जी हीरावत ने हाथों-हाथ हमें चेक भेंट कर दिया।

श्री तनसुख जी नाहर और श्री रणजीत जी छलानी ने सहर्ष अणुव्रत संरक्षक के रूप में ₹1 लाख के अनुदान की हमें स्वीकृति प्रदान की। ट्रिपलिकेन सभा के अध्यक्ष श्री उगमराज जी सांड ने ₹25 हजार का सहयोग दिया। श्री मनोज जी सकलेचा, श्री सुकनराज जी परमार, श्री महेंद्र जी धोका, श्री राकेश जी बाफना, श्री निर्मल जी गादिया, श्री जयंतीलाल जी सुराणा, श्री विजयराज जी कटारिया से हमारी मुलाकात सुखद और सार्थक रही। सभी ने अपने सहयोग के प्रति हमें आश्वस्त किया। ये अवसर अपनी बात को कहने और समाज के चिंतन को जानने का एक रचनात्मक माध्यम होते हैं।

अणुव्रत समिति चेन्नई ने शाम के भोजन पर समिति के कार्यकर्ताओं सहित चेन्नई के गणमान्य जनों को आमंत्रित कर रखा था। 40 से अधिक लोग उपस्थित थे। सार्थक चर्चाएं हुईं, सुझाव आये और प्रश्नोत्तर का सत्र भी हुआ। चेन्नई समिति की युवा टीम में अच्छा उत्साह है और बेहतर समन्वय है। अणुव्रत आंदोलन को नया स्वरूप देने के लिए युवाओं को आगे लाना और मंच उपलब्ध कराना समय की जरूरत है। अणुव्रत समितियों में जहां-जहां युवा वर्ग ने मोर्चा संभाला है, एक बदलाव नजर आने लगा है। महिलाएं भी अनेक स्थानों पर अणुव्रत समितियों को अच्छा नेतृत्व प्रदान कर रही हैं।

मैसूरू

9 सितम्बर को हम मैसूरू और मांड्या के दौरे पर रहे। मैसूरू का कार्यक्रम हम गत वर्ष पूरा नहीं कर पाये थे। मेरी पत्नी संगीता की अचानक अस्वस्थता के समाचार आने से यात्रा के बीच ही मुझे लौटना पड़ा था। आज उस अधूरी यात्रा को पूर्ण होते देख संतोष का

अनुभव हो रहा था। भाई महेंद्र जी नाहर की आत्मीयता सदैव आकर्षित करती रही है। बहुत ही सरल और सुलझे हुए विचारों के धनी हैं आप।

मैसूरू एक अच्छी समिति है लेकिन मंत्री का अभाव इसकी सक्रियता में रुकावट बन रहा था। समिति के मंत्री श्री महावीर जी मारू को समाज की अपेक्षा को देखते हुए सभा का दायित्व संभालना पड़ा। यहां समाज की मीटिंग में अणुव्रत समिति के साथ ही विभिन्न संस्थाओं के प्रमुख लोग उपस्थित थे। सबकी सहमति से युवा और धीर गंभीर श्री सुरेश जी देरासरिया को मंत्री का दायित्व सौंपा गया। अध्यक्ष श्री शांतिलाल जी नौलखा और मंत्री श्री सुरेश जी निश्चय ही अब अणुव्रत समिति को एक नया रूप देने में सफल होंगे। मैसूरू में श्री हेमंत जी पितलिया ने अणुव्रत संरक्षक के रूप में ₹1 लाख का अनुदान देने को घोषणा की।

मांड्या

मांड्या में अणुव्रत की अच्छी पृष्ठभूमि रही है। जीवन विज्ञान का भी इस क्षेत्र में व्यापक काम हुआ है। श्री विनोद जी भंसाली यहां की अणुव्रत समिति के 5 सालों तक अध्यक्ष रहे लेकिन पिछले कुछ वर्षों से यहां का संगठन सक्रिय नहीं हो पाया। साध्वीश्री डॉ. गवेषणाश्री जी का यहां चतुर्मास चल रहा है।

साध्वीश्री जी के सान्निध्य में आयोजित बैठक में यह सर्वसम्मत राय सामने आयी कि अणुव्रत का कार्य यहां व्यवस्थित रूप से होना चाहिए। सबके आग्रह पर भंवरलाल जी गोखरू ने अध्यक्ष पद का दायित्व स्वीकार किया और नमिता जी भंसाली व मनीष जी बोहरा का क्रमशः मंत्री व कोषाध्यक्ष के रूप में चयन किया गया। राकेश जी भंसाली और भागचंद जी बाफना को उपाध्यक्ष एवं किरण जी भखेड़ा को सहमंत्री बनाया गया। साध्वीश्री की अच्छी प्रेरणा रही। श्री कन्हैयालाल जी चिप्पड़ और ललित जी बाबेल भी मांड्या पहुँच गये थे और समिति पुनर्गठन की प्रक्रिया में साथ रहे। उन्हीं के साथ हम पुनः बेंगलुरु की ओर लौट चले। इस प्रकार 7 दिन की यह अणुव्रत संपर्क यात्रा सकारात्मक ऊर्जा और उपलब्धियों से भरी रही।

बेंगलुरु में दो दिवसीय अणुव्रत प्रबोधन कार्यशाला का आयोजन

अणुविभा के तत्वावधान में अणुव्रत समिति, बेंगलुरु द्वारा दो दिवसीय "अणुव्रत प्रबोधक कार्यशाला" का आयोजन अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनिश्री अर्हत कुमारजी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा भवन, गांधीनगर में हुआ। कार्यशाला में बेंगलुरु, चेन्नई, विजयनगरम, विजयवाड़ा, मांड्या, मैसूर, हुबली, हैदराबाद आदि अणुव्रत समितियों का प्रतिनिधित्व रहा।

'अणुव्रत आंदोलन में कार्यकर्ता का महत्व' विषयक प्रारंभिक सत्र में मुनिश्री अर्हत कुमारजी ने प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि अणुव्रत प्रदर्शन नहीं, आत्मदर्शन का नाम है। अणुव्रत एक दूसरे को जोड़ने में एक सेतु का काम करता है। अणुव्रत जाति संप्रदाय से ऊपर उठा हुआ है। गुरुदेव तुलसी ने एक लाख किमी की यात्रा कर देश की जनता को अणुव्रत के माध्यम से जगाया। अणुव्रत कार्यकर्ता को इसके दर्शन के अनुरूप कार्य करना चाहिए।

अणुविभा के अध्यक्ष संचय जैन ने अपने विषय पर विचार रखते हुए कहा कि अणुव्रत को जानने और अणुव्रत को अपनाने में जो अंतर है, कार्यकर्ताओं को निरंतर प्रयास से इसे समाप्त करना होगा। कार्यकर्ता में नैतिकता व शुचिता की जागरुकता होनी चाहिए।

मुनिश्री जयदीप कुमार जी ने अणुव्रत गीत का संगान किया एवं अणुव्रत द्वारा व्यक्ति को कैसे जीवन जीना चाहिए, इस पर प्रकाश डाला । मुनिश्री भरत कुमार जी ने अपने उद्बोधन में महाव्रत व अणुव्रत की विशेषता की जानकारी देते हुए अणुव्रत से जीवन का विकास एवं आत्मा का कल्याण करने का आह्वान किया। अणुव्रत समिति अध्यक्ष शांतिलाल पोरवाल ने स्वागत वक्तव्य दिया। उपाध्यक्ष देवराज रायसोनी ने 'अणुव्रती बनकर' गीतिका की प्रस्तुति दी।

अणुविभा के संगठन मंत्री कन्हैयालाल चिप्पड़, गांधीनगर सभा अध्यक्ष कमल दुग्गड़, अखिल भारतीय जैन कांफ्रेंस के अध्यक्ष पुखराज मेहता ने भी विचार व्यक्त किये। कुशल संचालन मंत्री माणकचंद संचेती ने किया व सभी के प्रति आभार सहमंत्री प्रवीण बोहरा ने व्यक्त किया। उद्घाटन सत्र के पश्चात् परिचय सत्र आयोजित हुआ। इस सत्र में महासभा के पूर्व अध्यक्ष हीरालाल मालू, टीपीएफ के पूर्व अध्यक्ष संजय धारीवाल, अभातेयुप के पूर्व कोषाध्यक्ष कैलाश बोराणा ने विचार व्यक्त किये।

अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष संचय जैन, महामंत्री भीखम सुराणा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष अविनाश नाहर, उपाध्यक्ष महेंद्र नाहर, संगठन मंत्री कन्हैयालाल चिप्पड़, कर्नाटक राज्य प्रभारी ललित बाबेल एवं केसरीचंद गोलछा, कार्यसमिति सदस्य सिद्धार्थ शर्मा

ने 'अणुव्रत आंदोलन की प्रमुख प्रवृत्तियाँ व प्रकल्प' तथा 'अणुव्रत संगठन चुनौतियाँ और दायित्व' विषयक सत्रों में संभागियों के साथ संवाद किया और उनकी जिज्ञासाओं का समाधान किया। जीवन विज्ञान विषय सत्र में राष्ट्रीय परामर्शक मूलचंद नाहर एवं जीवन विज्ञान के कर्नाटक संयोजक ललित आच्छा ने कर्नाटक सरकार के सहयोग से राज्य में जीवन विज्ञान को पाठ्यक्रम में शामिल करने की दृष्टि से हो रहे कार्यों की अवगति दी। सभी ने इसे एक बड़ी उपलब्धि मानते हुए आपके प्रयासों का अभिनंदन किया। रामलाल गन्ना, हस्तीमल हिरण, समिति सहमंत्री धर्मेंद्र बरलोटा, संगठन मंत्री निर्मल पोकरणा, रूपचंद देसरला ने भी अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। कुशल संचालन अणुविभा सहमंत्री विमल जी बैद ने किया एवं आभार अणुव्रत समिति के पूर्व अध्यक्ष प्रकाश लोढ़ा ने माना।

समापन सत्र में 'वैश्विक परिदृश्य और अणुव्रत दर्शन की प्रासंगिकता' विषय पर मुनिश्री अर्हत कुमार जी ने प्रेरक उद्बोधन दिया। उन्होंने कहा कि मानव में मानवता नहीं है तो मानव भी दानव है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि अणुव्रती के कथनी और करनी में अंतर नहीं होता। अणुव्रत खुद को निहारने का उपक्रम है। अगर खुद को बदल दिया तो जीवन अपने आप सुधर जाएगा।

मुनिश्री भरत कुमार जी, अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष संचय जैन, वरिष्ठ उपाध्यक्ष अविनाश नाहर, महामंत्री भीखम सुराणा, मदुरै सभा अध्यक्ष श्री अशोक जीरावाला ने विचार व्यक्त किये। कुशल संचालन कोषाध्यक्ष एवं कार्यशाला के संयोजक हरकचंद ओसवाल ने किया एवं समिति अध्यक्ष श्री शांतिलाल पोरवाल ने सभी के प्रति आभार माना। अणुव्रत समिति की महिला सदस्यों ने 'संयममय जीवन हो' गीतिका प्रस्तुत की।

बेंगलुरु समिति के कोषाध्यक्ष एवं कार्यशाला संयोजक श्री हरकचंद ओसवाल, सह संयोजक धर्मेंद्र बरलोटा एवं समस्त टीम ने अत्यंत समर्पण भाव से कार्यशाला की सफलता में अपना योगदान दिया। उपाध्यक्ष सुरेश मुणोत, सहमंत्री प्रवीण बोहरा, संगठन मंत्री निर्मल पोकरणा, कार्यसमिति सदस्य रूपचंद देसरला, जवेरीलाल दुग्गड़, भेरूलाल पोखरना, सज्जनराज पितलिया, सूरज कुमार पितलिया, शांति सकलेचा, राजेंद्र बैद, संपत चावत, विनय बैद आदि की भी कार्यशाला में सहभागिता रही।

इसके अतिरिक्त चेन्नई समिति से ललित आंचलिया, उषा कुमारी आचलिया, विजयवाड़ा समिति से राजेंद्र कोठारी, सुनील तातेड, हुबली समिति से केसरीचंद गोलछा, महेंद्र पालगोता, मांड्या समिति से विनोद कुमार भंसाली, हैदराबाद समिति से प्रकाशचंद भंडारी, विजयराज आंचलिया, संतोष आंचलिया, मैसूर समिति से महेंद्र नाहर की उपस्थिति रही।

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

epaper.dakshinbharat.com

04 Sep 2022 - Page 8

अणुव्रत प्रदर्शन नहीं, आत्मदर्शन का नाम है : मुनि अर्हतकुमार

दो दिवसीय अणुव्रत प्रबोधक कार्यशाला का आयोजन

दो दिवसीय अणुव्रत प्रबोधक कार्यशाला

एक-दूसरे को जोड़ता है अणुव्रतः मुनि अर्हत कुमार

पत्रिका न्यूज नेटवर्क

गाँधीनगर,बेंगलुरु-दो दिवसीय अणुव्रत प्रबोधक कार्यशाला का आयोजन

'अणुव्रत खुद को निहारने का उपक्रम'

पत्रिका न्यूज नेटवर्क

DAILY शुभ लाभ

अणुव्रत खुद को निहारने का उपक्रम है : मुनिश्री अर्हत कुमार

अणुव्रत प्रबोधक कार्यशाला : बेंगलुरु

दो दिवसीय अणुव्रत प्रबोधक कार्यशाला का आयोजन : अणुव्रत समिति, बेंगलुरु

ABTYP JTN से - रवि सामरा - न्यूज : प्रवीण बोहरा

ABTYP JTN से - रवि सामरा - न्यूज : प्रवीण बोहरा

अणुव्रत सम्पर्क यात्रा

पश्चिम महाराष्ट्र क्षेत्र

■■ अणुविभा संगठन मंत्री विनोद कोठारी की रिपोर्ट ■■

अणुविभा उपाध्यक्ष श्री राजेश सुराणा, कार्यकारिणी सदस्य श्री उत्तमचंद पगारिया, महाराष्ट्र राज्य प्रभारी श्री रमेश धोका तथा एसीसी की महाराष्ट्र सह संयोजिका श्रीमती पुष्पा कटारिया के साथ मैंने 21-22 अगस्त 2022 को पश्चिम महाराष्ट्र क्षेत्र की संगठन यात्रा की। मुम्बई चतुर्मास के बाद अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी के इस क्षेत्र में पदार्पण की संभावना और अणुव्रत आंदोलन के अमृत महोत्सव के संदर्भ में यह अणुव्रत संपर्क यात्रा अत्यंत उपयोगी बनी।

सोलापुर

20 अगस्त की रात्रि में सूरत से श्री राजेश सुराणा तथा मुम्बई से मैं व श्री रमेश धोका ट्रेन द्वारा अणुव्रत संपर्क यात्रा पर रवाना हुए। हमारी यात्रा का पहला पड़ाव था सोलापुर। सोलापुर में सभाध्यक्ष श्री तिलोक बोथरा व मंत्री श्री चेतन सुराणा द्वारा स्टेशन पर स्वागत व वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री कैलाश कोठारी के आवास पर

सत्कार के बाद हम स्थानीय नवनिर्मित तेरापंथ भवन में आयोजित कार्यक्रम में पहुँचे। यहां स्थानीय पदाधिकारियों के साथ ही एसीसी की महाराष्ट्र सह संयोजिका श्रीमती पुष्पा कटारिया भी यात्रा में सहयोगी बनीं। इस कार्यक्रम में ज्ञानशाला दिवस व संगठन यात्रा का द्विआयामी आयोजन हुआ। स्थानीय ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा सुंदर प्रस्तुति के बाद अणुव्रत समिति सोलापुर के नवगठन की प्रक्रिया सम्पन्न हुई। कार्यक्रम में उपाध्यक्ष श्री राजेश सुराणा ने अणुव्रत के सिद्धांतों व दार्शनिक पृष्ठभूमि की चर्चा की। मैंने संगठन के कार्यों व नियमों की व्याख्या करते हुए चुनाव/मनाव प्रक्रिया संपन्न करवायी। सोलापुर अणुव्रत समिति की प्रथम अध्यक्ष श्रीमती वीणा सुराणा व मनोनीत मंत्री श्रीमती फाल्गुनी मांडोत को श्री राजेश सुराणा ने शपथ ग्रहण करवाते हुए उन्हें अणुव्रत किट प्रदान की। कार्यक्रम को श्री रमेश धोका व श्रीमती पुष्पा कटारिया ने भी संबोधित किया।

इस आयोजन में मूर्तिपूजक समाज, स्थानकवासी समाज, जैन सोशियल ग्रुप के पदाधिकारी सहित सभाध्यक्ष श्री तिलोक बोथरा, मंत्री श्री चेतन सुराणा, तेयुप अध्यक्ष श्री भावेश सेठिया, महिला मंडल अध्यक्ष आशा सेठिया, मुख्य मुनिश्री महावीर कुमारजी के संसारपक्षीय भाई श्री मोहनलाल जी, पारस जी व शांतिलाल जी कोचर भी उपस्थित रहे। यहां के तेरापंथ समाज के लोगों का जैन व जैनेतर सम्प्रदाय से सौहार्द व सम्पर्क प्रगाढ़ है, जिससे अणुव्रत आंदोलन का इस क्षेत्र में अच्छा कार्य हो सकता है।

सांगली

अणुविभा टीम ने करीब दो घंटे देरी से सोलापुर से सांगली हेतु प्रस्थान किया। करीब 190 कि.मी. की दूरी हमने 3.30 घंटे में तय की व शाम 5.30 बजे सांगली के उपनगर माधवनगर में डॉ. विजय संचेती के आवास पर पहुँचे। डॉ. संचेती अनेक वर्षों से इस

क्षेत्र में अणुव्रत का कार्य कर रहे हैं। उन्होंने बहुत वर्षों पहले ट्रस्ट रजिस्ट्रेशन भी करवाया था, जो इन दिनों निष्क्रिय सा है। संचेती जी जैन विद्या के राष्ट्रीय संयोजक का दायित्व भी निभा रहे हैं। यहां हमारे साथ अणुविभा कार्यसमिति सदस्य श्री उत्तमचंद पगारिया भी जुड़ गये। पगारियाजी का पश्चिम महाराष्ट्र में अच्छा सम्पर्क है। माधवनगर में हमने अणुव्रत के कार्यों की संभावनाओं के बारे में चिंतन किया व सांगली क्षेत्र में अगले कुछ दिनों में अणुव्रत समिति के गठन के आश्वासन के साथ हम 32 कि.मी. दूर

इचलकरंजी पहुँचे, तब तक घड़ी शाम 7 बजे का समय बता रही थी। वहां अणुविभा टीम के स्वागत हेतु अच्छी संख्या में स्थानीय संस्थाओं के पदाधिकारी व कार्यकर्ता उपस्थित थे। टेक्सटाइल नगरी व महाराष्ट्र के 'मैनचेस्टर' के रूप में प्रख्यात इचलकरंजी में इस वर्ष साध्वीश्री प्रमिलाकुमारी जी का चतुर्मास है। अणुविभा टीम ने साध्वीवृंद के दर्शन किये और उन्हें अणुविभा की गतिविधियों की जानकारी दी। वहां उपस्थित संघीय संस्थाओं के पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं के साथ आयोजित संगोष्ठी में साध्वीश्री ने अणुव्रत की चर्चा करते हुए इचलकरंजी को अच्छी संभावनाओं वाला क्षेत्र बताया।

राजेश जी सुराणा ने अणुव्रत आंदोलन की वर्तमान प्रवृत्तियों तथा मैंने अणुविभा की संगठनात्मक संरचना की जानकारी दी। अनेक श्रोताओं की जिज्ञासाओं का समाधान भी अणुविभा टीम ने किया। संगोष्ठी में सभाध्यक्ष श्री महेन्द्र गिरिया, मंत्री श्री पुष्पराज संकलेचा सहित तेयुप के अनेक सदस्य उपस्थित रहे। सभी लोगों ने इचलकरंजी में अणुव्रत समिति के गठन की आवश्यकता महसूस की व निकट भविष्य में इसके गठन हेतु अणुविभा टीम को आश्वस्त किया। सभा मंत्री श्री पुष्पराज संकलेचा के आवास पर हमने शाम के भोजन का आनंद लिया। देर रात तक संगोष्ठी चलने के कारण रात्रि प्रवास इचलकरंजी में ही हुआ। श्री उत्तमचंद पगारिया का अनुभव, श्रीमती पुष्पा कटारिया के सम्पर्क व श्री रमेश धोका के कार्य के प्रति समर्पण ने यात्रा को उपलब्धिपरक बना दिया।

पुणे

हमारा अगला पड़ाव था महाराष्ट्र की सांस्कृतिक राजधानी पुणे। इचलकरंजी से प्रातः 5 बजे साध्वीश्री प्रमिला कुमारी जी से मंगलपाठ श्रवण कर करीब 240 कि.मी. यात्रा हेतु पुणे रवाना हुए। हमने प्रातराश मार्ग में ही कर लिया था, अतः सीधे पुणे के

नवनिर्मित सभा भवन में साध्वीश्री काव्यलताजी के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में पहुँचे। कार्यक्रम में पुणे का श्रावक समाज अच्छी संख्या में उपस्थित था। चूँकि पुष्पा जी महिला मंडल पुना की अध्यक्ष भी हैं, अतः उनके निर्देश पर स्थानीय स्तर पर अच्छी तैयारी थी। पुणे क्षेत्र अभी तक अणुव्रत आंदोलन व इसके कार्यक्रमों से इतना जुड़ा नहीं है। कार्यक्रम में राजेश जी सुराणा ने अणुव्रत और इसके कार्यक्रमों के बारे में विचार रखे। साध्वीश्री काव्यलता जी ने भी इस क्षेत्र में अणुव्रत के प्रचार-प्रसार में पूर्ण योगदान देने की भावना व्यक्त की। मैंने संगठनात्मक संरचना की जानकारी देते हुए अणुव्रत समिति पुणे के गठन की प्रक्रिया संपन्न करवायी। उपाध्यक्ष श्री राजेश सुराणा ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री धर्मेन्द्र चोरड़िया व टीम को शपथ ग्रहण करवायी। नव मनोनीत अध्यक्ष ने श्री हरीश श्रीश्रीमाल को मंत्री के रूप में मनोनीत किया। पुणे क्षेत्र में अणुव्रत को एक नयी शुरुआत करनी है, जिसके लिए शिक्षा नगरी के रूप में विख्यात पुणे एक उर्वरा भूमि है। नियमित सिंचन व सार-संभाल से इस क्षेत्र में अच्छा कार्य हो सकता है।

पूर्व राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल से भेंट

कार्यक्रम के पश्चात् ज्ञात हुआ कि देश की पूर्व राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल जी अभी पुना में ही निवास करती हैं। पुष्पाजी कटारिया ने अपने संपर्कों का उपयोग कर उनसे मुलाकात का समय निश्चित किया और हम सभी दोपहर एक बजे श्रीमती प्रतिभा पाटिल के औंध स्थित निवास स्थान पर सद्भावना भेंट हेतु पहुँचे। उनसे अणुव्रत आंदोलन के बारे में विस्तार से चर्चा हुई व ए.सी.सी. के बैनर का अनावरण किया गया। पूर्व राष्ट्रपति प्रतिभा

पाटिल ने आचार्य श्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के साथ अपने संस्मरणों को याद करते हुए राजस्थान के राज्यपाल के दायित्व निर्वाह के दौरान जयपुर और सरदारशहर में आयोजित अनेक कार्यक्रमों की यादें ताजा कीं। उन्होंने अणुव्रत संकल्प पत्र को समर्थन देते हुए संकल्प पत्र पर अपने हस्ताक्षर भी किये।

पश्चिम महाराष्ट्र की संगठन यात्रा की सफलता व सानंद संपन्नता के साथ पूर्व राष्ट्रपति महोदया से मुलाकात हमारे संतोष को शतगुणित कर रही थी।

मनोरंजन व ज्ञान की पाठशाला

■ ■ संयोजक ज्योति दूधोड़िया की रिपोर्ट ■ ■

Anuvrat Balodaya's

KIDZONE

Fun | Creativity | Learning

अणुव्रत विश्व भारती की ओर से छापर में आचार्य श्री महाश्रमण चतुर्मास प्रवास स्थल के पास बच्चों के स्वस्थ मनोरंजन व संस्कार निर्माण के उद्देश्य से अणुव्रत बालोदय किडजोन बनाया गया है। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के दर्शनों के लिए आने वाले श्रावक-श्राविकाओं के बच्चों के साथ ही आसपास के इलाकों के बच्चे प्रतिदिन यहां कैरमबोर्ड, शतरंज समेत अन्य खेलों में सहभागिता के साथ ही स्लाइडिंग, रबड़ के घोड़ों व गाड़ियों पर मस्ती करते हैं। रविवार और अवकाश के दिनों में बच्चों का उत्साह देखते ही बनता है।

■ 4 सितम्बर को पूर्वी दुधोड़िया ने किडजोन में बच्चों को पेपर को मोड़कर आकर्षक कलाकृतियाँ बनाना सिखाया।

■ वहीं 11 सितम्बर को बच्चों ने अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी का 5 फुट गुणा 5 फुट साइज का विशाल स्केच बनाया।

■ 18 सितम्बर को छापर के ही जादूगर बंटी भैया किडजोन पहुँचे। उन्होंने बच्चों को जादू दिखाने के साथ ही उसके पीछे के राज भी बताये और समाज में व्याप्त अंधविश्वासों को मिटाने की सीख दी।

ज्योति दुधोड़िया के संयोजकत्व में गोविंद सारस्वत, ममता गोस्वामी, माया गोस्वामी और राकेश मौर्य की टीम किडजोन में निरंतर अपनी सेवाएं दे रही है।

आजादी का अमृत महोत्सव
अणुव्रत समितियों द्वारा संपादित कार्य

■ ■ राष्ट्रीय संयोजक सुबोध दुगड़ की रिपोर्ट ■ ■

- भारतवर्ष ने अपनी आजादी के 75 वर्षों का सफर तय कर अमृत महोत्सव मनाया। अणुव्रत आन्दोलन भी अगले वर्ष से अपने आन्दोलन का अमृत महोत्सव मनाएगा। ऐसे में अणुव्रत विश्व भारती (अणुविभा) ने अणुव्रत समितियों के माध्यम से भारत की आजादी के अमृत महोत्सव को अणुव्रत के परिप्रेक्ष्य में अंकन करने का महनीय बीड़ा उठाया। अणुव्रत समितियों को वक्तव्य, कवि-सम्मेलन, रूपक, वाद-विवाद प्रतियोगिता, निबन्ध प्रतियोगिता के माध्यम से इस कार्यक्रम को सम्पादित करने के निर्देश प्रदान किये गये।
- आप सबके साथ शेयर करते हुए मुझे अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमणजी की कृपा से "असली आजादी अपनाओ" कार्यक्रम को अणुव्रत समितियों ने बहुत ही शानदार ढंग से आयोजित किया। देश के लगभग सभी हिस्सों से अणुव्रत समितियों ने जोर-शोर से 45 से अधिक कार्यक्रमों का आयोजन किया। चारित्रात्माओं के सान्निध्य में स्कूली बच्चों से लेकर राजनेताओं और विद्वानों के मध्य कार्यक्रमों की आयोजना से अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी की असली आजादी अपनाओ की गूँज एक बार फिर गुंजायमान हुई।
- मैं हृदय की असीम गहराइयों से प्रणत हूँ अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमणजी के प्रति जिनकी कृपा से यह कार्यक्रम सफल हुआ। कृतज्ञता अणुविभा आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मननकुमार जी के प्रति जिनका मार्गदर्शन हमें निरन्तर गतिशील बनाये रखता है। कृतज्ञ भाव सभी चारित्रात्माओं के प्रति जिन्होंने चातुर्मासिक कार्यक्रमों के बावजूद इस कार्यक्रम को महत्ता देकर इसे सफल बनाया। आभार एवं धन्यवाद अणुविभा अध्यक्ष भाई श्री संचय जैन के प्रति जिन्होंने इतने महत्वपूर्ण कार्यक्रम का संयोजकीय दायित्व मुझे सौंपा। आभार एवं धन्यवाद सभी अणुव्रत समितियों के सक्रिय सहयोगियों का जिनकी वजह से ही हम असली आजादी अपनाओ कार्यक्रमों को इतने शानदार तरीके से आयोजित कर पाये।
- एक बार पुनः आप सभी के प्रति अत्यन्त आभार-धन्यवाद एवं यही शुभेच्छा हम सब मिल - जुलकर निरन्तर अणुव्रत की अलख जलाये रखेंगे।
- इन अणुव्रत समितियों ने रैली, परिचर्चा, संगोष्ठी, कवि सम्मेलन, वाद-विवाद, ड्राइंग प्रतियोगिता, नृत्य-नाटक, सांस्कृतिक संध्या आदि के आयोजनों से "आजादी का अमृत महोत्सव" को लेकर अणुव्रत विश्व भारती की संकल्पना को अर्थपूर्ण बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। मुंबई समेत कई अणुव्रत समितियों ने तो अपने क्षेत्र में एक से अधिक कार्यक्रम आयोजित किये।

- अजमेर
- आमेट
- बरपेटा रोड
- बोईसर
- चेन्नई
- दिल्ली
- फारबिसगंज
- हावड़ा
- जयपुर
- किशनगंज
- मोमासर
- पालघर
- सिरसा
- टोहाना
- विजयवाड़ा
- अहमदाबाद
- बीकानेर
- बल्लारी
- भीलवाड़ा
- कटक
- दालखोला
- गुवाहाटी
- कोलकाता
- जोधपुर
- कोटा
- मुंबई
- सिलीगुड़ी
- तेजपुर
- उदयपुर

चित्रदीर्घा

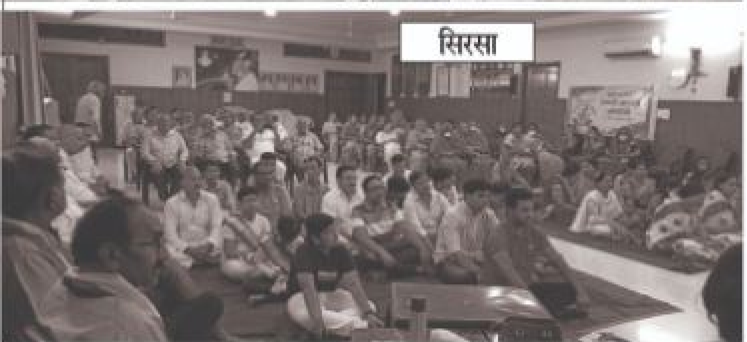

आजादी का अमृत महोत्सव

- 'असली आजादी अपनाओ' कार्यक्रम के अंतर्गत निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विषय था 'आजादी के अमृत महोत्सव पर आत्मावलोकन-अणुव्रत की नजर से'। अनेक प्रतिभागियों ने इस हेतु हमें निबंध प्रेषित किये। सभी ने विषय को अपनी शैली में व्याख्यायित किया। निबंध प्रतियोगिता के प्रतिभागियों में कई लेखकों ने विस्तृत निबंध लिखे, शब्द सीमा का ध्यान रखा। निबंध प्रतियोगिता में स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागी निम्नानुसार हैं :-

- प्रथम स्थान : **श्रीमती उर्मिला चोरड़िया, मांडुप**
- द्वितीय स्थान : **प्रेक्षा एच. ढीलीवाल, डोम्बिवली**
- तृतीय स्थान : **श्री अरिहंत चोपड़ा, पाली**

प्रथम स्थान पर चयनित निबंध

"आत्म निर्णय में अतुल बल, अणुव्रत का है अमर फल।
अणुबम से कम नहीं, अणुव्रत का नारा।
एक दिन मिलेगा, सुख सागर का किनारा।"

अणुव्रत किसी सीमा में आबद्ध नहीं है, उत्कर्ष तक पहुँचने का यह प्रयास है। संकीर्णता के कठघरे से निकाल आपसी सौहार्द बढ़ाता है। विचार हमारी जीवनयात्रा, विकास यात्रा का एक महत्वपूर्ण घटक है। आत्मनिरीक्षण के सम्बन्ध में अलग-अलग परिभाषाएँ मिलती हैं, किन्तु सब का सार यही है कि जो आत्म-विकास में सहायक बनता है, जिससे मानवीय गुणों का विकास होता है और जो जीने की सही कला सिखाता है, वही आत्मावलोकन है।

धार्मिक साहित्य में जगह-जगह कहा गया कि मानव जीवन दुर्लभ है इस मानव जीवन का सदुपयोग करना चाहिए और पूरा लाभ उठाना चाहिए क्योंकि आत्मा का दर्शन, आत्मा की प्राप्ति अथवा मोक्ष की प्राप्ति इस मानव जीवन से ही सम्भव है। अपना आत्मचिंतन, आत्ममंथन और आत्मनिरीक्षण करते हुए हमें निर्मल, पावन और अणुव्रती बनने की भावना आये। जागरुकता का प्रारम्भ स्वयं से ही होना चाहिए। सर्वप्रथम हम स्वयं अपने प्रति जागरूक बनें। केवल स्वतंत्र हो जाने से ही सारी समस्याओं का हल नहीं हो जाता। स्वतंत्रता के बाद और भी ईमानदारी के साथ काम करने की आवश्यकता है। आज का युग भेड़चाल की तरह काफी आगे बढ़ रहा है, लेकिन उसका परिणाम अच्छा नहीं है। जो देखा-देखी करेगा उसको पश्चात्ताप करना पड़ेगा। हम प्रसन्न हैं कि जो अभियान आचार्य श्री तुलसी ने चलाया उसे आचार्य श्री महाश्रमणजी देश के नैतिक धरातल को ऊँचा उठाने के लिए सतत प्रयत्न कर रहे हैं।

"अणुव्रत इंसान को इंसान बनाना चाहता है, अणुव्रत गिरे हुए को उठाना चाहता है,
नहीं चाहता है और कुछ भी अणुव्रत, वह तो समाज का, देश का सुधार चाहता है?"

आज देश भयावह दौर से गुजर रहा है। हिंसा, भ्रष्टाचार अपने पैर फैलाते जा रहे हैं। यही कारण है अनैतिकता के कारनामों को बढ़ावा मिल रहा है। मानवता सिसक रही है। मनुष्य का मन दूषित हो रहा है, भाई-भाई के बीच प्रेम समाप्त हो रहा है। ऐसे विषम माहौल में अणुव्रत ऐसे नियमों का दस्तावेज है जो प्रत्येक मनुष्य की अन्तर्निहित शक्तियाँ ही हैं। देश को आज बाहरी स्वतंत्रता के साथ आंतरिक मूल्यों की ही आवश्यकता है। मानवीय मूल्यों की न्यूनतम आचार संहिता है अणुव्रत । अणुव्रत छोटे-छोटे नियमों का दस्तावेज है। आज अणुव्रत जैसे नियमों की नितान्त आवश्यकता महसूस की जा रही है। यह युगीन समस्याओं का समाधान है। अणुव्रत किसी जाति, वर्ग, भाषा या स्थान से अनुबद्ध नहीं है। कभी भी कोई भी इसका पालन कर सकता है। यह मानवीय एकता का महान सूत्र है। आज पूरी युग धारा भौतिकता के प्रवाह में बह रही है। नित नवीन भौतिक साधन ईजाद हो रहे हैं, फिर भी मनुष्य बेचैन है। इस समस्या से निजात पाने हेतु युग प्रधान आचार्य श्री तुलसी ने युग को एक घोष दिया - "बदले युग की धारा, अणुव्रतों के द्वारा"।

धर्म किसी संप्रदाय का नहीं आत्मा का है, यह कहते हुए हर कार्य में धर्म और अणुव्रत को मनन करने का महत्व उजागर करने का ही संकल्प हो। इसको पालन करने वाला किसी भी धर्म या भगवान को माने, उसकी अपनी आस्था है। बस इंसानियत को प्रथम स्थान दे। देश का हर व्यक्ति सादगी और संयम का जीवन जीये। साथ ही सत्य पर आस्था हो, न्याय मार्ग पर चलने का साहस हो । त्याग और संकल्प के साथ देश का बहुत विकास हो सकता है। हमारी आजादी का सही मायने में लाभ हमें तभी मिल सकता है।

"आओ हम सब देशवासी मिलकर, आजादी के अमृत महोत्सव पर,
मनन करें, निरीक्षण करें, अणुव्रतों का पालन करें,
आचार्य तुलसी के इस अवदान का अनुगमन करें,
लें छोटे- छोटे संकल्प प्रतिदिन, न करें हिंसा व दुराचार,
नैतिकता का रहे आचरण साथ, तभी तो होगा अणुव्रत का संकल्प साकार।"

पाठकों के लिए
विशेष प्रतियोगिता

अणुव्रत Q10

आपको करना है बस इतना →

- 'अणुव्रत पत्रिका' के जुलाई 2022 अंक को ध्यानपूर्वक आद्योपांत पढ़ना
- जुलाई 2022 अंक पर आधारित 10 सरल प्रश्नों के उत्तर प्रेषित करना

जुलाई 2022 अंक पर आधारित प्रश्न

01. भाषा किसकी अनुगामिनी होती है?
02. अल्पायु का सबसे बड़ा कारण क्या है ?
03. हम प्रतिवर्ष विश्व शांति दिवस कब मनाते हैं ?
04. स्वस्थ जीवन की आधारभूत भूमिका क्या है?
05. नॉन-किलिंग पॉलिटिकल साइंस का जनक किसे कहा जाता है ?
06. अणुविभा के स्कूल विद् ए डिफरेंस कार्यक्रम के संयोजक कौन हैं ?
07. अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता 2021 के प्रथम चरण में कुल कितने प्रतियोगी शामिल हुए ?
08. कौन-सा सिद्धांत यह बताता है कि मानवीय प्रकृति का विकास वैयक्तिक संपर्कों पर आधारित है ?
09. किस अणुव्रत समिति द्वारा चलें अणुव्रत की ओर कार्यक्रम में 43 सरपंचों का सम्मान किया गया ?
10. अणुव्रत अनुशास्ता की षष्टिपूर्ति पर प्रकाशित अणुव्रत पत्रिका के विशेषांक का क्या नाम रखा गया?

ज्ञातव्य बिंदु

- प्रतियोगिता के प्रश्न जुलाई 2022 के अंक पर आधारित।
- परिवार के एक सदस्य की प्रविष्टि ही मान्य होगी।
- प्रतिभागी उत्तर के साथ पता और मोबाइल नं. अवश्य उल्लेख करें।
- उत्तर संक्षेप में दें। पत्रिका में उल्लेखित शब्द ही मान्य होंगे।
- काट-छांट व शब्दों में त्रुटि होने पर अंक काट लिये जायेंगे।
- सर्वाधिक सही उत्तर लिखकर भेजने वाला पाठक विजेता होगा।
- एकाधिक विजेता होने की स्थिति में लॉटरी द्वारा निर्धारण होगा।
- विजेता का नाम मय फोटो पत्रिका में प्रकाशित किया जायेगा।
- सही उत्तरदाताओं के नाम का पत्रिका में उल्लेख होगा ।

उत्तर इस पते पर भेजें

अणुव्रत विश्व भारती
अणुव्रत भवन,
210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली–110002
मो : 91166 34512
anuvrat.patrika@anuvibha.org

आकर्षक पुरस्कार

विजेता
- नकद रु. 2100/-
- अणुव्रत पत्रिका की त्रैवार्षिक सदस्यता

प्रोत्साहन - दो
- नकद रु. 1100/-
- अणुव्रत पत्रिका की एक वर्षीय सदस्यता

उत्तर प्राप्ति की अंतिम तिथि
15 अक्टूबर, 2022

सितम्बर 2022 अंक में प्रकाशित प्रतियोगिता के परिणाम

(अप्रेल 2022 अंक पर आधारित)

एकाधिक विजेता होने के कारण निर्णय लॉटरी द्वारा किया गया, जो इस प्रकार है -

विजेता

सुनीता पारख
सिरसा

-:: प्रोत्साहन पुरस्कार ::-

सीमा तातेड़
नोहर

राजेन्द्र कुमार जैन
पचपदरा

अन्य सही उत्तरदाताओं के नाम :

विजय कुमार जैन	लता गुप्ता
प्रणत धींग	ए.पी. माथुर
सारिका कोठारी	अलका सांखला
पुष्प सकलेचा	कीर्ति जैन
मीनाक्षी शर्मा	विजया चोपड़ा
ममता जैन	संगीता चोपड़ा
जिनेश चोपड़ा	सरस्वती देवी जैन
सरला कोठारी	सरोज चोरड़िया
सुशीला गोलछा	सिद्धि जैन

अणुव्रत Q10 प्रतियोगिता

प्रश्नों के सही उत्तर

उत्तर 01	खाद्य संयम	पृ. 06
उत्तर 02	साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी	पृ. 25
उत्तर 03	मनुष्य	पृ. 12
उत्तर 04	राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी	पृ. 26
उत्तर 05	मस्तिष्कीय चेतना	पृ. 09
उत्तर 06	आचार्य तुलसी का	पृ. 05
उत्तर 07	संजय जैन	पृ. 28
उत्तर 08	व्यक्ति के	पृ. 15
उत्तर 09	जनवरी 2022	पृ. 22
उत्तर 10	मुम्बई	पृ. 26

अणुव्रत संपोषक

श्री पुखराज बड़ोला

बचपन व पारिवारिक जीवन - श्री पुखराज बड़ोला मूलतः राजस्थान में ब्यावर के निवासी हैं। श्री पुखराज जी श्रद्धा की प्रतिमूर्ति स्व. श्रीमती मोहन कँवर जी व स्व. श्री फतेहचंद जी बड़ोला के सुपुत्र हैं। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती मधु बड़ोला धार्मिक स्वभाव की सरलमना महिला हैं।

व्यावसायिक जीवन - 72 वर्षीय श्री बड़ोला का चेन्नई के व्यावसायिक जगत में विशिष्ट स्थान है। 1995 में वे चेन्नई आये और फाईनेंस सहित ज्वैलरी व्यवसाय में अपना भाग्य आजमाया। आपके सुपुत्र जितेंद्र, मुकेश और श्रेयांस की प्रतिभा और व्यावसायिक सूझबूझ ने ज्वैलरी के व्यवसाय को सफलता के नये मुकाम पर पहुँचाया है।

सार्वजनिक सेवा कार्य - सार्वजनिक सेवा कार्यों में श्री बड़ोला सदैव अग्रणी भूमिका निभाते रहे हैं। आप 9 वर्ष तक रोटरी क्लब ब्यावर के सचिव रहे हैं। आप ब्यावर एसोसिएशन चेन्नई के अध्यक्ष, जय साहित्य संस्थान चेन्नई के निदेशक एवं श्री सुसवाणी माता ट्रस्ट विल्लुपुरम के ट्रस्टी भी रहे हैं। 25 वर्ष की युवावस्था में ही आपने श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा ब्यावर के मंत्री पद का दायित्व संभाल लिया था। आप 1986 में आचार्य श्री तुलसी स्वागत समिति ब्यावर के कार्याध्यक्ष एवं अक्षय तृतीया व्यवस्था समिति ब्यावर के प्रमुख संयोजक रहे। 2013 में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा चेन्नई के अध्यक्ष और श्री जैन महासंघ चेन्नई के उपाध्यक्ष बने। गत एक दशक से आप जैन विश्व भारती के न्यासी एवं मुख्य न्यासी जैसे विशिष्ट पदों को संभालते हुए वर्तमान में आदर्श साहित्य विभाग के विभागाध्यक्ष हैं। 2018 में आचार्य श्री महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति चेन्नई के आप आवास संयोजक थे।

धार्मिक जीवन - श्री बड़ोला सरल व धार्मिक स्वभाव के व्यक्ति हैं। गुरुओं की विशेष कृपादृष्टि आप पर सदैव रही है। चारित्र आत्माओं की सेवा कर आप सुकून का अनुभव करते हैं। आचार्य श्री महाश्रमण की दक्षिणांचल यात्रा में बड़ोला परिवार ने 200 से अधिक दिन रास्ते की सेवा व चौका व्यवस्था कर अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया।

अणुव्रत संपोषक के रूप में ₹ 5 लाख का अनुदान प्रदान कर आपने अणुव्रत आंदोलन को मजबूती प्रदान की है। अणुविभा परिवार आपके यशस्वी, सुदीर्घ एवं स्वस्थ जीवन की मंगल कामना करता है।

अणुव्रत संपोषक

श्री प्रकाश चंद्र बाबेल

पुत्र-पुत्रवधू	- दीपक - रेखा
पुत्र	- विकास
पौत्र-पौत्री	- ध्रुव, यश्वी
पुत्री-जंवाई	- वंदना - मनोज जी टुकलिया

बचपन व परिवारिक जीवन : श्री प्रकाश चंद्र बाबेल राजस्थान के राजसमंद जिले के ठीकरवास कलां के निवासी हैं। वर्तमान में आपका कार्यक्षेत्र यशवंतपुर (बेंगलुरु) है। ठीकरवास, बेंगलुरु, मुंबई, सूरत में आपका प्रतिष्ठित परिवार है जिनकी धर्मसंघ में विशेष सेवा रही है। आपकी धर्मपत्नी सरला देवी एक तपस्विनी एवं धार्मिक महिला थीं। धर्मसंघ के प्रति आपकी सेवा भावना थी और चारित्र आत्माओं की सेवा में आप सर्वदा आगे रहती थीं एवं परिवार वालों को धर्म के प्रति सजग करती थीं।

व्यावसायिक जीवन : श्री प्रकाश चंद्र बाबेल का बेंगलुरु के यशवंतपुर में प्रतिष्ठित ज्वेलरी का व्यवसाय है। करीब 40 साल से आप इस व्यवसाय में कार्यरत हैं और इस व्यवसाय में आपकी अच्छी पकड़ है।

सार्वजनिक सेवा कार्य : सार्वजनिक सेवा कार्य में श्री बाबेल सदैव आगे रहते हैं और अग्रणी भूमिका निभाते हैं। जिस संस्था से आप जुड़ते हैं, उसमें तन-मन-धन हर प्रकार से आप अपना कार्य एवं सहयोग करते हैं। आप धर्मसंघ की कई संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। इनमें आप यशवंतपुर सभा के अध्यक्ष व वर्तमान में गुरुवर्य की कृपा से बेंगलुरु गांधीनगर ट्रस्ट के अध्यक्ष के रूप में सेवा दे रहे हैं।

धार्मिक जीवन : श्री बाबेल धार्मिक एवं सरल स्वभाव के व्यक्ति हैं। अध्यात्म एवं ध्यान में एवं धार्मिक जीवन में आपकी विशेष रुचि रहती है। धर्मसंघ का कोई भी कार्य हो, आप उसमें अपनी पूरी क्षमता से कार्य करते हैं। गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमण जी की कृपा दृष्टि हमेशा आप पर बनी रहती है। धर्मसंघ में सभी चारित्र आत्माओं के दर्शन और सेवा को आप अपना दायित्व समझते हैं।

अणुव्रत संपोषक के रूप में ₹ 5 लाख का अनुदान प्रदान कर आपने अणुव्रत आंदोलन को मजबूती प्रदान की है। अणुविभा परिवार आपके यशस्वी, सुदीर्घ एवं स्वस्थ जीवन की मंगल कामना करता है।

बीकानेर के उच्च अधिकारियों को अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक भेंट

बीकानेर। डॉटर ऑफ बीकानेर बेटियों के सम्मान समारोह से सम्बद्ध पोस्टर लॉन्चिंग सेरेमनी का आयोजन 20 सितंबर को स्थानीय सोफिया स्कूल में किया गया। इस कार्यक्रम के दौरान अणुव्रत विश्व भारती की सदस्य डॉ. नीलम जैन ने पुलिस महानिरीक्षक ओम प्रकाश जी, अतिरिक्त संभागीय आयुक्त ए.एच. गोरी, माध्यमिक शिक्षा निदेशालय की अतिरिक्त निदेशक रचना भाटिया को "अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक" की प्रति भेंट की। इस अवसर पर पुलिस महानिरीक्षक ओम प्रकाश जी ने कहा कि अणुव्रत जीवनशैली मनुष्य मात्र के लिए है। इसे हर मनुष्य अपने जीवन में उतार सकता है।

हिन्दी दिवस समारोह का भव्य आयोजन

सेक्टर-122 नोएडा के राघव ग्लोबल स्कूल में हिंदी दिवस समारोह मनाया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. कुसुम लुनिया (विज्ञान प्रौद्योगिकी व पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय की संयुक्त हिंदी सलाहकार समिति की सदस्य) ने बच्चों के सर्वांगीण विकास पर बल दिया। डॉ. कुसुम लुनिया ने "अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक" प्रधानाचार्या ऋचा शर्मा को भेंट किया।

शिक्षकों का सम्मान

लाडनूं। अणुव्रत समिति के तत्वावधान में शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन 3 सितम्बर को सुभाष बोस उच्च माध्यमिक विद्यालय में किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य भंवरलाल मील, शिक्षक पवन कुमार परिहार, निर्मल मौर्य का समिति के पदाधिकारियों ने माला, शॉल, श्रीफल व अणुव्रत दुपट्टा भेंट कर अभिनंदन किया। समारोह की अध्यक्षता करते हुए समिति के अध्यक्ष शांतिलाल बैद ने बताया कि शिक्षक समाज की आधारशिला हैं। समिति के मंत्री डॉ. वीरेन्द्र भाटी मंगल ने कहा कि शिक्षक ही एक व्यक्ति को श्रेष्ठ इंसान बना सकता है। शिक्षक का आचरण एवं व्यवहार ही उसकी पहचान बनता है। इस अवसर पर समिति के उपाध्यक्ष अब्दुल हमीद मोयल, अंजना शर्मा ने भी विचार रखे। कार्यक्रम में विद्यालय के सचिव रामगोपाल मील, शिक्षक, विद्यार्थियों सहित अनेक लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम का कुशल संचालन शक्तिसिंह चारण ने किया।

शोक संवेदना

अणुव्रत आन्दोलन को **श्री कमलकुमार जी बोथरा** की महत्वपूर्ण सेवाएं रही हैं। अणुव्रत समिति सादुलपुर के आप अध्यक्ष थे। अणुव्रत एवं धर्मसंघ की गतिविधियों से जुड़े कार्यकर्ता थे। अणुव्रत समिति सादुलपुर के माध्यम से आपने विभिन्न अणुव्रत प्रकल्पों एवं गतिविधियों का विद्यालयों में सफल संचालन किया। ऐसे विपत्ति के समय में सभी परिवारजन हिम्मत एवं धैर्य रखते हुए आध्यात्मिक सम्बल प्राप्त करें, अणुव्रत विश्व भारती की यह मंगल कामना है।

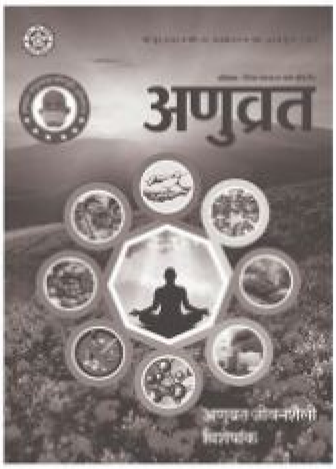

विशेषांक विमर्श

अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक के संदर्भ में हमें अनेक प्रतिक्रियाएं प्राप्त हो रही हैं। अणुव्रत अनुशास्ता की षष्टिपूर्ति के पावन अवसर पर प्रकाशित इस उद्देश्यपूर्ण ग्रंथ में अणुव्रत दर्शन को एक उत्कृष्ट जीवनशैली के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

एक ऐसी जीवनशैली जो वर्तमान वैश्विक और वैयक्तिक समस्याओं का स्थायी समाधान देते हुए एक अहिंसक और शांतिप्रिय समाज निर्माण का मार्ग प्रशस्त कर सके। प्रस्तुत हैं कुछ विचार संक्षेप –

आधुनिकता के इस दौर में व्यक्ति की अनेक शारीरिक और मानसिक बीमारियों का मुख्य कारण उसकी त्रुटिपूर्ण जीवनशैली है। ऐसे में 'अणुव्रत' पत्रिका के मई-जून, 2022 संयुक्तांक का स्वागत किया जाना चाहिए, जो अणुव्रत अनुशास्ता की षष्टिपूर्ति के ऐतिहासिक अवसर पर और अणुव्रत आंदोलन के हीरक जयंती वर्ष (2023-24) की पृष्ठभूमि में 'अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक' के रूप में प्रकाशित हुआ है। संचय जैन के कुशल सम्पादन में यह 384 पृष्ठीय वृहदकाय अंक बहुत ही उपयोगी, पठनीय एवं संग्रहणीय है। मंगल संदेश में आचार्य महाश्रमण ने रेखांकित किया है कि आदमी की जीवनशैली संयम प्रधान हो जाये तो उसका जीवन अनेक समस्याओं से मुक्त रह सकता है। आधुनिक युग की समस्याओं के निदान के संदर्भ में सम्पादकीय में एक सार्थक टिप्पणी उल्लेखनीय है - "विडम्बना यह है कि जब-जब समस्याएँ बढ़ीं और वह (व्यक्ति) बेचैन हुआ, उसने उन्हीं भौतिक साधनों में समाधान ढूंढने की कोशिश की जो समस्याओं के मूल में रहे थे। एक मृगमरीचिका की भाँति 'भीतर' उपस्थित समाधान के लिए 'बाहर' की उसकी दौड़ असंतुष्टि और तनाव को बढ़ाने का सबब बनती गयी। इस विरोधाभासी मानसिकता में इंसान संयम, सादगी, संस्कार, नैतिकता, विनम्रता, सहिष्णुता, प्रामाणिकता, अहिंसा जैसे शाश्वत मूल्यों को पुरातन और विकास में बाधा मान अनास्था और उपेक्षा की नजर से देखने लगा।"

"अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक" में कहानी, लघुकथा, कविता, गीत आदि स्तम्भों के साथ विशिष्ट लेखकों के आलेख हमारी जीवनशैली, आचार संहिता, युग-चेतना, सादगी, ईमानदारी, नशामुक्ति, समता, परमार्थ, न्याय, भाषा, वाणी संयम, संस्कार, मौन, गांधी दर्शन, सर्वोदय, रिश्तों की मिठास, साम्प्रदायिक सौहार्द, करुणा, सोशल मीडिया जैसे विषयों पर प्रकाश डालते हैं। इस विशेषांक को पढ़कर आप अनुभव करेंगे कि निःसंदेह अणुव्रत जीवनशैली एक उदार जीवनशैली है जो आज की ज्वलंत समस्याओं का सटीक समाधान है। जाति, धर्म, रंग, भाषा या क्षेत्र की सीमाओं से परे यह जीवनशैली हमें श्रेष्ठ मानव बनाती है।

-हरदान हर्ष, जयपुर

पिछले दो-ढाई वर्षों से मैं 'अणुव्रत' पत्रिका से जुड़ी हूँ। चाहे लेखक के रूप में हो या पाठक के रूप में, पत्रिका की स्तरीयता मन को संतोष प्रदान कर रही है। पत्रिका की पठनीयता इसलिए भी बढ़ जाती है क्योंकि इसकी विषय-वस्तु के चयन में किसी भी प्रकार की कोताही नहीं बरती जाती है, चाहे वह भाषा हो या कथ्य। इस दिखने और बिकने के दौर में 'अणुव्रत' पत्रिका पूरी तरह मानवीय मूल्यों को संरक्षित करने का एक सुदृढ़ अभियान चला रही है। पत्रिका का 'अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक' इसका ताजा उदाहरण है। इसमें एक से बढ़कर एक रचनाओं का संग्रह है।

लेखक अपनी रचना में सामाजिक बुराइयाँ और विसंगतियाँ तो लिखता ही है लेकिन रचना के अंदरूनी भाग को यदि ध्यान से पढ़ा जाये तो उसमें विसंगति को सुधारने का जो आग्रह छिपा होता है, अणुव्रत उसी को सुधारने की संवाहिका है। पत्रिका के मुखपृष्ठ पर 'अहिंसक-नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि' लिखा मिलता है, उसी तरह पत्रिका का कलेवर भी इसका खयाल पूरी सतर्कता से रखता है। संपादक संचय जैन जी और सह संपादक मोहन मंगलम जी बेहद जागरुकता के साथ पत्रिका के प्रति समर्पित हैं। आप रचना चयन प्रक्रिया में एक-एक शब्द के प्रति सजग हैं। हिंदी के प्रचार-प्रसार में पत्रिकाओं और अखबारों की भूमिका को मैं अहम मानती हूँ, इसलिए कहती हूँ कि जिस तरह अणुव्रत की संपादकीय टीम भाषा के साथ सामाजिक हित को साध रही है, यह पत्रिका ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुँचनी चाहिए क्योंकि जीवन सुधारने की संजीवनी इसके पास है।

-कल्पना मनोरमा, नयी दिल्ली

"अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक" ई-पत्रिका के रूप में सुलभ हो पाया है। आपकी इस आत्मीयता के लिए मैं आभारी हूँ। विशिष्ट मानवीय मूल्यों के लिए समर्पित व प्रतिबद्ध जीवन ही अणुव्रत जीवनशैली है। अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्यप्रवर श्री तुलसी जी ने इसे संसार की समस्त समस्याओं के लिए समाधान देने वाले मानवीय आंदोलन का रूप दिया था। अणुव्रत विश्व भारती द्वारा प्रकाशित 'अणुव्रत' पत्रिका जीवन मूल्यों के लिए प्रतिबद्ध मासिक पत्रिका है। "अणुव्रत जीवनशैली

विशेषांक" इस पत्रिका के विशेषांकों की परंपरा में एक मील का पत्थर है। यह सर्वांग सुंदर है। इस विशेषांक में अणुव्रत जीवनशैली पर केंद्रित आलेखों के अलावा संयमपूर्ण जीवन के लिए प्रेरित करने वाले विचारों का मंथन निश्चय ही इसके पाठकों की अभिवृत्ति और जीवनशैली को बदलने में सक्षम है। कुछ कहानियाँ, लघुकथाएँ व काव्य रचनाएँ भी इस अंक में सुशोभित हैं। अणुव्रत आंदोलन को सार्थक नेतृत्व प्रदान कर रहे आचार्य श्री महाश्रमण जी की षष्टिपूर्ति और युग प्रधान अलंकरण के शुभ अवसर पर प्रकाशित यह विशेषांक अवश्य पठनीय, मननीय, आचरणीय व संग्रहणीय है। इस महत्वपूर्ण वृहद् अंक के सफल संयोजन के लिए संपादन मंडल अभिनंदन का पात्र है। अणुव्रत आंदोलन के आगामी हीरक जयंती वर्ष में इसी तरह के प्रासंगिक विशेषांकों का सफल संयोजन हो, इसी अपेक्षा के साथ...।

-डॉ. सी. जय शंकर बाबु, पुदुच्चेरी

इस असार संसार में प्रतिदिन लोगों का आगमन और प्रत्यागमन होता रहता है। आगमन और प्रत्यागमन के बीच संसार में व्यक्ति का जो ठहराव है वह किस प्रकार का है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि व्यक्ति अपने ठहराव को किस प्रकार संयमित करता है। भौतिकता की चकाचौंध में जकड़ा मानव यह नहीं समझ पाता कि वह अपने जीवन की यात्रा को किस प्रकार संपन्न करे। अतः वह जीवनपर्यंत अपने और अपने परिवार के लिए भौतिक वस्तुओं को जुटाने में इतना तत्पर हो जाता है कि वह अपने आपको विस्मृत कर जाता है। ऐसी विकट स्थिति में जनमानस को जीवन जीने का मार्ग दिखाता है "अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक"। इस विशेषांक को कलात्मक जीवन जीने का दस्तावेज कहा जाये तो कोई अतिरंजना पूर्ण कथन नहीं होगा। इसमें शरीर, श्वास, मन, प्राण, बुद्धि और आत्मा के परिष्कार के संदर्भ में विपुल सामग्री दी गयी है। चिंतन की व्यापकता, भाषा की मर्यादा, दृष्टिकोण का विस्तार, लोकतांत्रिक मूल्यों का आगाज, व्यक्तित्व की समग्रता, सामुदायिक जीवन की प्रेरणा, संयमपूर्ण व्यवहार, आचार शुद्धि, अपरिग्रह की सार्थकता, अणुव्रत जीवनशैली की आवश्यकता आदि विषयों पर तार्किक ढंग से यहां प्रकाश डाला गया है। जैसे विभिन्न प्रकार के फूल समेकित होकर गुलदस्ते की शोभा बढ़ाते हैं, वैसे ही जीवन के प्रत्येक पहलू की पाठ्य सामग्री यहां पिरोयी हुई है।

अणुव्रत जीवनशैली अहिंसा की शैली है, सद्भावना की शैली है, भाईचारा की शैली है, मैत्री और क्षमा की शैली है। संक्षेप में कहें तो यह आचार-शुद्धि की शैली है। वैविध्यपूर्ण पाठ्य सामग्री से युक्त यह विशेषांक संपादक संचय जैन के संपादकीय कौशल से निखर कर हर दिलों को संस्पर्श करता हुआ प्रतीत होता है। सह संपादक मोहन मंगलम का श्रम बोलता हुआ दृष्टिगोचर होता है। बहुरंगी साज-सज्जा, आकर्षक कलेवर, उत्कृष्ट छपाई, उत्तम जिल्द के साथ यह विशेषांक निश्चित रूप से पठनीय, मननीय एवं संग्रहणीय है।

-प्रोफेसर आनंद प्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश', लाडनूं

'अणुव्रत' का मई-जून, 2022 अंक अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण की षष्टिपूर्ति के अवसर पर 'अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक' के रूप में प्रकाशित किया गया है, जो पाठकों के लिए एक अनमोल दस्तावेज है। अणुव्रत पत्रिका के यशस्वी संपादक संचय जैन गंभीर चिंतक और संवेदनशील व्यक्ति हैं। समाज को लेकर उनकी चिंता संपादकीय में साफ झलकती है।

'अणुव्रत आचार संहिता' के अंतर्गत चित्रकथाओं के माध्यम से समाज को सुंदर और प्रेरक संदेश दिया गया है। "संयम ही जीवन है", "आधारशिला जीवनशैली की", अणुव्रत जीवनशैली के सूत्र", "आनन्द के आंतरिक स्रोत", "अणुव्रत बनाता है मानव को", "आनन्द प्रदायिनी जीवनशैली", "संयम की साधना से सांप्रदायिक सौहार्द" जैसे आलेख पाठक को जीने की राह दिखाते हैं। कुल मिलाकर 'अणुव्रत' का यह अंक साहित्य जगत के लिए अनुपम भेंट है। इसका एक-एक शब्द व्यक्ति के लिए संजीवनी का कार्य करता है। यदि व्यक्ति इसे अपने जीवन में उतारकर धरातल पर कार्य करे और 'अणुव्रत जीवनशैली' को अपनाये तो निश्चित ही उसके जीवन की दिशा बदल जाएगी। आलेखों के सुंदर संयोजन के लिए पत्रिका टीम बधाई की पात्र है।

- डॉ. उमेशचन्द्र सिरसवारी, आगरा

धर्म ग्रंथों में ज्ञान की बहुलता होती है और उसे लोग चाव से पढ़ते हैं, मगर भारी-भरकम स्वरूप और कीमती होने के कारण ये सर्वसुलभ नहीं हो पाते। मोटे-मोटे धर्म ग्रंथों को पढ़ पाना आम आदमी के लिए संभव भी नहीं होता। इसलिए इसका संक्षिप्त या टीका रूप ही आम आदमी को भाता है। मगर एक स्वीकार्य तथ्य है कि धर्मग्रंथों की अनेक बातें बिना पढ़े भी लोग मौलिक रूप से जानते हैं। ऐसा पारिवारिक संस्कार, सत्संग का प्रभाव और पत्र-पत्रिकाओं के अध्ययन से संभव हो पाता है। अगर सच कहा जाये तो पुस्तकों के बाद ज्ञान के प्रचार-प्रसार में पत्र-पत्रिकाओं का सर्वाधिक योगदान है। पत्र-पत्रिकाओं में नये शोध और नयी जानकारियां छपती रहती हैं, जिनसे लोगों का ज्ञान अद्यतन हो जाता है।

हमारे देश में अनेक पत्र-पत्रिकाएं छपती हैं, मगर उनमें से कुछ ही पठनीय और संग्रहणीय हैं। यह पत्रिका के विषय, उसमें रचनाओं का चयन और संपादकीय सूझबूझ पर निर्भर करता है। 'अणुव्रत' का मई-जून, 2022 संयुक्तांक 'अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक' के रूप में प्रकाशित हुआ है। यह विशेषांक किसी पुस्तक से अधिक उपयोगी है, जिससे यह धरोहर बन गया है। विषयों के चयन और सशक्त प्रस्तुति के लिए संपादक मंडल को जितना भी धन्यवाद दिया जाये, वह कम है। आम आदमी के लिए इतना सशक्त और उपयोगी विशेषांक तैयार करने के लिए इसके प्रकाशन से जुड़े सभी लोगों का मैं सादर अभिनंदन करता हूँ और इस विशेषांक को शत-शत नमन करता हूँ।

- अंकुश्री, रांची

अणुव्रत की बात

सुनो जी, आप हमेशा सादा जीवन - उच्च विचार की बात करते रहते हैं। आप ऐसे रूखे जीवन से बोर नहीं होते ?
भाग्यवान, सच पूछो तो हम इतनी सुख-शांति से रहते हैं यह हमारी इसी सोच का परिणाम है।
पड़ोस में जो बंगला बना है, सुना है वो लोग बहुत पैसे वाले हैं। उनका बेटा अपने टुन्नू को बड़ी-बड़ी बातें बता रहा था।
अरे, चाहें तो हम भी उनसे बड़ा बंगला बना लें लेकिन अपने इस छोटे घर में ज्यादा सुकून है।
लेकिन यह बात अपने लाडले को भी तो समझाइए। कह रहा है बड़ा हो कर खूब पैसे कमाऊंगा और पापा को बड़ी कोठी खरीद कर दूंगा।

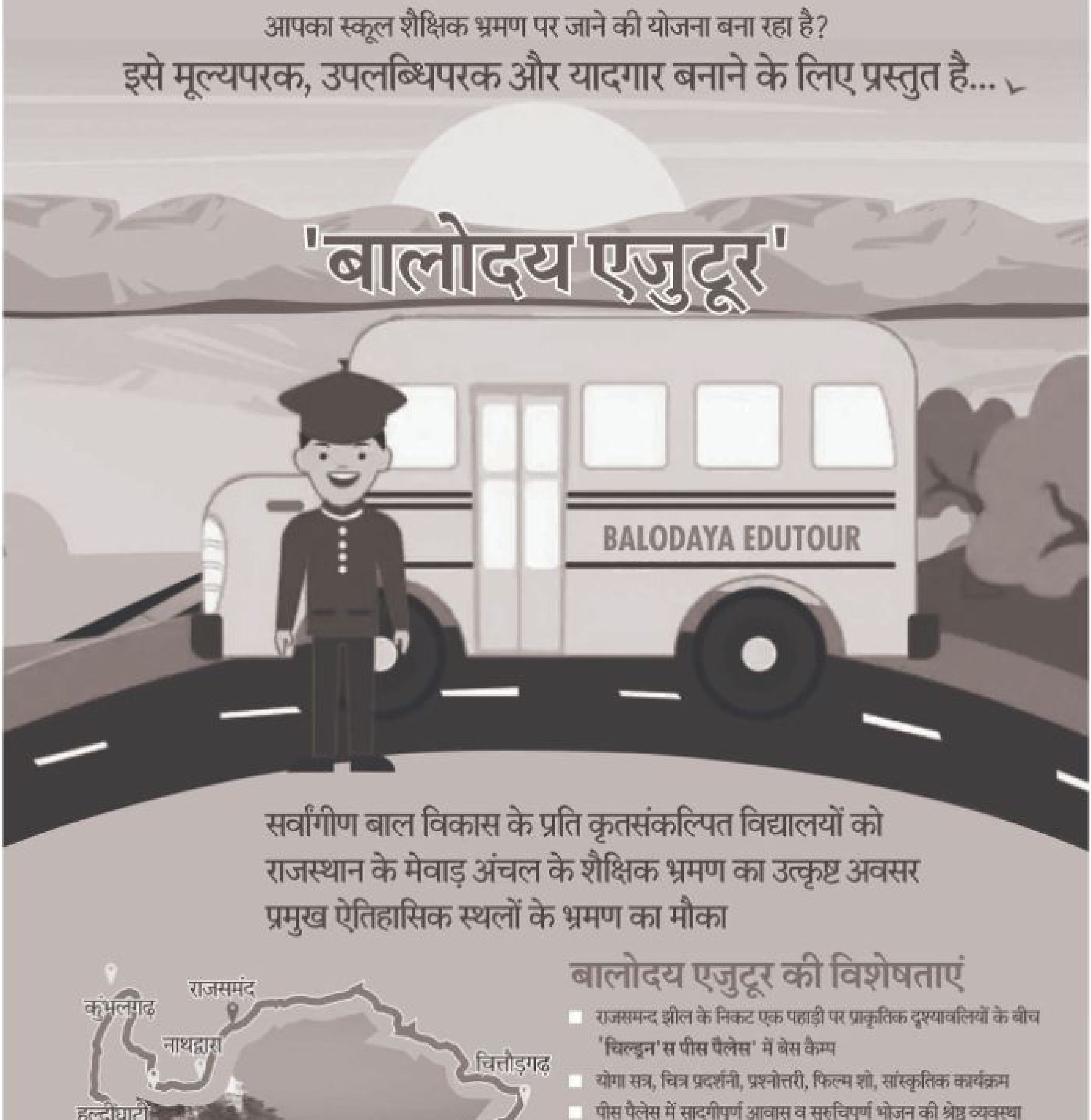
आपका स्कूल शैक्षिक भ्रमण पर जाने की योजना बना रहा है?
इसे मूल्यपरक, उपलब्धिपरक और यादगार बनाने के लिए प्रस्तुत है...
'बालोदय एजुटूर'
BALODAYA EDUTOUR
सर्वांगीण बाल विकास के प्रति कृतसंकल्पित विद्यालयों को
राजस्थान के मेवाड़ अंचल के शैक्षिक भ्रमण का उत्कृष्ट अवसर
प्रमुख ऐतिहासिक स्थलों के भ्रमण का मौका
कुंभलगढ़
राजसमंद
नाथद्वारा
चित्तौड़गढ़
हल्दीघाटी
उदयपुर
बालोदय एजुटूर की विशेषताएं
राजसमन्द झील के निकट एक पहाड़ी पर प्राकृतिक दृश्यावलियों के बीच 'चिल्ड्रन'स पीस पैलेस' में बेस कैम्प
योगा सत्र, चित्र प्रदर्शनी, प्रश्नोत्तरी, फिल्म शो, सांस्कृतिक कार्यक्रम
पीस पैलेस में सादगीपूर्ण आवास व सुरुचिपूर्ण भोजन की श्रेष्ठ व्यवस्था
बस सुविधा उपलब्ध
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-
अभिषेक कोठारी, संयोजक +917727867624
राजसमंद कार्यालय-
+91 91166 34513 head.office@anuvibha.org
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
https://anuvibha.org
अणुविभा

ANUVRAT
RNI No. 7013/57
October, 2022

Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1261/2021-23
Licence No. U(C)-215/2021-23
Licenced to post without pre-payment
Date of Publication 25/09/2022
Posted at Delhi PSO Delhi-6 on 28-29 of the Previous Month

अणुव्रत संकल्प श्रृंखला

मैं विश्व का एक जवाबदेह नागरिक हूं।

मैं दृढ़ संकल्पशक्ति के साथ निम्नांकित अणुव्रत स्वीकार करता हूं।

अणुव्रत आचार संहिता

मैं किसी भी निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध नहीं करूंगा।
- मैं आत्म-हत्या नहीं करूंगा।
- मैं भ्रूण-हत्या नहीं करूंगा।

मैं आक्रमण नहीं करूंगा।
- आक्रामक नीति का समर्थन नहीं करूंगा।
- विश्व-शान्ति तथा निःशस्त्रीकरण के लिए प्रयास करूंगा।

मैं हिंसात्मक एवं तोड़-फोड़ मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूंगा।

मैं मानवीय एकता में विश्वास करूंगा।
- जाति, रंग आदि के आधार पर किसी को ऊंच-नीच नहीं मानूंगा।
- अस्पृश्य नहीं मानूंगा।

मैं धार्मिक सहिष्णुता रखूंगा।
- साम्प्रदायिक उत्तेजना नहीं फैलाऊंगा।

मैं व्यवसाय और व्यवहार में प्रामाणिक रहूंगा।
- अपने लाभ के लिए दूसरों को हानि नहीं पहुंचाऊंगा।
- छलनापूर्ण व्यवहार नहीं करूंगा।

मैं ब्रह्मचर्य की साधना और संग्रह की सीमा का निर्धारण करूंगा।

मैं चुनाव के संदर्भ में अनैतिक आचरण नहीं करूंगा।

मैं सामाजिक रूढ़ियों को प्रश्रय नहीं दूंगा।

मैं व्यसन-मुक्त जीवन जीऊंगा।
- मादक तथा नशीले पदार्थों - शराब, गांजा, चरस, हेरोइन, भांग, तम्बाकू आदि का सेवन नहीं करूंगा।

मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूंगा।
- हरे-भरे वृक्ष नहीं काटूंगा।
- पानी, बिजली आदि का अपव्यय नहीं करूंगा।

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती

www.anuvibha.org/pledge

प्रकाशक एवं मुद्रक **संचय जैन** द्वारा स्वत्वाधिकारी **अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी** की ओर से श्री साई शिवानी प्रिंटर्स, बी-198, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-1, नई दिल्ली-110020 के लिए एड किंग डी-55/बी, हर्ष नगर, हरि नगर, ओखला फेस-1, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। संपादक - **संचय जैन**